मोहनदास करमचंद गांधी

[वम्बओीके महिला कला-मन्दिरकी विद्यार्थिनी श्रीमती कौसल्या मंजेश्वर द्वारा मनुष्यके वालोंको गूंथ कर वनाये हुअे मूल चित्रकी प्रतिछाया]

मोहन-माला

महात्मा गांधीके लेखों और भाषणोंसे वर्षके
प्रतिदिनके मननके लिअे चुने हुअे सुविचार

संग्राहक
आर० के० प्रभु

अनुवादक
सोमेश्वर पुरोहित

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद–१४

प्रस्तावना

अिस पुस्तकमें मैंने ३६६ 'विचार-मोतियों' की मालाके रूपमें पाठकोंके सामने महात्मा गांधीके जीवन-दर्शनका सार प्रस्तुत करनेका प्रयत्न किया है। वर्षके प्रत्येक दिनके मननके लिअे — अिसमें फरवरीकी २९ वीं तारीख शामिल है — अेक 'मोती' गांधीजीके लेखों और भाषणोंमें से चुना गया है। अिन मोतियोंको अैसे क्रममें रखा गया है जिससे अेक विचारसे दूसरे विचार पर जानेमें पाठकोंको अधिकसे अधिक सुविधा हो। पाठक दोनों दृष्टियोंसे अिस मालाका अुपयोग कर सकते हैं। वे चाहें तो प्रत्येक सुविचारके दैनिक मननके लिअे अिसका लाभ अुठा सकते है, अथवा चाहें तो अेक बैठकमें अधिक सुविचारोंके पठनके लिअे भी अिसका लाभ अुठा सकते हैं।

हिन्दी अनुवाद मूल अंग्रेजी संस्करण परसे किया गया है।

१–११–१९६० आर० के० प्रभु

अुद्धरणोंके स्रोत

आ. क.	आत्मकथा (गुजराती): गांधीजी, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४, १९५६।
अे. फा.	अेपिक फास्ट: प्यारेलाल, अहमदाबाद, १९३२।
अे. रि.	अेथिकल रिलीजन: गांधीजी, अेस. गणेशन्, मद्रास, १९३०।
गां. अि. वि.	गांधीजी अिन अिंडियन विलेजेज़: महादेव देसाअी, अेस. गणेशन्, मद्रास, १९२७।
टा. अि.	टाअिम्स ऑफ अिंडिया: बम्बअीका अंग्रेजी दैनिक।
दि. डा.	दिल्ली डायरी: गांधीजी, न. ट्र., अहमदाबाद–१४, १९४८।
बॉ. क्रॉ.	बॉम्बे क्रॉनिकल: बम्बअीका अंग्रेजी दैनिक।
यं. अि.	यंग अिंडिया: अंग्रेजी साप्ताहिक, संपा. गांधीजी, अहमदाबाद; फरवरी १९३२ से बन्द।
य. मं.	फ्रॉम यरवडा मंदिर: गांधीजी, न. ट्र., अहमदाबाद–१४, १९३५।
ले. गां.	लेनिन अेण्ड गांधी: रेने फुलॉप-मिलर, लन्दन, १९३०।
वि. गां. सि.	विथ गांधीजी अिन सिलोन: महादेव देसाअी, अेस. गणेशन्, मद्रास, १९२८।
स. सा. अ.	सत्याग्रह अिन साअुथ अफ्रीका: गांधीजी, न. ट्र., अहमदाबाद–१४, १९२८।
से. रे से. अि	सेल्फ-रेस्ट्रेन्ट वर्सस सेल्फ-अिडल्जेन्स: गांधीजी, न. ट्र., अहमदाबाद–१४, भाग १ (१९३०), भाग २ (१९३९)।
स्पी. रा. म.	स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी: जी. अे. नटेसन्, मद्रास, १९३३।
ह.	हरिजन: अंग्रेजी साप्ताहिक, संपा. गांधीजी और दूसरे, अहमदाबाद–१४; मार्च १९५६ से बन्द।
हिं. स्व.	हिंद स्वराज: गांधीजी, न. ट्र., अहमदाबाद–१४, १९२८।

मोहन-माला

जनवरी १

अिस विश्वमें अैसी अेक शक्ति है, जिसका निश्चित और स्पष्ट शब्दोंमें वर्णन नहीं किया जा सकता और जो विश्वकी हर वस्तुमें व्याप्त है। मैं अुसका अनुभव करता हूं, यद्यपि वह मुझे दिखाअी नहीं देती। यही वह अदृश्य शक्ति है, जो अपना अनुभव कराती है और फिर भी सारे प्रमाणोंसे परे है; क्योंकि वह अैसे समस्त पदार्थोंसे सर्वथा भिन्न है, जिन्हें मैं अपनी अिन्द्रियों द्वारा देखता और अनुभव करता हूं। वह अिन्द्रियातीत है, अिन्द्रियोंकी पहुंचके बाहर है। परन्तु अेक सीमा तक अीश्वरके अस्तित्वको तर्क द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।

यं. अिं., ११–१०–'२८

जनवरी २

मैं अस्पष्ट रूपमें यह जरूर देख और समझ सकता हूं कि यद्यपि मेरे आसपास प्रत्येक वस्तु निरन्तर बदलती, निरन्तर नष्ट होती रहती है, फिर भी अिस परिवर्तनके पीछे अैसी अेक सजीव, चेतन शक्ति है, जो कभी नहीं बदलती, जो सबको अेकताके सूत्रमें बांधे रखती है, जो सर्जन करती है, नाश करती है और पुनः नवसर्जन करती है। यह घट-घटमें बसी हुअी चेतन शक्ति या तत्त्व ही अीश्वर है। और अैसी कोअी वस्तु, जिसे मैं केवल अिन्द्रियोंसे देखता और अनुभव करता हूं, शाश्वत नहीं हो सकती या नहीं होगी; अिसलिअे अेकमात्र अीश्वरकी ही सत्ता शाश्वत है।

यं. अिं., ११–१०–'२८

जनवरी ३

और, यह शक्ति कल्याणकारिणी है या अकल्याण करनेवाली है? मैं तो अिसे शुद्ध कल्याणकारिणी शक्तिके रूपमें ही देखता हूं। क्योंकि मैं देख सकता हूं कि मृत्युके बीच जीवनका अस्तित्व बना रहता है, असत्यके बीच सत्य टिका रहता है और अंधकारके बीच प्रकाश जीवित रहता है। अिसलिअे मैं अिस निर्णय पर पहुंचता हूं कि अीश्वर जीवन है, सत्य है, प्रकाश है। वह प्रेम है, वह सर्वोच्च शिव है— शुभ है।

यं. अि., ११–१०–'२८

जनवरी ४

मैं किसी भी तर्क-पद्धतिसे बुराअीके अस्तित्वको समझा नहीं सकता। अैसा करनेकी अिच्छा रखनेका अर्थ है अीश्वरके समान बननेकी अिच्छा रखना। अतः मैं बुराअीको बुराअीके रूपमें स्वीकार कर लेने जितना नम्र हूं; और मैं अीश्वरको अिसीलिअे शांतिसे सहन करनेवाला तथा धैर्यवान कहता हूं कि वह बुराअीको दुनियामें टिकने देता है।

यं. अि., ११–१०–'२८

जनवरी ५

मैं जानता हूं कि अीश्वरमें कोअी बुराअी नहीं है; और फिर भी यदि संसारमें बुराअी है तो अीश्वर अुसका सर्जक है और सर्जक होते हुअे भी वह बुराअीसे अछूता है। मैं यह भी जानता हूं कि यदि मैं अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर भी बुराअीके साथ और बुराअीके खिलाफ युद्ध न करूं, तो मैं कभी भी अीश्वरको नहीं जान सकूंगा।

यं. अि., ११–१०–'२८

जनवरी ६

हम औश्वरके सारे नियमोंको नहीं जानते, न हम यह जानते हैं कि वे नियम कैसे काम करते हैं। अूंचेसे अूंचे वैज्ञानिक अथवा महानसे महान अध्यात्मवादीका ज्ञान भी रजके अेक कणके समान है। यदि औश्वर मेरे लिअे अपने पार्थिव पिताकी तरह शरीरधारी व्यक्ति नहीं है, तो वह मेरे लिअे अिससे अनन्त गुना अधिक है। वह मेरे जीवनकी सूक्ष्मसे सूक्ष्म बातोंमें भी मुझ पर शासन करता है। अिस कथनके अेक अेक अक्षरमें मेरा विश्वास है कि औश्वरकी अिच्छाके विना अेक पत्ता भी नहीं हिलता। हर सांस, जो मैं लेता हूं, औश्वरकी दया पर निर्भर करती है।

ह., १६-२-'३४

जनवरी ७

औश्वर और अुसका कानून अेक ही है। वह कानून ही औश्वर है। जिस किसी विशेषताका अुस पर आरोपण किया जाता है वह केवल गुण नहीं है। औश्वर स्वयं गुणरूप है। वह सत्य है, प्रेम है और कानून है; और अैसी हजार वस्तुअें है, जिनका मानवकी शोधक बुद्धि नाम बता सकती है।

ह., १६-२-'३४

जनवरी ८

पूर्णता अुस सर्व-शक्तिमान अीश्वरका गुण है, और फिर भी वह कितना बड़ा प्रजातंत्रवादी है! वह हमारे कितने अन्यायों और पाखंडोंको सहन कर लेता है! यहां तक कि वह अपने तुच्छ प्राणियों द्वारा अुसके अस्तित्वके बारेमें अुठायी गयी शंकाको भी बरदाश्त कर लेता है, यद्यपि वह हमारे आसपास, हमारे अिर्द-गिर्द और हमारे भीतरके प्रत्येक अणु-परमाणुमें बसा हुआ है। परन्तु जिसके सामने वह प्रकट होना चाहता है अुसके सामने प्रकट होनेका अधिकार अुसने अपने हाथमें सुरक्षित रखा है। वह अैसी चेतन शक्ति है, जिसके न हाथ हैं, न पांव हैं और न कोअी दूसरी अिन्द्रियां हैं; फिर भी अैसा मनुष्य अुसे देख सकता है जिसके सामने वह अपने आपको प्रकट करना पसन्द करता है।

ह., १४–११–'३६

जनवरी ९

मेरी दृष्टिमें अीश्वर सत्य है और प्रेम है; अीश्वर नीति है और सदाचार है; अीश्वर निर्भयता है। अीश्वर प्रकाश और जीवनका स्रोत है और फिर भी वह अिन सबसे अूपर और परे है। अीश्वर विवेक-बुद्धि है। वह नास्तिककी नास्तिकता भी है। क्योंकि अपने अपार और असीम प्रेमके कारण वह नास्तिकको भी जीने देता है।

यं. अिं., ५–३–'२५

जनवरी १०

वह हमारे हृदयको खोजने और टटोलनेवाला है। वह वाणी और बुद्धिके क्षेत्रसे परे है। हमारी अपेक्षा ओीश्वर हमें और हमारे हृदयोंको अधिक जानता है। वह हमारे शब्दों पर विश्वास नहीं करता, क्योंकि हममें से कुछ लोग जानमें और दूसरे अनजानमें जो कुछ कहते हैं वही अकसर अुनका आशय नहीं होता।

यं. अि., ५–३–'२५

जनवरी ११

अुन लोगोंके लिअे वह व्यक्तिरूप ओीश्वर है, जो अुसकी व्यक्तिगत अुपस्थितिकी आवश्यकता महसूस करते हैं। अैसे लोगोंके लिअे वह साकार ओीश्वर है, जो अुसके स्पर्शकी आवश्यकता अनुभव करते हैं। वह शुद्धतम सारतत्त्व है। वह केवल अुन्हीं लोगोंके लिअे है जो श्रद्धालु हैं। वह सब मनुष्योंके लिअे सब-कुछ है। वह हमारे भीतर है और फिर भी हमारे अूपर और हमसे परे है।

यं. अि., ५–३–'२५

जनवरी १२

ओीश्वरके नाम पर भयंकर अनाचार होते हैं और अमानुषिक क्रूरतायें की जाती हैं, अिसीलिअे अुसके अस्तित्वका लोप नहीं हो सकता। वह दीर्घकालसे शान्त रहकर हमारे दोषोंको सहन करता आया है। वह धैर्यशाली है, परन्तु वह भयंकर भी है। अिहलोक और परलोकमें वह अधिकसे अधिक कसौटी करनेवाला है। हम अपने पड़ोसियों — मानवों और पशुओं — के साथ जैसा व्यवहार करते हैं, वैसा ही व्यवहार वह हमारे साथ करता है। वह अज्ञानके लिअे कभी क्षमा नहीं करता। और अिन सबके बावजूद वह सदा क्षमा करनेवाला है, क्योंकि वह हमें सदा पश्चात्ताप करनेका अवसर देता है।

यं. अि., ५–३–'२५

जनवरी १३

वह संसारका सबसे बड़ा प्रजातंत्रवादी है, क्योंकि वह हमें भले और बुरेके बीच चुनाव करनेके लिअे स्वतंत्र छोड़ देता है। वह दुनियाका क्रूरसे क्रूर स्वामी है, क्योंकि वह प्रायः हमारे मुंहके सामने आयी रोटीको छीन लेता है और अिच्छाकी स्वतंत्रताकी आड़में अितनी अपर्याप्त छूट देता है कि हमसे कुछ करते-धरते नहीं बनता; और हमारी अिस परेशानीमें से वह अपने लिअे केवल विनोदकी सामग्री ही मुहैया करता है। अिसीलिअे हिन्दू धर्म अिस सबको अुसकी लीला अथवा अुसकी माया कहता है।

यं. अि., ५–३–'२५

जनवरी १४

ओिश्वर हमारे अिस पार्थिव शरीरसे बाहर नहीं है। अतः बाहरी प्रमाण यदि कोओी हो तो भी वह बहुत अुपयोगी सिद्ध नहीं होगा। हम अुसे अिन्द्रियों द्वारा देखनेमें सदा असफल ही रहेंगे, क्योंकि वह अिन्द्रियोंसे परे है — अिन्द्रियातीत है। हम अुसका अनुभव कर सकते हैं, यदि हम केवल अिन्द्रियोंसे अपने आपको खींच लें — अिन्द्रियोंके व्यापारसे अूपर अुठ जायें। हमारे भीतर दिव्य संगीत तो निरन्तर चलता ही रहता है। परन्तु प्रबल अिन्द्रियां अुस सूक्ष्म दिव्य संगीतको दबा देती हैं, जो अैसी प्रत्येक वस्तुसे भिन्न और अनन्त गुना श्रेष्ठ है जिसे हम अपनी अिन्द्रियों द्वारा देखते या सुनते हैं।

ह., १३–६–'३६

जनवरी १५

मेरी जानकारीमें ओीश्वर अिस धरती पर कठोरसे कठोर काम लेनेवाला स्वामी है। और वह आपकी पूरी पूरी परीक्षा करता है। पर जब आप अनुभव करते हैं कि आपकी श्रद्धा आपकी सहायता नहीं कर रही है या आपका शरीर आपका साथ नहीं दे रहा है, और आप निराधार बन कर हताश हो रहे हैं, तब ओीश्वर किसी न किसी तरह आपकी सहायताके लिअे पहुंच जाता है और आपके सामने यह सिद्ध कर देता है कि आपको अपनी श्रद्धा नहीं छोड़नी चाहिये और जब आप अुसका स्मरण करेंगे तब वह हमेशा आपकी मदद पर रहेगा — परन्तु अुसकी अपनी शर्त पर, आपकी शर्त पर नहीं। अपने अनुभवसे मैंने अैसा ही पाया है। मुझे अैसा अेक भी अुदाहरण याद नहीं है जब संकटके समय अुसने कभी मुझे छोड़ा हो।

स्पी. रा. म., पृ. १०६९

जनवरी १६

जब क्षितिज अत्यन्त अंधकारमय होता है, जब चारों ओर निराशाका घोर अंधकार छा जाता है, तब अकसर दिव्य प्रकाश हमारा मार्गदर्शन करता है।

यं. अिं., २७–८–'२५

जनवरी १७

जब हम अपने पैरों तलेकी धूलसे भी अधिक नम्र बन जाते हैं, तब ओीश्वर हमारी मदद करता है। केवल दुर्बल और निराधारके लिअे ही ओीश्वरीय सहायताका वचन दिया गया है।

स. सा. अ., पृ. ६

जनवरी १८

मनुष्य-जातिकी बुद्धि अितनी जड़ है कि वह ओश्वर द्वारा समय समय पर भेजे जानेवाले संकेतोंको समझ ही नहीं सकती। हमारे कानोंमें ढोल बजानेकी जरूरत है — तभी हम अपनी मूर्छासे जागेंगे, अुसकी चेतावनियोंको सुनेंगे और अिस बातको समझेंगे कि अपने आपको जाननेका अेकमात्र मार्ग स्वयंको ओश्वरके सब प्राणियोंमें खो देना है।

यं. अिं., २५–८–'२७

जनवरी १९

अगर तुम ओश्वरकी मदद मांगना चाहते हो, तो तुम्हें अपने पूरे नग्न — सच्चे रूपमें अुसके सामने जाना होगा और अिस बातका कोअी भय या शंका रखे बिना अुसकी शरण लेनी होगी कि तुम्हारे जैसे पतितकी सहायता वह कैसे कर सकता है। जिसने अपनी शरणमें आये हुअे लाखों-करोड़ों मनुष्योंकी सहायता की है, वह भला तुम्हें ही क्यों छोड़ देगा?

यं. अिं., १–३–'२९

जनवरी २०

मनुष्यका अंतिम लक्ष्य ओश्वरका साक्षात्कार करना है। और अुसकी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी प्रवृत्तियां ओश्वर-दर्शनके अिस अंतिम लक्ष्यको सामने रखकर ही चलनी चाहिये। समस्त मानव-प्राणियोंकी सेवा केवल अिसलिअे अिस प्रयत्नका आवश्यक अंग बन जाती है कि ओश्वरको पानेका अेकमात्र मार्ग अुसे अुसकी सृष्टिमें देखना और अुसकी सृष्टिके साथ अेकरूप हो जाना है। यह स्थिति केवल सबकी सेवा करके ही साधी जा सकती है। मैं ओश्वरकी समग्र सृष्टिका अेक अभिन्न अंग हूं, और मैं ओश्वरको बाकीकी मानव-सृष्टिके बाहर नहीं पा सकता।

ह., २९–८–'३६

जनवरी २१

अीश्वर बड़ी कठोरतासे काम लेनेवाला स्वामी है। वह आवेशमें आकर किये जानेवाले त्यागसे कभी संतुष्ट नहीं होता। अुसकी चक्की यद्यपि निश्चित रूपसे तथा निरन्तर गतिसे चलती रहती है, किन्तु अुसकी गति अतिशय धीमी होती है। और अीश्वर जल्दबाजीमें किये जानेवाले प्राणत्यागसे कभी संतुष्ट नहीं होता। वह शुद्धतम बलिदानकी मांग करता है। अिसलिअे आपको और मुझे प्रार्थनाकी भावनासे, नम्र भावसे, दृढ़तापूर्वक काम करते रहना चाहिये और जब तक अीश्वरकी कृपासे जीवन टिका रहे तब तक जीवन जीना चाहिये।

यं. अिं., २२–९–'२७

जनवरी २२

अीश्वर अच्छी और बुरी सभी बातोंका निश्चित लेखा रखता है। अिस पृथ्वी पर अुससे अच्छा दूसरा कोअी मानवके अच्छे-बुरे कर्मोंका हिसाब रखनेवाला नहीं है।

ह., २१–९–'३४

जनवरी २३

अीश्वर यदि परिवर्तनहीन और अटल जीवित नियम न होकर कोअी स्वच्छन्द व्यक्ति होता, तो वह अपनी क्रोधाग्निमें अैसे सब लोगोंको जलाकर नष्ट कर देता, जो धर्मके नाम पर अुसे और अुसके नियमको माननेसे अिनकार करते हैं।

यं. अिं., ११–७–'२९

जनवरी २४

अीश्वर अपने भक्तोंकी पूरी पूरी परीक्षा करता है, परन्तु अुनकी सहन-शक्तिसे बाहर कभी नहीं। जो अग्नि-परीक्षा वह अपने भक्तोंके लिअे निर्धारित करता है, अुसमें से पार होनेकी शक्ति भी वही अुन्हें देता है।

यं. अिं., १९–२–'२५

जनवरी २५

अीश्वरको सच्चे अर्थमें अीश्वर होनेके लिअे मनुष्यके हृदय पर शासन करना चाहिये और अुसे पूरी तरह बदल डालना चाहिये। अपने भक्तके प्रत्येक छोटेसे छोटे कार्यमें भी अुसे अपने आपको व्यक्त करना चाहिये। यह निश्चित साक्षात्कारके द्वारा ही किया जा सकता है—अैसा साक्षात्कार जो पांच अिन्द्रियों द्वारा किसी भी समय कराये जा सकनेवाले साक्षात्कारसे अधिक सच्चा होता है।

यं. अिं., ११–१०–'२८

जनवरी २६

जब अिन्द्रियोंके क्षेत्रसे बाहर अीश्वरका साक्षात्कार होता है तब वह अचूक सिद्ध होता है। वह बाहरी प्रमाणसे सिद्ध नहीं होता, परन्तु अैसे लोगोंके सर्वथा बदले हुअे आचरण तथा चरित्रके रूपमें सिद्ध होता है, जिन्होंने अपने अंतरमें अीश्वरकी सच्ची अुपस्थिति अनुभव की है। अैसा प्रमाण संसारके समस्त देशों और कालोंके सन्तों तथा पैगम्बरोंकी अटूट परम्पराके अनुभवोंमें हमें मिल सकता है। अुस प्रमाणसे अिनकार करनेका अर्थ है अपने आपसे अिनकार करना।

यं. अिं., ११–१०–'२८

जनवरी २७

परन्तु जब तक हम अिस नश्वर शरीरमें कैद हैं, तब तक हमारे लिअे पूर्ण सत्यको स्पष्ट रूपसे समझना असंभव है। हम केवल अपनी कल्पनामें ही अुसका दर्शन कर सकते हैं। अिस क्षणभंगुर देहके माध्यमसे हम शाश्वत सत्यका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं कर सकते। यही कारण है कि अंतिम सहारेके रूपमें हमें श्रद्धा पर ही निर्भर रहना चाहिये।

य. मं., प्रक. २

जनवरी २८

कोअी भी मनुष्य जब तक शरीरमें कैद है तब तक पूर्णताको प्राप्त नहीं कर सकता; अिसका सादा कारण यह है कि जब तक मनुष्य अपने अहंकार पर पूर्णतया विजय प्राप्त नहीं कर लेता है, तब तक अिस आदर्श स्थितिको सिद्ध करना असंभव है। और अहंकारसे तब तक पूर्णतया मुक्ति नहीं मिल सकती, जब तक कि मनुष्य शरीरके बन्धनोंसे बंधा हुआ है।

यं. अि., २०–९–'२८

जनवरी २९

शरीरधारी प्राणियोंके नाते हमारा अस्तित्व, हमारा जीवन, बिलकुल क्षणभंगुर है। अनन्त कालकी तुलनामें मानव-जीवनके सौ वर्ष किस गिनतीमें हैं? परन्तु यदि हम अहंकारके बंधनोंको तोड़ दें और मानवताके समुद्रमें विलीन हो जायं, तो हम अुसके गौरव और प्रतिष्ठाके भागी बनते हैं। हम भी कुछ हैं अैसा अनुभव करनेका अर्थ है अीश्वरके और हमारे बीच दीवाल खड़ी करना; और हम भी कुछ हैं अिस भावनाको छोड़नेका अर्थ है अीश्वरके साथ अेकरूप हो जाना।

य. मं., प्रक. १२

जनवरी ३०

महासागरमें रहनेवाला जलबिन्दु अपने जनककी महानता और विशालताका भागी बनता है, यद्यपि अुसे अिस बातका भान नहीं होता। परन्तु ज्यों ही वह जलबिन्दु महासागरसे अलग हो जाता है त्यों ही वह सूख जाता है। जब हम यह कहते हैं कि जीवन पानीका बुलबुला है, तब हम कोअी अतिशयोक्ति नहीं करते।

य. मं., प्रक. १२

जनवरी ३१

ज्यों ही हम अीश्वर-रूपी महासागरके साथ अेकरूप हो जाते हैं, त्यों ही हमारे लिअे विश्राम जैसी कोअी चीज नहीं रह जाती; और न अुसके बाद हमें विश्रामकी कोअी आवश्यकता ही रह जाती है। यहां तक कि हमारी निद्रा भी कर्मका रूप ले लेती है; क्योंकि हम अपने हृदयोंमें अीश्वरका ध्यान धर कर ही सोते हैं। यह अविश्राम ही सच्चा विश्राम है। यह अविरत अशांति ही अनिर्वचनीय शांतिकी कुंजी है। अिस संपूर्ण समर्पणकी अुदात्त स्थितिका शब्दोंमें वर्णन करना कठिन है, परन्तु वह मानव-अनुभवके क्षेत्रसे परे नहीं है। अनेक समर्पित आत्माओंने यह अुदात्त स्थिति प्राप्त की है और हम भी अिसे प्राप्त कर सकते हैं।

य. मं., प्रक. १२

फरवरी १

जहां प्रेम है वहां अीश्वर भी है।

स. सा. अ., पृ. ३६०

फरवरी २

प्रेम कभी कुछ पानेका दावा नहीं करता, वह सदा देता ही है। प्रेम सदा सहन करता है; वह कभी विरोध नहीं करता, कभी बदला लेकर संतुष्ट नहीं होता।

यं. अिं., ९–७–'२५

फरवरी ३

मेरा यह विश्वास है कि मनुष्य-जातिकी समग्र प्रवृत्ति हमें नीचे गिरानेके लिअे नहीं परन्तु अूपर अुठानेके लिअे है; और वह प्रेमके कानूनकी निश्चित प्रक्रियाका — भले वह अनजाने ही हो — परिणाम है। मनुष्य-जाति अनेक विघ्न-बाधाओंके बावजूद आज तक टिकी हुअी है, यह सत्य बताता है कि छिन्न-भिन्न करनेवाली शक्तिसे मिलानेवाली शक्ति अधिक बड़ी है, केन्द्रबिन्दुसे दूर ले जानेवाली शक्तिकी अपेक्षा केन्द्रबिन्दुके पास ले जानेवाली शक्ति अधिक बलवती है।

यं. अिं., १२–११–'३१

फरवरी ४

वैज्ञानिक हमसे कहते हैं कि हमारी अिस पृथ्वीकी रचना करने-वाले परमाणुओंके बीच यदि मिलानेवाली शक्ति मौजूद न हो, तो यह पृथ्वी टूटकर टुकड़े टुकड़े हो जाय और हमारा अस्तित्व अिस दुनियासे मिट जाय। और जिस प्रकार जड़ प्रकृतिमें मिलानेवाली शक्ति है, अुसी प्रकार चेतन पदार्थोंमें भी वह शक्ति होनी चाहिये; और चेतन प्राणियोंमें रही अुस मिलानेवाली शक्तिका नाम है प्रेम।

यं. अिं., ५–५–'२०

फरवरी ५

अुस शक्तिके दर्शन हम पिता-पुत्रके वीच, भाअी-वहनके वीच तथा मित्र-मित्रके वीच करते हैं। परन्तु हमें सारे चेतन प्राणियोंके वीच अुस शक्तिका अुपयोग करना सीखना चाहिये। और अुस शक्तिके अुपयोगमें ही अीश्वरका हमारा ज्ञान समाया हुआ है। जहां प्रेम है वहां जीवन है; घृणा नाशकी — मृत्युकी दिशामें ले जाती है।

यं. अिं., ५–५–'२०

फरवरी ६

मैंने पाया है कि नाशके वीच भी जीवन टिका रहता है और अिसलिअे नाशके नियमकी अपेक्षा कोअी अधिक अूंचा, अधिक अुदात्त नियम होना चाहिये। केवल अुस नियमके अधीन ही सुव्यवस्थित समाजकी रचना संभव हो सकती है और जीवन जीने योग्य वन सकता है।

यं. अिं., १–१०–'३१

फरवरी ७

यदि प्रेम जीवनका नियम नहीं होता, तो मृत्युके वीच जीवन टिक नहीं सकता था। जीवन मृत्यु पर अेक शाश्वत, सनातन विजय है।

ह., २६–९–'३६

फरवरी ८

यदि मनुष्य और पशुमें कोअी वुनियादी भेद है, तो यही है कि मनुष्य अिस प्रेमके नियमको अुत्तरोत्तर अधिक समझता और स्वीकार करता रहा है और व्यवहारमें अिस नियमको अपने व्यक्तिगत जीवन पर लागू करता आया है। संसारके सभी प्राचीन और आधुनिक संत अपनी अपनी वुद्धि और क्षमताके अनुसार हमारे जीवनके अिस अुदात्त तथा सर्वोपरि नियमके जीते-जागते अुदाहरण थे।

ह., २६–९–'३६

फरवरी ९

रूप तो अनेक हैं, परन्तु अुन रूपोंको अनुप्राणित करनेवाली आत्मा अेक ही है। जहां बाहरी विविधताके मूलमें सबको अपने भीतर समा लेनेवाली यह मूलभूत अेकता काम करती हो, वहां अूंच और नीचके भेदोंके लिअे गुंजाअिश ही कैसे हो सकती है? क्योंकि यह अेक अैसा सत्य है जिसका दैनिक जीवनमें कदम कदम पर हमें अनुभव होता है। समस्त धर्मोंका अंतिम लक्ष्य यह मूलभूत अेकता सिद्ध करना है।

ह., १५–१२–'३३

फरवरी १०

हमें अपने प्रेमका दायरा अितना व्यापक कर देना चाहिये कि वह सारे गांवको अपने भीतर समा ले; गांवको अपने दायरेमें सारे जिलेका समावेश कर लेना चाहिये, जिलेको प्रान्तका और प्रान्तको समूचे देशका — यहां तक कि अंतमें फैलते फैलते हमारे प्रेमका दायरा सारे विश्व तक फैल जाना चाहिये।

यं. अिं., २७–६–'२९

फरवरी ११

मानव-जातिका नियम घातक प्रतिस्पर्धा नहीं परन्तु जीवनदायी सहयोग है। भावनाकी अुपेक्षा करनेका अर्थ यह भूल जाना है कि मानव भावनाशील प्राणी है। यदि हम 'अीश्वरकी प्रतिमूर्ति हैं' तो कुछ लोगोंके हितके लिअे नहीं, अधिक लोगोंके हितके लिअे भी नहीं, किन्तु सब लोगोंके हितको — सर्वोदयको — बढ़ानेके लिअे हम बनाये गये हैं।

स्पी. रा. म., पृ. ३५०

फरवरी १२

यह जानते हुअे कि हम सब कभी अेकसा विचार नहीं करेंगे और हम सब सत्यको सदा आंशिक रूपमें तथा अलग अलग दृष्टिकोणोंसे ही देखेंगे, मानव-व्यवहारका सुनहला नियम यही होगा कि हम परस्पर सहिष्णुताका विकास करें, अेक-दूसरेके विचारों और मतोंको सहन करें।

यं. अिं., २३–९–'२६

फरवरी १३

सत्यका शोधक, प्रेमके नियमका पुजारी, कलके लिअे कोअी चीज नहीं रख सकता। अीश्वर कलके लिअे कभी व्यवस्था नहीं करता। प्रतिदिन निश्चित मात्रामें जितने अन्नकी जरूरत है अुससे अधिक वह कभी अुत्पन्न नहीं करता। अिसलिअे यदि हम अीश्वरकी व्यवस्थामें श्रद्धा रखें, तो हमारा यह दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि हमारी रोजकी रोटी वह हमें देगा ही, और हमारी आवश्यकताके अनुसार ही देगा।

यं. अिं., ४–९–'३०

फरवरी १४

या तो हम अीश्वरके अुस नियमको जानते नहीं या अुसकी अुपेक्षा करते हैं, जिसके अनुसार मनुष्यको केवल अुसकी रोजकी रोटी ही दी गअी है — अुससे अधिक नहीं। हमारे अिस अज्ञान या अुपेक्षाके फलस्वरूप दुनियामें असमानतायें खड़ी होती हैं, जिनकी वजहसे दुनियाकी सारी मुसीबतें पैदा होती हैं।

यं. अिं., ४–९–'३०

फरवरी १५

धनी लोगोंके पास वस्तुओंका अतिरिक्त भंडार भरा रहता है, जिनकी अुन्हें कोओी आवश्यकता नहीं होती और अिसलिअे जिनकी अुपेक्षा की जाती है और बरबादी होती है, जब कि लाखों-करोड़ों लोग अन्नके अभावमें भूखों मरते हैं और कपड़ोंके अभावमें ठंडसे ठिठुर कर मर जाते हैं। यदि हर आदमी अुतनी ही वस्तु पर अपना अधिकार रखता जितनी अुसके लिअे जरूरी है, तो किसी मनुष्यको किसी वस्तुका अभाव नहीं रहता और सब लोग संतोषके साथ जीवन बिताते।

यं. अि., ४–९–'३०

फरवरी १६

आजकी स्थितिमें धनी लोग गरीबोंसे कम असंतुष्ट नहीं हैं। गरीब आदमी लखपति बनना चाहता है और लखपति करोड़पति बनना चाहता है। गरीबोंको जब पेटभर खानेको मिल जाता है तब वे अकसर अुससे सन्तुष्ट नहीं होते; लेकिन स्पष्ट रूपसे अुन्हें पेटभर भोजन पानेका अधिकार है और समाजको यह ध्यान रखना चाहिये कि अितना अुन्हें अवश्य मिल जाय।

यं. अि., ४–९–'३०

फरवरी १७

हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति और हमारा स्वराज्य अपनी जरूरतें दिनोंदिन बढ़ाते रहने पर — भोगमय जीवन पर निर्भर नहीं करते; परन्तु हमारी जरूरतोंको नियंत्रित रखने पर — त्यागमय जीवन पर निर्भर करते हैं।

यं. अि., ६–१०–'२१

फरवरी १८

जब तक अेक भी सशक्त-पुरुष अथवा स्त्रीको काम या भोजन न मिले, तब तक हमें चैनसे बैठनेमें या भरपेट भोजन करनेमें लज्जा मालूम होनी चाहिये।

यं. अि., ५–२–'२५

फरवरी १९

मैं कहता हूं कि हम अेक तरहसे चोर हैं। यदि मैं अैसी कोअी वस्तु लेता हूं जिसकी मुझे अपने तात्कालिक अुपयोगके लिअे जरूरत नहीं है और अुसे अपने पास रखता हूं, तो मैं दूसरे किसीसे अुस वस्तुकी चोरी करता हूं।

स्पी. रा. म., पृ. ३८४

फरवरी २०

मैं यह कहनेका साहस करता हूं कि प्रकृतिका यह बुनियादी नियम है — और अिसमें अपवादकी जरा भी गुंजाअिश नहीं है — कि प्रकृति हमारी आवश्यकताओंके लिअे प्रतिदिन पर्याप्त मात्रामें अुत्पन्न करती है, और यदि प्रत्येक मनुष्य अुतना ही ले जितनेकी अुसे आवश्यकता है और अुससे अधिक न ले, तो अिस दुनियामें गरीबी नहीं रहेगी और अेक भी आदमी अिस दुनियामें भूखसे नहीं मरेगा।

स्पी. रा. म., पृ. ३८४

फरवरी २१

मैं समाजवादी नहीं हूं और मैं सम्पत्तिवालोंसे अुनकी सम्पत्ति छीनना नहीं चाहता। परन्तु मैं यह जरूर कहता हूं कि हममें से जो लोग व्यक्तिगत रूपमें अंधकारसे निकलकर प्रकाशकी ओर जाना चाहते हैं, अुन्हें अिस नियमका पालन अवश्य करना चाहिये। मैं किसीसे कोअी वस्तु छीनना नहीं चाहता। अैसा करके मैं अहिंसाके नियमका भंग करूंगा। यदि दूसरे किसीके पास मुझसे कोअी चीज ज्यादा हो तो भले रहे। परन्तु जहां तक मेरे अपने जीवनको नियमित बनानेका सम्बन्ध है, मैं अैसी कोअी वस्तु रखनेका साहस नहीं कर सकता जिसकी मुझे आवश्यकता नहीं है।

स्पी. रा. म., पृ. ३८४

फरवरी २२

भारतमें अैसे तीस लाख लोग हैं जिन्हें दिनमें अेक बार खाकर संतोष कर लेना पड़ता है; और यह अेक बारका खाना अैसा होता है जिसमें अेक रोटी और चुटकी-भर नमकके सिवा दूसरा कुछ नहीं होता — घी-तेलका तो अुसमें अेक छींटा भी नहीं होता। जब तक अिन तीस लाख लोगोंको ज्यादा अच्छा भोजन और ज्यादा अच्छे कपड़े नहीं मिलते, तब तक अपने पासकी कोअी भी चीज रखनेका आपको या मुझे अधिकार नहीं है। आपको और मुझे, जिन्हें यह बात अधिक अच्छी तरह जाननी चाहिये, अपनी जरूरतों पर अंकुश रखना चाहिये और स्वेच्छापूर्वक भूखे भी रहना चाहिये, ताकि अिन लोगोंकी सार-संभाल हो, अिन्हें पूरा खाना और पूरे कपड़े मिलें।

स्पी. रा. म., पृ. ३८५

फरवरी २३

अिस संबंधमें सुनहला नियम तो यह है कि जो चीज लाखों लोग नहीं पा सकते, अुसे रखनेसे हमें दृढ़तापूर्वक अिनकार कर देना चाहिये। अिनकार करनेकी यह योग्यता हममें अेकदम तो नहीं आ जायगी। अिस दिशामें पहला कदम होगा अैसी मनोवृत्तिका विकास करना, जो लाखों लोगोंको न मिल सकनेवाली साधन-सम्पत्ति अथवा सुविधायें रखना पसंद न करे। अिस दिशामें दूसरा तात्कालिक कदम होगा अिस मनोवृत्तिके अनुरूप अपने जीवनमें अधिकसे अधिक तेजीसे परिवर्तन करना।

यं. अिं., २४–६–'२६

फरवरी २४

मनुष्यको रसनाकी तृप्तिके लिअे नहीं परन्तु शरीरको टिकाये रखनेके लिअे ही खाना चाहिये। प्रत्येक अिन्द्रिय जब शरीरके लिअे और शरीरके द्वारा आत्माके दर्शनके लिअे ही काम करती है, तब अुसके रस शून्यवत् — लुप्त — हो जाते हैं और तभी वह स्वाभाविक रूपमें काम करती है अैसा कहा जायगा। अैसी स्वाभाविकता सिद्ध करनेके लिअे जितने प्रयोग किये जायं अुतने कम ही हैं। और अैसा करते हुअे अनेक शरीरोंका बलिदान भी देना पड़े, तो अुसे भी हम तुच्छ मानें।

आ. क., पृ. २९५

फरवरी २५

हमें शरीरके चिकित्सकोंके बजाय आत्माके चिकित्सकोंकी आवश्यकता है। अस्पतालों और डॉक्टरोंकी संख्यामें होनेवाली वृद्धि सच्ची सभ्यताका चिह्न नहीं है। हम और दूसरे लोग शरीरोंका जितना कम लाड़ लड़ायेंगे — अुनके सुखभोगकी जितनी कम चिन्ता करेंगे — अुतना ही अधिक हमारा और जगतका कल्याण होगा।

यं. अिं., २९–९–'२७

फरवरी २६

शरीरका अीश्वरके मंदिरके रूपमें अुपयोग करनेके बदले हम भोग-विलासके साधनके रूपमें अुसका अुपयोग करते हैं; और भोग-विलासमें वृद्धि करने तथा मानव-देहका दुरुपयोग करनेके अपने प्रयत्नेमें मदद मांगनेके लिअे डॉक्टरोंके पास दौड़नेमें हमें लज्जा नहीं आती।

यं. अि., ८–८–'२९

फरवरी २७

मनुष्यका स्वभाव मूलतः बुरा नहीं है। पशु भी प्रेमके प्रभावके सामने झुकते देखे गये हैं। अिसलिअे आपको मनुष्य-स्वभावके बारेमें कभी निराश नहीं होना चाहिये।

ह., ५–११–'३८

फरवरी २८

मनुष्यका यह जीवन अुसकी कसौटीका काल है। कसौटीके अिस कालमें भली और बुरी शक्तियां अुस पर अपना प्रभाव डालती हैं। किसी भी समय वह प्रलोभनोंका शिकार हो सकता है। अिन प्रलोभनोंका विरोध करके और अिनसे युद्ध करके अुसे अपना मनुष्यत्व सिद्ध करना है।

ह., ४–४–'३६

फरवरी २९

आन्तर-राष्ट्रीय व्यवहारोंमें प्रेमका नियम स्वीकार करनेमें लम्बा समय लग सकता है। सरकारोंके तंत्र अैसा करनेमें बाधक बनते हैं और अेक प्रजाके हृदयकी बात दूसरी प्रजासे छिपाते हैं।

यं. अि., २३–६–'१९

मार्च १

सत्य अेक विशाल वृक्ष है। मनुष्य अुसकी जितनी सेवा, सार-संभाल, करता है अुतने ही अधिक अुसमें से फल पैदा होते देखे जाते हैं। अुसके फलोंका अंत ही नहीं होता। हम जैसे जैसे सत्यमें गहरे अुतरते हैं वैसे वैसे अुसमें से रत्न मिलते रहते हैं, सेवाके अवसर प्राप्त होते रहते हैं।

आ. क., पृ. १९९

मार्च २

सत्यके शोधकको रजकणसे भी छोटा बनकर रहना पड़ता है। सारा जगत रजकणको पांव तले कुचलता है, परन्तु सत्यका पुजारी जब तक अितना अल्प न बन जाय कि रजकण भी अुसे कुचल सके, तब तक अुसे स्वतंत्र सत्यकी झांकी भी होना दुर्लभ है।

आ. क., प्रस्ता. पृ. ६

मार्च ३

सत्यकी भक्ति ही हमारे अस्तित्वका अेकमात्र कारण है। हमारी समस्त प्रवृत्तियां सत्यमें ही केन्द्रित होनी चाहिये। सत्य हमारे जीवनका मूल आधार होना चाहिये। जब अेक बार जीवनकी पवित्र यात्रामें हम अिस मंजिल पर पहुंच जायेंगे, तो अुसके बाद सही और शुद्ध जीवनके दूसरे सारे नियम बिना किसी प्रयत्नके हमारे जीवनमें आ जायंगे और अुनका पालन बिलकुल स्वाभाविक हो जायगा। परन्तु सत्यके बिना जीवनमें किसी भी सिद्धान्त अथवा नियमका पालन असंभव होगा।

यं. अि., ३०–७–'३१

मार्च ४

हमारे विचारमें सत्य होना चाहिये, हमारी वाणीमें सत्य होना चाहिये और हमारे कर्ममें भी सत्य होना चाहिये। जिस मनुष्यने अिस सत्यको पूर्णतया समझ लिया है, अुसके लिअे दूसरा कुछ जाननेको बाकी नहीं रह जाता। क्योंकि सारा ज्ञान आवश्यक रूपमें अिस सत्यमें ही समा जाता है। जिस ज्ञानका अिसमें समावेश नहीं होता वह सत्य नहीं है और अिसलिअे वह सच्चा ज्ञान नहीं है; और सच्चे ज्ञानके अभावमें आंतरिक शांति प्राप्त नहीं हो सकती। अगर हम अेक बार सत्यकी अिस अचूक कसौटीका प्रयोग करना सीख लें, तो हम तुरन्त यह जान सकेंगे कि हमें क्या बनना चाहिये, क्या देखना चाहिये और क्या पढ़ना चाहिये।

यं. अिं., ३०–७–'३१

मार्च ५

सत्यकी शोधके लिअे तप — स्वयं कष्ट सहना — आवश्यक होता है। कभी कभी आमरण तप भी करना पड़ता है। अिसमें स्वार्थके लिअे तो लेशमात्र भी गुंजाअिश नहीं हो सकती। सत्यकी अैसी स्वार्थरहित शोधमें कोअी भी मनुष्य लम्बे समय तक अपनी सच्ची दिशाको भूल नहीं सकता। ज्यों ही शोधक गलत मार्ग पकड़ता है त्यों ही वह ठोकर खाता है और अिस तरह पुनः सही मार्गकी ओर मोड़ दिया जाता है।

य. मं., प्रक. १

मार्च ६

सम्पूर्ण और समग्र सत्यको जानना मनुष्यके भाग्यमें नहीं बदा है। अुसका कर्तव्य यही है कि वह सत्यको जिस रूपमें देखता-समझता है अुसीके अनुसार अपना जीवन बिताये; और अैसा करनेमें शुद्धतम साधन — अर्थात् अहिंसा — का आश्रय ले।

ह., २४–११–'३३

मार्च ७

यदि सत्यका पालन गुलावकी कोमल सेज होता, यदि सत्यके लिअे मनुष्यको कोअी कीमत नहीं चुकानी पड़ती और यदि वह सुखमय और आनन्दयम ही होता, तो अुसके पालनमें कोअी सौंदर्य नहीं रह जाता। यदि हम पर आसमान टूट पड़े, तो भी हमें सत्य पर डटे रहना चाहिये।

यं. अिं., २७–९–'२८

मार्च ८

केवल सत्य ही असत्यका शमन करता है, प्रेम ही क्रोधका शमन करता है और कष्ट-सहन ही हिंसाका शमन करता है। यह शाश्वत सनातन नियम केवल सन्तोंके लिअे ही नहीं है, परन्तु सब मनुष्योंके लिअे है। अिसका पालन करनेवाले भले ही थोड़े लोग हों, परन्तु वे पृथ्वीके रत्न हैं। वे ही समाजको अेक सूत्रमें बांधते हैं, अुसे संगठित रखते हैं; अैसे लोग नहीं जो विवेक-बुद्धि और सत्यके विरुद्ध पाप करते हैं।

ह., १–२–'४२

मार्च ९

अमूर्त सत्यका तब तक कोअी मूल्य नहीं है जब तक वह अैसे मानवोंमें मूर्तरूप ग्रहण नहीं करता, जो अुसके लिअे प्राणार्पण करने तककी तैयारीका प्रमाण देकर अुसका प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारे दोष अिसलिअे जीवित रहते हैं कि हम अपने आदर्शोंके जीवित प्रतिनिधि होनेका महज ढोंग करते हैं। सौंपे हुअे कर्तव्यको पूरा करनेमें कष्ट-सहनके लिअे तैयार रह कर ही हम अपना सत्य-पालनका दावा सिद्ध कर सकते हैं।

यं. अिं., २२–१२–'२१

मार्च १०

सत्यके अुपासकको सदा विश्वास रखना चाहिये, यद्यपि अुसके जीवनमें विश्वास न रखनेकी, अपनी बात पर शंका रखनेकी, भी अुतनी ही जरूरत होती है। सत्यकी अुसकी भक्ति अुससे पूर्णतम विश्वास रखनेका तकाजा करती है। मानव-स्वभावका जो ज्ञान अुसे है अुससे सत्यभक्तको नम्र बनना चाहिये और अिसलिअे अपनी भूलका पता चलते ही अुसे सुधारनेके लिअे सत्यभक्तको सदा तत्पर रहना चाहिये।

यं. अि., ६-५-'२६

मार्च ११

सीमित (शक्तिवाले) मानव सत्य और प्रेमको अुनके समग्र रूपमें कभी नहीं जान पायेंगे क्योंकि वे अपने आपमें अनन्त और असीम हैं। परन्तु अपने मार्गदर्शनके लिअे हम अिन्हें पर्याप्त मात्रामें जानते हैं। अिनका प्रयोग करनेमें हम गलतियां करेंगे, और कभी कभी तो भयंकर गलतियां करेंगे। परन्तु मनुष्य स्व-शासन करनेवाला प्राणी है; और स्व-शासनमें जैसे बार बार गलतियां करनेकी सत्ताका समावेश होता है, वैसे ही गलतियां सुधारनेकी सत्ताका भी जरूरी तौर पर समावेश होता है।

यं. अि., २१-४-'२७

मार्च १२

मेरा यह विश्वास है कि बड़ीसे बड़ी सावधानीके बावजूद यदि मनुष्यसे गलतियां हो जायं, तो अुन गलतियोंसे संसारको सचमुच कोअी हानि नहीं होती, और न किसी व्यक्तिको हानि पहुंचती है। जो मनुष्य अीश्वरसे डरते हैं अुनकी जान-बूझकर न की गअी गलतियोंके परिणामोंसे अीश्वर हमेशा संसारको बचा लेता है।

यं. अि., ३-१-'२९

मार्च १३

गलती करना, भयंकर गलती करना भी, मनुष्यके लिअे स्वाभाविक है। परन्तु वह स्वाभाविक तभी है जब अुस गलतीको सुधारने और अुसे दुबारा न करनेका हमारा दृढ़ संकल्प हो। यदि किये हुअे संकल्पका पूर्ण रूपसे पालन किया जाय तो गलतीको दुनिया भूल जायगी।

ह., ६–२–'३७

मार्च १४

अनिवार्यको अनिच्छासे स्वीकार करने पर अीश्वर प्रसन्न नहीं होता। वह तो पूर्ण हृदय-परिवर्तनसे ही प्रसन्न होता है।

यं. अिं., २–२–'२२

मार्च १५

अिस दुनियामें निर्दोष कोअी नहीं है — यहां तक कि अीश्वरके भक्त भी निर्दोष नहीं हैं। वे अीश्वरके भक्त अिसलिअे नहीं हैं कि वे निर्दोष हैं, बल्कि अिसलिअे हैं कि वे अपने दोषोंको जानते हैं, दोषोंसे बचनेका प्रयत्न करते हैं, अपने दोषोंको कभी छिपाते नहीं और सदा अपने आपको सुधारनेके लिअे तैयार रहते हैं।

ह., २८–१–'३९

मार्च १६

गलतीका अिकरार अुस झाड़ूके समान है, जो कूड़े-कचरेको बुहार कर हटा देती है और जमीनकी सतहको पहलेसे ज्यादा साफ-सुथरी बना देती है।

यं. अिं., १६–२–'२२

मार्च १७

सत्य केवल अिसलिअे सत्य नहीं है कि वह प्राचीन है। और न आवश्यक रूपमें अुसके बारेमें अिसलिअे शंका रखनी चाहिये कि वह प्राचीन है। जीवनके कुछ अैसे बुनियादी तत्त्व होते हैं, जिन्हें गंभीर विचार किये बिना सिर्फ अिसलिअे नहीं छोड़ा जा सकता कि जीवनमें अुन पर अमल करना कठिन होता है।

ह., १४–३–'३६

मार्च १८

बुद्धिवादी लोग प्रशंसाके पात्र हैं। परन्तु बुद्धिवाद जब अपने लिअे सर्व-शक्तिमान होनेका दावा करता है, तब वह भयंकर राक्षस बन जाता है। बुद्धि पर सर्व-शक्तिमत्ताके गुणका आरोपण करना अुतनी ही बुरी मूर्तिपूजा है, जितनी जड़ पदार्थको अीश्वर मानकर अुसकी पूजा करना।

यं. अिं., १४–१०–'२६

मार्च १९

परिवर्तन प्रगतिकी अेक शर्त है। जब मन किसी चीजको गलत मानकर अुसके खिलाफ विद्रोह करता है, तब कोअी अीमानदार आदमी यांत्रिक सुसंगतताका पालन नहीं कर सकता।

यं. अिं., १९–१२–'२९

मार्च २०

मैं सुसंगतताके पालनको हौवा नहीं बना लेता। यदि मैं प्रत्येक क्षण अपने प्रति सच्चा और अीमानदार रहूं, तो मैं अपने सामने दोषके रूपमें रखी जानेवाली अपनी असंगतताओंकी जरा भी परवाह नहीं करूंगा।

ह., ९–११–'३४

मार्च २१

अेक सुसंगतता अैसी है जो बुद्धिमत्तापूर्ण होती है; और दूसरी सुसंगतता अैसी है जो मूर्खतापूर्ण होती है। जो मनुष्य सुसंगत बननेके लिअे भारतकी कड़ी धूपमें और नारवेकी कड़ाकेकी सरदीमें खुले शरीर जायगा वह मूर्ख माना जायगा; साथ ही अुसे प्राणोंसे भी हाथ धोने पड़ेंगे।

यं. अि., ४–४–'२९

मार्च २२

मानव-जीवन समझौतोंकी अेक दीर्घ परम्परा है; और जिस बातको हमने सिद्धान्तके रूपमें सत्य पाया है, अुसे व्यवहारमें सिद्ध करना हमेशा आसान नहीं होता।

ह., १८–११–'३९

मार्च २३

कुछ सिद्धान्त अैसे शाश्वत और सनातन होते हैं, जिनमें समझौतेके लिअे कोअी अवकाश ही नहीं होता; और अैसे सिद्धान्तों पर अमल करनेके लिअे मनुष्यको प्राणोंका बलिदान देनेके लिअे भी तैयार रहना चाहिये।

ह., ५–९–'३६

मार्च २४

मेरे विचारसे 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यं अप्रियम्।' संस्कृतके अिस वचनका अर्थ यही है कि मनुष्यको सत्य बात भी नम्र भाषामें कहनी चाहिये। यदि हम नम्र भाषामें सत्य बात न कह सकें तो अधिक अच्छा यही होगा कि हम अैसी बात न कहें। अिसका अर्थ यह हुआ कि जो मनुष्य अपनी वाणी पर नियंत्रण नहीं रख सकता, अुसमें सत्य हो ही नहीं सकता।

यं. अि., १७–९–'२५

मार्च २५

प्रकृतिने हमें अैसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नहीं देख पाते; दूसरे लोग ही हमारी पीठको देख सकते हैं। अिसलिअे वे जो कुछ देखते हैं अुससे लाभ अुठाना हमारे लिअे बुद्धिमानीकी बात होगी।

दि. डा., पृ. २२४

मार्च २६

सत्यकी शोध सच्ची भक्ति है। वह अैसा मार्ग है जो हमें अीश्वरके समीप ले जाता है। और अिसलिअे अुसमें कायरताके लिअे, पराजयके लिअे कोअी स्थान ही नहीं होता। वह अेक अैसा तावीज है जिसके द्वारा स्वयं मृत्यु शाश्वत जीवनका प्रवेश-द्वार बन जाती है।

य. मं., प्रक. १

मार्च २७

शुद्ध सत्यकी दृष्टिसे यह शरीर भी अेक परिग्रह है। यह सत्य ही कहा गया है कि भोगोंकी वासना आत्माके लिअे शरीरोंको जन्म देती है। जब अिस वासनाका लोप हो जाता है तब शरीरकी और अधिक जरूरत नहीं रह जाती। और मनुष्य जन्म तथा मृत्युके दुश्चक्रसे मुक्त हो जाता है।

य. मं., प्रक. ६

मार्च २८

'कितना सुन्दर हो, यदि हम सब, स्त्री-पुरुष, जाग्रत अवस्थामें की जानेवाली अपनी समस्त क्रियाओंमें — चाहे हम काम करते हों, खाते हों, पीते हों या खेलते हों — अपने आपको तब तक पूर्णतया सत्यकी अुपासनामें लगाये रखें, जब तक हमारे शरीरका क्षय हमें सत्यके साथ अेकरूप नहीं बना देता।

य. मं., प्रक. १

मार्च २९

जहां सत्य नहीं है वहां सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता। अिसीलिअे चित् अथवा ज्ञान शब्द अीश्वरके साथ जोड़ा जाता है। और जहां सच्चा ज्ञान है वहां सदा आनन्दका वास रहता है। दुःख या शोकके लिअे वहां कोअी स्थान नहीं होता। और जैसे सत्य शाश्वत है वैसे ही अुससे अुत्पन्न आनन्द भी शाश्वत है। अिसीलिअे हम अीश्वरको सत्-चित्-आनन्दके रूपमें मानते हैं।

यं. अि., ३०–७–'३१

मार्च ३०

मौन सत्यके शोधकके लिअे बड़ा सहायक होता है। मौनकी स्थितिमें आत्मा अपना मार्ग अधिक स्पष्ट रूपसे देख पाती है और जो समझमें नहीं आता या कुछ भ्रममें डालनेवाला होता है वह स्फटिकके समान स्पष्ट हो जाता है। हमारा जीवन सत्यकी अेक लम्बी और कठिन शोध है; और आत्मा अपनी सम्पूर्ण अुच्चताको प्राप्त कर सके, अिसके लिअे अुसे आंतरिक शांतिकी आवश्यकता होती है।

ह., १०–१२–'३८

मार्च ३१

अनुभवने मुझे सिखाया है कि सत्यके पुजारीको मौनका सेवन करना चाहिये। जाने-अनजाने भी मनुष्य बहुत बार अतिशयोक्ति करता है अथवा जो कहने लायक हो अुसे छिपाता है, अथवा अुसे बदलकर कहता है। अैसे संकटोंसे बचनेके लिअे भी सत्यके पुजारीका अल्पभाषी होना जरूरी है। कम बोलनेवाला मनुष्य कभी बिना सोचे-विचारे नहीं बोलेगा; वह अपने प्रत्येक शब्दको तौलकर बोलेगा।

आ. क., पृ. ५९

अप्रैल १

दुनियाके सारे धर्म अुसी अेक विन्दु पर पहुंचानेवाले अलग अलग मार्ग हैं। जब तक हम अेक ही लक्ष्य पर पहुंचते हों तब तक यदि हम अलग अलग मार्ग ग्रहण करें तो अुसकी क्या चिन्ता है?

हिं. स्व., पृ. ६५

अप्रैल २

अेक अीश्वरमें विश्वास हर धर्मका मूल आधार है। लेकिन मैं भविष्यमें अैसे किसी समयकी कल्पना नहीं करता, जब अिस धरती पर व्यवहारमें केवल अेक ही धर्म रहेगा। सिद्धान्तकी दृष्टिसे चूंकि अीश्वर अेक है अिसलिअे धर्म भी अेक ही हो सकता है। परन्तु व्यवहारमें अैसे कोअी दो मनुष्य मेरे जाननेमें नहीं आये, जो अीश्वरके विषयमें अेकसी ही कल्पना करते हों। अिसलिअे मनुष्योंके विभिन्न स्वभावों तथा विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियोंकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे शायद धर्म भी सदा भिन्न ही रहेंगे।

ह., २–२–'३४

अप्रैल ३

मैं जगतके समस्त महान धर्मोंके मूलभूत सत्यमें विश्वास रखता हूं। मेरा यह विश्वास है कि वे सब अीश्वर-प्रदत्त हैं और मेरा यह भी विश्वास है कि ये धर्म अुन प्रजाओंके लिअे आवश्यक थे, जिनके बीचमें अुनका प्रकटीकरण हुआ था। मैं मानता हूं कि अगर हम सब विभिन्न धर्मोंके धर्मग्रन्थोंको अुन धर्मोंके अनुयायियोंके दृष्टि-कोणसे पढ़ सकें, तो हमें पता चलेगा कि बुनियादमें वे सब अेक हैं और सब अेक-दूसरेके सहायक हैं।

ह., १६–२–'३४

मार्च २९

जहां सत्य नहीं है वहां सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता। अिसीलिये चित् अथवा ज्ञान शब्द अीश्वरके साथ जोड़ा जाता है। और जहां सच्चा ज्ञान है वहां सदा आनन्दका वास रहता है। दुःख या शोकके लिअे वहां कोअी स्थान नहीं होता। और जैसे सत्य शाश्वत है वैसे ही अुससे अुत्पन्न आनन्द भी शाश्वत है। अिसीलिअे हम अीश्वरको सत्-चित्-आनन्दके रूपमें मानते हैं।

यं. अिं., ३०–७–'३१

मार्च ३०

मौन सत्यके शोधकके लिअे बड़ा सहायक होता है। मौनकी स्थितिमें आत्मा अपना मार्ग अधिक स्पष्ट रूपसे देख पाती है और जो समझमें नहीं आता या कुछ भ्रममें डालनेवाला होता है वह स्फटिकके समान स्पष्ट हो जाता है। हमारा जीवन सत्यकी अेक लम्बी और कठिन शोध है; और आत्मा अपनी सम्पूर्ण अुच्चताको प्राप्त कर सके, अिसके लिअे अुसे आंतरिक शांतिकी आवश्यकता होती है।

ह., १०–१२–'३८

मार्च ३१

अनुभवने मुझे सिखाया है कि सत्यके पुजारीको मौनका सेवन करना चाहिये। जाने-अनजाने भी मनुष्य बहुत बार अतिशयोक्ति करता है अथवा जो कहने लायक हो अुसे छिपाता है, अथवा अुसे बदलकर कहता है। अैसे संकटोंसे बचनेके लिअे भी सत्यके पुजारीका अल्पभाषी होना जरूरी है। कम बोलनेवाला मनुष्य कभी बिना सोचे-विचारे नहीं बोलेगा; वह अपने प्रत्येक शब्दको तौलकर बोलेगा।

आ. क., पृ. ५९

अप्रैल १

दुनियाके सारे धर्म अुसी अेक विन्दु पर पहुंचानेवाले अलग अलग मार्ग हैं। जब तक हम अेक ही लक्ष्य पर पहुंचते हों तब तक यदि हम अलग अलग मार्ग ग्रहण करें तो अुसकी क्या चिन्ता है?

हि. स्व., पृ. ६५

अप्रैल २

अेक ओश्वरमें विश्वास हर धर्मका मूल आधार है। लेकिन मैं भविष्यमें अैसे किसी समयकी कल्पना नहीं करता, जब अिस धरती पर व्यवहारमें केवल अेक ही धर्म रहेगा। सिद्धान्तकी दृष्टिसे चूंकि ओश्वर अेक है अिसलिअे धर्म भी अेक ही हो सकता है। परन्तु व्यवहारमें अैसे कोओी दो मनुष्य मेरे जाननेमें नहीं आये, जो ओश्वरके विषयमें अेकसी ही कल्पना करते हों। अिसलिअे मनुष्योंके विभिन्न स्वभावों तथा विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियोंकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे शायद धर्म भी सदा भिन्न ही रहेंगे।

ह., २–२–'३४

अप्रैल ३

मैं जगतके समस्त महान धर्मोंके मूलभूत सत्यमें विश्वास रखता हूं। मेरा यह विश्वास है कि वे सब ओश्वर-प्रदत्त हैं और मेरा यह भी विश्वास है कि ये धर्म अुन प्रजाओंके लिअे आवश्यक थे, जिनके बीचमें अुनका प्रकटीकरण हुआ था। मैं मानता हूं कि अगर हम सब विभिन्न धर्मोंके धर्मग्रन्थोंको अुन धर्मोंके अनुयायियोंके दृष्टि-कोणसे पढ़ सकें, तो हमें पता चलेगा कि बुनियादमें वे सब अेक हैं और सब अेक-दूसरेके सहायक हैं।

ह., १६–२–'३४

अप्रैल ४

मेरा यह विश्वास है कि दुनियाके समस्त महान धर्म लगभग सच्चे हैं। 'लगभग' मैं असलिअे कहता हूं कि मेरा असा विश्वास है कि मनुष्यका हाथ जिस किसी वस्तुको छूता है वह अपूर्ण हो जाती है; असका कारण यह सत्य है कि मनुष्य स्वयं अपूर्ण है।

यं. अिं., २२–९–'२७

अप्रैल ५

पूर्णता अेकमात्र ओश्वरका गुण है। और वह गुण अवर्णनीय है, शब्दोंमें अुसे समझाया नहीं जा सकता। मेरा यह विश्वास अवश्य है कि प्रत्येक मानवके लिअे ओश्वरके समान पूर्ण बनना संभव है। अुस पूर्णताकी आकांक्षा रखना हम सबके लिअे आवश्यक है। परन्तु जब वह दिव्य आनन्दमय स्थिति प्राप्त होती है, तब अुसका वर्णन करना और अुसकी व्याख्या करना असंभव होता है।

यं. अिं., २२–९–'२७

अप्रैल ६

यदि हमें सत्यका पूर्ण दर्शन हो जाय तो फिर हम केवल सत्य-शोधक नहीं रहेंगे, बल्कि ओश्वरके साथ अेकरूप हो जायेंगे, क्योंकि सत्य ही ओश्वर है। परन्तु केवल शोधक होनेके कारण हम अपनी शोधको आगे बढ़ाते हैं और अपनी अपूर्णताका हमें भान रहता है। और यदि हम स्वयं अपूर्ण हों तो हमारे द्वारा कल्पित धर्म भी अपूर्ण ही होना चाहिये।

य. मं., प्रक. १०

अप्रैल ७

जिस प्रकार हमने अीश्वरका साक्षात्कार नहीं किया है, अुसी प्रकार हमने धर्मका भी अुसके पूर्ण रूपमें साक्षात्कार नहीं किया है। हमारी कल्पनाका धर्म अिस प्रकार अपूर्ण है, अिसलिअे वह सदा विकासकी प्रक्रियाके अधीन रहेगा और वार वार अुसका नया अर्थ किया जायगा। केवल अैसे विकासके कारण ही सत्यकी ओर, अीश्वरकी ओर, प्रगति करना हमारे लिअे संभव है। और यदि मनुष्यों द्वारा योजित सारे धर्म अपूर्ण हों, तो यह प्रश्न ही नहीं अुठता कि अुनमें से कौन तो अधिक अच्छा है और कौन कम अच्छा है।

य. मं., प्रक. १०

अप्रैल ८

सारे धर्म सत्यको प्रकट करते हैं, परन्तु सभी अपूर्ण हैं और सबमें दोष हो सकते हैं। दूसरे धर्मोंके प्रति आदर-भाव रखनेका यह मतलब नहीं कि हम अुनके दोषोंके प्रति ध्यान न दें। हमें अपने धर्मके दोषोंके प्रति भी अत्यन्त जाग्रत रहना चाहिये। परन्तु दोषोंके कारण अुसका त्याग नहीं करना चाहिये, बल्कि अुन दोषोंको मिटानेका प्रयत्न करना चाहिये। सब धर्मोंके प्रति समभावसे देखने पर हम दूसरे धर्मोंके प्रत्येक स्वीकार करने योग्य तत्त्वका अपने धर्ममें समन्वय करनेमें कभी संकोच नहीं रखेंगे, बल्कि अैसा करना अपना धर्म समझेंगे।

य. मं., प्रक. १०

अप्रैल ९

जिस प्रकार किसी वृक्षका तना अेक होता है, परन्तु शाखायें और पत्ते अनेक होते हैं; अुसी प्रकार सच्चा और पूर्ण धर्म तो अेक ही है, परन्तु जब वह मानवके माध्यमसे व्यक्त होता है तब अनेक रूप ग्रहण कर लेता है।

य. मं., प्रक. १०

अप्रैल १०

प्रार्थनापूर्ण शोध और अध्ययनके आधार पर तथा यथासंभव अधिकसे अधिक लोगोंके साथ चर्चा करनेके वाद मैं आजसे वहुत पहले अिस निर्णय पर पहुंच चुका था कि संसारके सभी धर्म सच्चे हैं और अुन सवमें कुछ दोष भी है; और अपने धर्मका दृढ़तासे पालन करते हुअे मुझे दूसरे सव धर्मोंको हिन्दू धर्मके समान ही प्रिय समझना चाहिये। अिससे अुचित रूपमें ही यह भी निष्कर्ष निकलता है कि सव मनुष्योंको हमें अपने निकटतम स्वजनोंकी तरह ही प्रिय मानना चाहिये और अुनके वीच हमें कोअी भेद नहीं करना चाहिये।

यं. अिं., १९–१–'२८

अप्रैल ११

अीश्वरका दिया हुआ अेक धर्म अगम्य है — वाणीसे परे है। अपूर्ण मानव अुसे अपनी अपनी भाषामें रखते हैं और अुनके शब्दोंका अर्थ दूसरे मनुष्य करते हैं, जो स्वयं अुतने ही अपूर्ण हैं। अैसी स्थितिमें किसके अर्थको सही माना जाय? प्रत्येक मानव अपने दृष्टिकोणसे सच्चा है, परन्तु यह असंभव नहीं कि प्रत्येक मानव गलत हो। अिसीलिअे सहिष्णुताकी जरूरत पैदा होती है। अिस सहिष्णुताका अर्थ यह नहीं कि हम अपने धर्मकी अुपेक्षा करें, परन्तु यह है कि अपने धर्मके प्रति हम अधिक ज्ञानमय, अधिक सात्त्विक और अधिक निर्मल प्रेम रखें।

य. मं., प्रक. १०

अप्रैल १२

सहिष्णुता हमें आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है, जो धर्मान्धतासे अुतनी ही दूर है जितना अुत्तरी ध्रुवसे दक्षिणी ध्रुव। धर्मका सच्चा ज्ञान अेक धर्म और दूसरे धर्मके वीचकी दीवालोंको तोड़ देता है।

य. मं., प्रक. १०

अप्रैल १३

सहिष्णुताके लिअे यह जरूरी नहीं है कि जिस चीजको मैं सहन करता हूं अुसका मैं समर्थन भी करूं। मद्यपान, मांसाहार और धूम्रपानको मैं बिलकुल पसन्द नहीं करता; लेकिन मैं हिन्दुओं, मुसलमानों और ओसाअियोंमें अिन बुराअियोंको सहन करता हूं — जिस प्रकार मैं अिन चीजोंके अपने त्यागको सहन करनेकी अुनसे आशा रखता हूं, भले ही वे मेरे अिस त्यागको नापसन्द करें।

यं. अिं., २५–२–'२०

अप्रैल १४

जो धर्म व्यावहारिक बातोंका विचार नहीं करता और अुनकी समस्याओंको हल करनेमें सहायक नहीं बनता, वह धर्म ही नहीं है।

यं. अिं., ७–५–'२५

अप्रैल १५

मैं मानवोचित आचरणसे अलग किसी धर्मको नहीं जानता। धर्म दूसरी सब प्रवृत्तियोंको नैतिक आधार प्रदान करता है, जो अन्य किसी प्रकारसे अुन्हें प्राप्त नहीं होता। और जिन मानव-प्रवृत्तियोंके पीछे कोओी नैतिक आधार नहीं होता, वे जीवनको 'निरर्थक शोर-गुल और तीव्र भाग-दौड़' की भूल-भुलैया बना देती हैं।

ह., २४–१२–'३८

अप्रैल १६

मेरी दृष्टिमें धर्मसे कोअी सम्बन्ध न रखनेवाली राजनीति बिलकुल कूड़ा-करकट जैसी है, जिससे सदा दूर ही रहना चाहिये। राजनीतिका सम्बन्ध राष्ट्रोंसे होता है; और जिसका सम्बन्ध राष्ट्रोंके कल्याणके साथ होता है, वह धर्मनिष्ठ मनुष्यके जीवनका — दूसरे शब्दोंमें अीश्वर और सत्यकी शोध करनेवाले मनुष्यके जीवनका अेक विषय होना ही चाहिये।

यं. अिं., १८–६–'२५

अप्रैल १७

मेरी दृष्टिमें अीश्वर और सत्य अेक-दूसरेका स्थान ले सकनेवाले शब्द हैं। और यदि कोअी मुझसे कहे कि अीश्वर असत्यका देवता है अथवा त्रासका देवता है, तो मैं अुसकी पूजा करनेसे अिनकार कर दूंगा। अिसलिअे राजनीतिमें भी हमें दैवी राज्यकी स्थापना करनी होगी।

यं. अि., १८–६–'२५

अप्रैल १८

अेक अच्छे हिन्दू या अच्छे मुसलमानको अपने देशका प्रेमी होनेके कारण अधिक अच्छा हिन्दू अथवा अधिक अच्छा मुसलमान होना चाहिये। हमारे देशके सच्चे हित और हमारे धर्मके सच्चे हितके बीच कभी कोअी संघर्ष हो ही नहीं सकता। जहां अैसा कोअी संघर्ष दिखाअी देता है, वहां हमारे धर्ममें अर्थात् हमारी नीतिमें कोअी दोष होना चाहिये। सच्चे धर्मका अर्थ है अच्छे विचार और अच्छा आचरण। सच्चे देशप्रेमका अर्थ भी अच्छे विचार और अच्छा आचरण होता है। दो समानार्थक वस्तुओंके बीच तुलना करना गलत है।

यं. अि., ९–१–'३०

अप्रैल १९

मानव-परिवारके हम सब सदस्य तत्त्वज्ञानी नहीं हैं। हम धरतीके प्राणी हैं। हम अदृश्य अीश्वरका ध्यान धर कर सन्तुष्ट नहीं होते। किसी न किसी प्रकार हम अैसी कोअी वस्तु चाहते हैं, जिसे हम छू सकें, जिसे हम देख सकें और जिसके सामने हम घुटनोंके बल नम्रभावसे झुक सकें। फिर भले वह कोअी ग्रंथ हो, या पत्थरका खाली मकान हो या अनेक मूर्तियोंसे भरा कोअी पत्थरका मकान हो। कुछ लोगोंको ग्रंथसे संतोष हो जायगा, दूसरे कुछको खाली मकानसे सन्तोष होगा और दूसरे बहुतसे लोगोंको तब तक सन्तोष नहीं होगा जब तक वे अिन खाली मकानोंमें किसी मूर्तिको स्थापित हुअी नहीं देखते।

ह., २३–१–'३७

अप्रैल २०

मन्दिरोंमें जानेसे हमें कोअी लाभ होता है या नहीं होता, यह हमारी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। अिन मंदिरोंमें हमें नम्रताकी और पश्चात्तापकी भावनासे जाना चाहिये। वे सव अीश्वरके निवास हैं। वेशक, अीश्वर हर मनुष्यमें रहता है, अुसकी सृष्टिके हर परमाणुमें अुसका वास है, अिस पृथ्वीकी हर वस्तुमें अुसका निवास है। परन्तु क्योंकि हम अत्यंत प्रमादी मानव अिस सत्यको नहीं समझते कि अीश्वर सर्वत्र विद्यमान है, अिसलिअे हम मंदिरों पर विशिष्ट पवित्रताका आरोपण करते हैं और मानते हैं कि अीश्वर अुन मंदिरोंमें रहता है।

ह., २३–१–'३७

अप्रैल २१

जब हम अिन मंदिरोंमें जायं तव हमें अपने शरीर, अपने मन और अपने हृदय स्वच्छ और शुद्ध कर लेने चाहिये। हमें प्रार्थनामय वृत्तिसे मंदिरोंमें प्रवेश करना चाहिये। और अीश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिये कि वह वहां आनेके फलस्वरूप हमें अधिक पवित्र पुरुष और अधिक पवित्र स्त्रियां बनावे। और यदि आप अिस बूढ़े आदमीकी सलाह मानें, तो मैं कहूंगा कि आपने जो शारीरिक मुक्ति —– अस्पृश्यतासे मुक्ति — प्राप्त की है, वह आत्माकी मुक्ति सिद्ध होगी।

ह., २३–१–'३७

अप्रैल २२

कड़वे अनुभवने मुझे यह सिखाया है कि सारे मन्दिर अीश्वरके निवास नहीं होते। वे शैतानके निवास भी हो सकते हैं। पूजाके ये स्थान तव तक कोअी मूल्य नहीं रखते जव तक अुनका पुजारी अीश्वरका भक्त न हो। मन्दिर, मसजिद और गिरजाघर वैसे ही होते हैं जैसे मनुष्य अुन्हें बनाता है।

यं. अिं., १९–५–'२७

अप्रैल २३

यदि किसीको भगवानकी असीम दयामें शंका हो, तो वह अिन तीर्थस्थानोंको देखे। वह महायोगी अिन पवित्र स्थानोंमें अपने नाम पर चलनेवाला कितना ढोंग, अधर्म और पाखंड सहन करता है?

आ. क., पृ. २२२

अप्रैल २४

जब हम विशाल नीले आकाशके नीचे निरन्तर नया रूप लेनेवाले अुस मंदिरको देखते हैं, जो धर्मके नाम पर झगड़ कर अीश्वरके नामका दुरुपयोग करनेके बजाय अीश्वरकी सच्ची पूजाके लिअे हमें आमंत्रण देता है, तो अितने ढोंग और पाखंडको आश्रय देनेवाले तथा गरीबसे गरीबको अपने भीतर प्रवेश न करने देनेवाले ये गिरजा-घर, मसजिद और मन्दिर अीश्वरका और अुसकी पूजाका केवल मजाक अुड़ानेवाले स्थल मालूम होते हैं।

ह., ५–३–'४२

अप्रैल २५

अस्पृश्यता हिन्दू धर्मको अुसी प्रकार विषैला बनाती है, जिस प्रकार जहरका अेक बूंद दूधको विषैला बना देता है।

यं. अिं., २०–१२–'२७

अप्रैल २६

आजके हिन्दू धर्मको कलंक लगानेवाला यह 'मुझे-न-छूओ'-वाद अेक प्रकारका रोग है। वह केवल मनकी जड़ताको और अंधे मिथ्याभिमानको ही प्रकट करता है। धर्मकी भावना और नीतिमत्ताके साथ अुसका बिलकुल मेल नहीं बैठता।

ह., २०–४–'३४

अप्रैल २७

मेरे विचारसे अस्पृश्यता हमारे जीवनको लगा हुआ अेक अभिशाप है। और जब तक वह अभिशाप हमारे साथ रहता है तब तक मेरे खयालसे हमें यही मानना पड़ेगा कि अिस पवित्र भूमि पर जो भी दुःख हम भोगते हैं, वह हमारे अिस घोर और कभी न मिट सकनेवाले अपराधका अुचित और अुपयुक्त दंड ही है।

स्पी. रा. म., पृ० ३८७

अप्रैल २८

क्या अिस बातको देखनेकी दृष्टि हममें नहीं आयेगी कि अपने छठे भागको (या जो भी संख्या हो) दबाकर हमने अपने आपको दबा दिया है, नीचे गिरा दिया है? कोअी मनुष्य दूसरेको खड्डेमें नीचे तब तक नहीं ले जा सकता, जब तक वह स्वयं खड्डेमें नहीं अुतरता और अैसा करके पापका भागी नहीं बनता। दबे हुअे लोग पाप नहीं करते। पापी तो दबानेवाला है, जिसे अपने अुस अपराधका अुत्तर देना होगा, जो वह अुन लोगोंके प्रति करता है जिन्हें वह दबाता है।

यं. अिं., २९-३-'२८

अप्रैल २९

अीश्वर सीधी सजा नहीं देता। अुसके तरीके गूढ़ होते हैं। कौन जानता है कि हमारे सारे दुःख-दर्द और मुसीबतें अिस अेक काले पापके कारण नहीं हैं?

यं. अिं., २९-५-'२४

स्वराज्य बिलकुल निरर्थक शब्द है, यदि हम भारतके पांचवें भागके लोगोंको हमेशा गुलामीमें रखना चाहें और जान-बूझकर अुन्हें राष्ट्रीय संस्कृतिके फलोंका अुपभोग करनेसे वंचित रखें। आत्मशुद्धिके अिस महान आन्दोलनमें हम अीश्वरकी सहायता चाहते हैं, परन्तु अुसके प्राणियोंमें सबसे योग्य मनुष्योंको हम मानवताके अधिकारोंसे वंचित रखते हैं। स्वयं क्रूर और निर्दय होते हुअे हम दूसरोंकी क्रूरतासे अपनेको मुक्त रखनेकी प्रार्थना भगवानके सिंहासनके सामने जाकर नहीं कर सकते।

यं. अि., २५-५-'२१

मणी १

प्रार्थना प्रातःकालका आरम्भ है और संध्याका अन्त है।

यं. अिं., २३–१–'३०

मणी २

जिस प्रकार भोजन शरीरके लिअे आवश्यक है, अुसी प्रकार प्रार्थना आत्माके लिअे आवश्यक है। मनुष्य भोजनके विना तो कअी दिनों तक जीवित रह सकता है — जैसे मैक्स्विनी ७० दिनसे अधिक जीवित रहा — परन्तु अीश्वरमें श्रद्धा रखनेवाला मनुष्य प्रार्थनाके विना अेक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता, अुसे नहीं रहना चाहिये।

यं. अिं., १५–१२–'२७

मणी ३

प्रार्थनाके लिअे जीभकी जरूरत नहीं होती। वह स्वभावसे ही अद्‌भुत वस्तु है। अिस वारेमें मुझे जरा भी शंका नहीं कि हार्दिक अुपासना विकाररूपी मलको शुद्ध करनेके लिअे रामवाण अुपाय है। परन्तु अिस प्रसादीके लिअे हममें संपूर्ण नम्रता होनी चाहिये।

आ. क., पृ. ६९

मणी ४

मैं आपके सामने कुछ मेरा अपना और अपने साथियोंका अनुभव रखता हूं, जब मैं यह कहता हूं कि जिसने प्रार्थनाके जादूका अनुभव किया है वह लगातार कअी दिनों तक भोजनके विना तो रह सकता है, परन्तु प्रार्थनाके विना अेक क्षण भी नहीं रह सकता। क्योंकि प्रार्थनाके विना आंतरिक शांति नहीं मिल सकती।

यं. अिं., २३–१–'३०

मणी ५

किसी पवित्र ध्येयमें कभी पराजय स्वीकार न कीजिये और आजसे यह दृढ़ निश्चय कर लीजिये कि आप शुद्ध और पवित्र रहेंगे और आपको अीश्वरकी ओरसे अुत्तर मिलेगा — अीश्वर आपकी प्रार्थना जरूर सुनेगा। परन्तु अीश्वर अहंकारीकी प्रार्थना कभी नहीं सुनता, न अुन लोगोंकी प्रार्थना सुनता है, जो अुसके साथ सौदा करते हैं।

यं. अिं., ४–४–'२९

मणी ६

मैं अपना सबूत दे सकता हूं और कह सकता हूं कि हार्दिक प्रार्थना निश्चित ही अैसा सर्वोच्च शक्तिशाली साधन है, जिसकी सहायतासे मनुष्य अपनी कायरता पर और दूसरी पुरानी बुरी आदतों पर विजय पा सकता है। अपने भीतर विराजमान अीश्वरमें जीवित श्रद्धा हुअे बिना प्रार्थना असंभव है।

यं. अिं., २०–१२–'२८

मणी ७

बड़ेसे बड़े अपवित्र या पापी मनुष्यकी प्रार्थना भी सुनी जायगी। यह बात मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव परसे कहता हूं। मैं अिस आध्यात्मिक प्रायश्चित्तकी प्रक्रियामें से गुजर चुका हूं। सबसे पहले अीश्वरके राज्यकी खोज करो, और बादमें हर चीज तुम्हें मिल जायगी।

यं. अिं., ४–४–'२९

मओ ८

जब तक हम अपने आपको शून्यवत् नहीं बना लेते, तब तक हम अपने भीतरकी बुराओीको जीत नहीं सकते। अेकमात्र प्राप्त करने योग्य सच्ची स्वतंत्रताके मूल्यके रूपमें ओीश्वर मनुष्यसे सम्पूर्ण आत्म-समर्पणसे कम किसी वस्तुकी मांग नहीं करता। और जब मनुष्य अिस तरह अपने आपको खो देता है, तो तुरन्त ही वह अपनेको ओीश्वरके सब प्राणियोंकी सेवामें लगा हुआ पाता है। वह सेवा ही अुसके जीवनका आनन्द और अुसका मनोरंजन बन जाती है। वह बिलकुल नया आदमी बन जाता है और ओीश्वरकी सृष्टिकी सेवामें अपने आपको खपानेमें कभी थकान महसूस नहीं करता।

यं. अि., २०–१२–'२८

मओ ९

हमारी प्रार्थना आत्म-निरीक्षणकी क्रिया है। वह हमें अिस बातकी याद दिलाती है कि ओीश्वरकी सहायता, अुसके सहारेके बिना हम लाचार और निराधार हैं। हमारा कोओी भी प्रयत्न प्रार्थनाके बिना — अिस वस्तुको निश्चित रूपसे स्वीकार किये बिना पूरा नहीं होता कि मानवके अुत्तम प्रयत्नका भी तब तक कोओी फल नहीं आता जब तक अुसके पीछे भगवानका आशीर्वाद न हो। प्रार्थना नम्रताकी पुकार है; वह आत्मशुद्धिकी, आन्तरिक निरीक्षणकी पुकार है।

ह., ८–६–'३५

मओ १०

व्यक्तिकी योग्यता और क्षमताकी मर्यादायें होती हैं। जिस क्षण वह अैसा विश्वास करने लगता है कि मैं सारे कार्य हाथमें ले सकता हूं, अुसी क्षण भगवान अुसके अिस अभिमानको मिटा देता है।

यं. अि., १२–३–'३१

मणी ११

मनुष्य स्वभावसे गलती करनेवाला प्राणी है। वह निश्चित रूपसे यह कभी नहीं कह सकता कि अुसके कदम सही दिशामें ही अुठ रहे हैं। जिसे वह अपनी प्रार्थनाका अुत्तर समझता है, वह अुसके अहंकारकी प्रतिध्वनि भी हो सकती है। अचूक मार्गदर्शनके लिअे मनुष्यके पास अैसा पूर्ण निर्दोष हृदय होना चाहिये, जो कभी पाप कर ही नहीं सकता।

यं. अि., २५–९–'२४

मणी १२

प्रत्येक मनुष्य प्रयत्न करे और अपने अनुभवसे देखे कि दैनिक प्रार्थनाके फलस्वरूप वह अपने जीवनमें कुछ नया जोड़ता है — कोअी अैसी वस्तु जोड़ता है, जिसके साथ दुनियाकी किसी भी वस्तुकी तुलना नहीं की जा सकती।

यं. अि., २४–९–'३१

मणी १३

कुछ अैसे विषय भी होते हैं, जिनमें हमारी बुद्धि हमें बहुत दूर तक नहीं ले जा सकती; और हमें अुनसे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंको श्रद्धासे स्वीकार कर लेना पड़ता है। अुस स्थितिमें श्रद्धा बुद्धिका विरोध नहीं करती, परन्तु अुससे अूंची अुठ जाती है। श्रद्धा अेक प्रकारकी छठी अिन्द्रिय है; वह अैसे विषयोंमें काम करती है जो बुद्धिकी सीमासे बाहर होते हैं।

ह., ६–३–'३७

मअी १४

श्रद्धाके अभावमें यह विश्व अेक क्षणमें नष्ट हो जायगा। सच्ची श्रद्धाका अर्थ है अैसे लोगोंके ज्ञानपूर्ण अनुभवका अुपयोग करना, जिनके बारेमें हमारा यह विश्वास है कि अुन्होंने प्रार्थना और तपस्यासे शुद्ध और पवित्र बना हुआ जीवन बिताया है। अिसलिअे अैसे पैगम्बरों या अवतारोंमें, जो अति प्राचीन कालमें हो गये हैं, विश्वास रखनेका अर्थ निरर्थक अन्धविश्वास नहीं है, परन्तु अेक गहनतम आध्यात्मिक अभिलाषाकी तृप्ति है।

यं. अिं., १४-४-'२७

मअी १५

बिना श्रद्धावाला मनुष्य महासागरसे बाहर फेंके हुअे बिन्दुके समान है, जो निश्चित रूपसे नष्ट होनेवाला है। महासागरके भीतरका हर बिन्दु महासागरकी भव्यताका सहभागी होता है, और हमें जीवनप्रद प्राणवायु देनेका गौरव प्राप्त करता है।

ह., २५-४-'३६

मअी १६

श्रद्धा हृदयका कार्य है। बुद्धिकी सहायतासे अुसे शक्तिशाली बनाना चाहिये। जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं, श्रद्धा और बुद्धि अेक-दूसरेकी विरोधिनी नहीं हैं। मनुष्यकी श्रद्धा जितनी अधिक तीव्र होती है, अुतनी ही अधिक वह मनुष्यकी बुद्धिको पैनी और प्रखर बनाती है। जब श्रद्धा अन्धी हो जाती है तब वह मर जाती है।

ह., ६-४-'४०

मओ १७

श्रद्धा ही हमें सुरक्षित रूपमें तूफानी समुद्रोंके पार ले जाती है, श्रद्धा ही पर्वतोंको हिला देती है और श्रद्धा ही महासागरको कूद कर पार कर जाती है। वह श्रद्धा हमारे भीतर वसे हुअे औश्वरके जीवित और पूर्णतया जाग्रत भानके सिवा और कुछ नहीं है। जिसने वह श्रद्धा प्राप्त कर ली है अुसे और कुछ नहीं चाहिये। शरीरसे रोगग्रस्त होते हुअे भी आध्यात्मिक दृष्टिसे वह पूर्ण स्वस्थ है, भौतिक दृष्टिसे गरीब होते हुअे भी आध्यात्मिक समृद्धिसे अुसका भंडार भरा रहता है।

यं. अिं., २४–९–'२५

मओ १८

मैं तो श्रद्धालु मनुष्य हूं। मेरा आधार केवल अुस औश्वर पर है। मेरे लिअे अेक कदम काफी है। अगला कदम, जव अुसका समय आयेगा, औश्वर मुझे साफ वता देगा।

ह., २०–१०–'४०

मओ १९

अुस श्रद्धाका कोअी मूल्य नहीं है, जो केवल सुखके समयमें ही पनपती है। सच्चा मूल्य तो अुसी श्रद्धाका है, जो कड़ीसे कड़ी कसौटीके समय भी टिकी रहे। यदि आपकी श्रद्धा सारी दुनियाकी निन्दाके सामने भी अडिग खड़ी न रह सके, तो वह निरा दंभ और ढोंग है।

यं. अिं., २५–४–'२९

मआी २०

श्रद्धा अैसा सुकुमार फूल नहीं है, जो हलकेसे हलके तूफानी मौसममें भी कुम्हला जाय। श्रद्धा तो हिमालय पर्वतके समान है, जो कभी डिग ही नहीं सकती। कैसा भी भयंकर तूफान हिमालय पर्वतको बुनियादसे हिला नहीं सकता। . . . मैं चाहता हूं कि आपमें से प्रत्येक ओीश्वर और धर्मके विषयमें वैसी ही अचल श्रद्धा अपने भीतर बढ़ावे।

ह., २६-१-'३४

मआी २१

अगर हमारे भीतर श्रद्धा है, अगर हमारा हृदय प्रार्थनामय है, तो हम ओीश्वरके सामने कोओी प्रलोभन नहीं रखेंगे, अुसके साथ कोओी सौदा नहीं करेंगे। हमें अपनेको शून्यवत् बना लेना चाहिये।

यं. अिं., २२-१२-'२८

मआी २२

प्रत्येक भौतिक संकटके पीछे कोओी ओीश्वरीय हेतु होता है। यह बिलकुल संभव है कि आज जैसे विज्ञान हमें सूर्य-ग्रहण या चन्द्र-ग्रहणके बारेमें पहलेसे बता देता है, वैसे ही पूर्णताको पहुंचा हुआ विज्ञान हमें यह भी पहलेसे बता दे कि भूकंप कब होगा। वह मानव-मस्तिष्ककी अेक और बड़ी विजय होगी। परन्तु अैसी विजयें अमर्यादित रूपमें ही क्यों न बढ़ जायं, वे हमारी आत्मशुद्धि नहीं कर सकतीं, जिसके बिना किसी भी वस्तुका कोओी मूल्य नहीं है।

ह., ८-६-'३५

मओ २३

हमारा अिहलोकका यह जीवन कांचकी अुन चूड़ियोंकी अपेक्षा अधिक जल्दी टूटनेवाला है, जो स्त्रियां पहनती हैं। आप कांचकी चूड़ियोंको हजारों वर्ष तक विना टूटे रख सकते हैं, यदि आप अुन्हें अेक पेटीमें सुरक्षित रखें और अुन्हें कभी न छूअें। परन्तु यह पार्थिव जीवन अितना अस्थायी और नाशवान है कि अेक क्षणमें अिस धरतीसे मिट सकता है। अिसलिअे जीवनके जितने भी दिन हमें मिले हैं, अुन दिनोंमें हम अूंच-नीचके भेदोंसे मुक्त हो जायं, अपने हृदयोंको शुद्ध बना लें और जब कोअी भूकंप, कोअी कुदरती संकट या साधारण क्रममें मृत्यु हमें अिस संसारसे अुठा ले, अुस समय ओश्वरके सामने खड़े होकर अपने कामोंका हिसाब देनेके लिअे तैयार रहें।

ह., २-२-'३४

मओ २४

मृत्यु, जो शाश्वत् सत्य है, अुसी प्रकार अेक क्रान्ति है जिस प्रकार जन्म और अुसके बादका जीवन अेक धीमा और स्थिर विकास है। मनुष्यके विकासके लिअे मृत्यु अुतनी ही आवश्यक है जितना कि स्वयं जीवन।

यं. अिं., २-२-'२२

मओ २५

मृत्यु कोअी राक्षसी नहीं है; वह हमारी सच्चीसे सच्ची मित्र है। वह हमें यातनाओं और पीड़ाओंसे मुक्त करती है। वह हमारी अिच्छाके विरुद्ध हमारी मदद करती है। वह हमें सदा नये अवसर, नयी आशायें प्रदान करती है। वह मीठी नींदकी तरह हममें फिरसे नयी शक्ति और नये जीवनका संचार करती है।

यं. अिं., २०-१२-'२६

मणी २६

यह मेरे मनमें सूर्यके प्रकाशकी तरह स्पष्ट है कि जीवन और मरण अुसी अेक वस्तुके केवल दो पहलू हैं —— अेक ही सिक्केकी सीधी और अुलटी बाजुअें हैं। सचमुच संकट और मृत्यु मेरे सामने सुख या जीवनकी अपेक्षा कहीं अधिक समृद्ध और सम्पन्न पहलू पेश करते हैं। कड़ी कसौटियों, संकटों और दुःखोंके बिना, जो जीवनको स्वस्थ और प्राणवान बनाते हैं, जीवनका क्या मूल्य रह जाता है?

यं. अि., १२–३–'३०

मणी २७

मेरा धर्म मुझे सिखाता है कि जब कभी जीवनमें अैसा संकट आवे जिसे हम दूर न कर सकें, तब हमें अुपवास और प्रार्थना करनी चाहिये।

यं. अि., २५–९–'२४

मणी २८

अुपवास और प्रार्थनाके समान शक्तिशाली वस्तु दुनियामें और कोअी नहीं है। अुनसे हमारे जीवनमें आवश्यक अनुशासन पैदा होता है, आत्मत्यागकी भावना बढ़ती है तथा नम्रता और संकल्पकी दृढ़ता अुत्पन्न होती है, जिनके बिना हमारी सच्ची प्रगति नहीं हो सकती।

यं. अि., ३१–३–'२०

मणी २९

अुपवास सत्याग्रहके शस्त्रागारका अेक अत्यन्त शक्तिशाली हथियार है। हर-कोअी अुपवास नहीं कर सकता। अुपवास करनेकी केवल शारीरिक शक्ति होना ही अुपवासके लिअे मनुष्यकी योग्यताकी कसौटी नहीं है। अीश्वरमें सजीव श्रद्धा न हो तो अुपवाससे कोअी लाभ नहीं होता। अुपवास न तो केवल यांत्रिक प्रयत्न बनना चाहिये और न निरा अनुकरण होना चाहिये। अुसकी प्रेरणा हमारी आत्माकी गहराअीमें से मिलनी चाहिये।

ह., १८–३–'३९

मंत्री ३०

मनुष्य स्वास्थ्यके नियमोंके अनुसार स्वास्थ्य सुधारनेके लिअे अुपवास करता है। वह अपनेसे होनेवाले अन्यायके प्रायश्चित्तके रूपमें भी अुपवास करता है, जब अुसे अपने अन्यायकी प्रतीति हो जाती है। अिन अुपवासोंमें अुपवासीका अहिंसामें श्रद्धा रखना जरूरी नहीं है। परन्तु अेक अैसा भी अुपवास होता है, जिसे समाजके किसी अन्यायके खिलाफ करना कभी कभी अहिंसाके पुजारीका पवित्र कर्तव्य हो जाता है; और यह अुपवास वह तभी करता है, जब अहिंसाके पुजारीके नाते अुसके सामने अन्यायको मिटानेका दूसरा कोअी अुपाय नहीं रह जाता।

दि. डा., पृ. ३३०

मंत्री ३१

सम्पूर्ण अुपवास सम्पूर्ण और सच्चा आत्मत्याग है। वह सच्चीसे सच्ची प्रार्थना है। 'प्रभो, मेरा जीवन तुझे ही समर्पित है; तू मेरे सम्पूर्ण जीवनको सदा केवल तेरे ही लिअे रहने दे'— यह प्रार्थना केवल मौखिक अथवा आलंकारिक अभिव्यक्ति नहीं है, नहीं होनी चाहिये। यह आत्म-समर्पण परिणामकी चिन्तासे मुक्त, पूर्ण शुद्ध और आनन्दमय होना चाहिये। भोजनका और पानीका भी त्याग केवल अिसका आरम्भ ही है — आत्म-समर्पणका छोटेसे छोटा अंश है।

ह., १३–४–'३३

जून १

यदि हम स्पष्ट रूपसे यह समझ लें कि हम जो कुछ कहते हैं और करते हैं अुसे सुनने और देखनेके लिअे अीश्वर सदा साक्षीके रूपमें मौजूद रहता है, तो अिस दुनियामें हमारे लिअे किसीसे कुछ भी छिपानेको नहीं रह जायगा। क्योंकि जब हम अपने सरजनहार पिताके सामने मलिन विचार नहीं करेंगे, तब वाणी द्वारा अुन्हें व्यक्त करनेकी तो बात ही कैसे अुठ सकती है? मलिनता ही वह चीज है जो गुप्तता और अंधकारको खोजती है।

यं. अि., २२-१२-'२०

जून २

मनुष्यका स्वभाव ही अैसा है कि वह गंदगीको हमेशा छिपाता है। हम गंदी चीजोंको देखना या छूना नहीं चाहते। हम अुन्हें अपनी दृष्टिसे दूर रखना चाहते हैं। यही बात हमारी वाणी पर भी लागू होनी चाहिये। मैं तो यह कहूंगा कि हमें अैसे विचार भी मनमें नहीं लाने चाहिये, जिन्हें हम दूसरोंसे छिपाना चाहें।

यं. अि., २२-१२-'२०

जून ३

आप जो कुछ भी करें, अुसमें अपने प्रति और दुनियाके प्रति सच्चे और प्रामाणिक रहें। अपने विचारोंको कभी न छिपायें। अगर अपने विचार प्रकट करनेमें आपको शरम मालूम हो, तो अुन्हें मनमें लानेमें तो और अधिक शरम मालूम होनी चाहिये।

ह., २४-४-'३७

जून ४

सारे पाप छिपाकर ही किये जाते हैं। जिस क्षण हमें यह प्रतीति हो जायेगी कि अीश्वर हमारे विचारोंका भी साक्षी रहता है, अुसी क्षण हम पापोंसे मुक्त हो जायंगे।

ह., १७–१–'३९

जून ५

विचार पर नियंत्रण रखना अेक लम्बी, दुःखद और कठिन परिश्रमकी प्रक्रिया है। लेकिन मेरा यह विश्वास है कि अिस भव्य और सुन्दर परिणामको प्राप्त करनेके लिअे खर्च किया जानेवाला कितना भी समय, अुठाया जानेवाला कितना भी श्रम और भोगा जानेवाला कितना भी दुःख अधिक नहीं होगा। विचारकी शुद्धि निश्चित अनुभव जैसी दृढ़ अीश्वर-श्रद्धाके विना कभी संभव ही नहीं है।

यं. अिं., २५–८–'२७

जून ६

जब काम, क्रोध आदि आवेग तुम पर सवारी करनेकी धमकी दें, तव घुटनोंके वल झुककर अीश्वरकी शरणमें जाओ और अुससे सहायताकी भीख मांगो। रामनाम मेरा अचूक सहायक है।

से. रे. से. अिं., भा. २, पृ. ९.

जून ७

पवित्र जीवनकी आकांक्षा रखनेवाला हर मनुष्य मेरी अिस बात पर विश्वास रखे कि अपवित्र विचार अकसर अुसी तरह शरीरको हानि पहुंचानेकी शक्ति रखता है, जिस तरह कि अपवित्र कार्य।

यं. अिं., २५–८–'२७

जून ८

मुक्त किन्तु अमूर्त विचारकी शक्ति मूर्त अर्थात् कार्यरूपमें परिणत विचारकी शक्तिसे कहीं ज्यादा बड़ी होती है। और जब कार्य पर अुचित अंकुश प्राप्त कर लिया जाता है तब विचार पर अुसकी प्रतिक्रिया होती है और वह स्वयं विचारका नियमन करता है। अिस प्रकार कार्यरूपमें परिणत विचार बन्दी बन जाता है और वशमें कर लिया जाता है।

यं. अिं., २–९–'२६

जून ९

आपको विचार, वाणी और कार्यका सुमेल साधनेका ध्येय सदा अपने सामने रखना चाहिये। आप सदा अपने विचारोंको शुद्ध करनेका ध्येय रखिये; अिससे सारी बातें ठीक हो जायंगी। विचारसे अधिक बलवान कोअी वस्तु दुनियामें नहीं है। कार्य वाणीके पीछे चलता है और वाणी विचारके पीछे चलती है। यह दुनिया शक्तिशाली विचारका ही परिणाम है। और जहां विचार बलवान तथा शुद्ध होता है, वहां परिणाम भी हमेशा बलवान और शुद्ध ही होता है।

ह., २४–४–'३७

जून १०

मनुष्य अकसर वैसा ही बन जाता है जैसा वह अपने आपको मानता है। अगर मैं अपने आपसे यह कहता रहूं कि मैं अमुक काम नहीं कर सकता, तो यह संभव है कि अन्तमें सचमुच मैं वह काम करनेमें असमर्थ हो जाअूं। अिसके विपरीत, अगर मेरा यह विश्वास हो कि मैं अुसे कर सकता हूं, तो मैं अवश्य ही अुसे करनेकी क्षमता प्राप्त कर लूंगा — भले आरंभमें वह क्षमता मुझमें न भी हो।

ह., १–९–'४०

जून ११

प्रार्थनाकी भावनासे ओतप्रोत कोअी भी शुभ आशयवाला प्रयत्न कभी व्यर्थ नहीं जाता और मनुष्यकी सफलता केवल अैसे प्रयत्नमें ही निहित होती है। परिणाम अथवा फल तो औश्वरके ही हाथोंमें रहता है।

यं. अिं., १७–६–'३१

जून १२

'तू विश्वास रख, मुझमें भरोसा रखकर चलनेवाले मनुष्यका कभी नाश नहीं हो सकता' (न मे भक्तः प्रणश्यति), यह प्रभुका वचन है। लेकिन अिसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिये कि कोअी प्रयत्न किये विना केवल प्रभुमें विश्वास रखनेसे ही हमारे पाप धुल जायंगे। सान्त्वना और शांति केवल अुसीको प्राप्त होगी, जो अिन्द्रियोंके विषयोंके प्रलोभनोंके खिलाफ कठोर संघर्ष करता है और आंखोंमें आंसू लिये दुःखी तथा सन्तप्त मनसे प्रभुकी शरण लेता है।

यं. अिं., १२–१–'२८

जून १३

यह कहना बहुत सरल है कि 'मैं औश्वरमें विश्वास नहीं करता'। क्योंकि औश्वर मनुष्यको, विना किसी दंड या हानिकारक परिणामके भयके, अपने विषयमें हर तरहकी बातें कहने देता है। वह हमारे कार्योंको देखता है। अुसके नियमके किसी भी भंगके साथ सजा तो अनिवार्य रूपमें जुड़ी ही होती है; परन्तु अुस सजाके पीछे द्वेष या बदलेकी भावना नहीं होती, वह मनुष्यके हृदयको पवित्र बनानेवाली, सुधारके लिअे अुसे बाध्य करनेवाली होती है।

यं. अिं., २३–९–'२६

जून १४

आत्मशुद्धिका मार्ग बड़ा विकट है। पूर्ण शुद्ध बननेका अर्थ है मनसे, वचनसे और कायासे निर्विकार बनना; राग-द्वेषादिके परस्पर-विरोधी प्रवाहोंसे अूपर अुठना।

आ. क., पृ. ४३३

जून १५

मैं मानता हूं कि स्वस्थ आत्माका निवास स्वस्थ शरीरमें होना चाहिये। अतः आत्मा जितनी स्वस्थ और काम-क्रोधादि आवेगोंसे मुक्त बनेगी, अुतना ही शरीर भी अिस अुच्च अवस्थाको प्राप्त करेगा।

यं. अिं., ५–६–'२४

जून १६

पवित्रताके बाद दूसरा स्थान स्वच्छता और शुद्धताका आता है। जिस प्रकार अशुद्ध मनसे हम अीश्वरका आशीर्वाद प्राप्त नहीं कर सकते, अुसी प्रकार अशुद्ध शरीरसे भी हम अीश्वरका आशीर्वाद प्राप्त नहीं कर सकते। शुद्ध शरीर अशुद्ध और अस्वच्छ नगरमें नहीं रह सकता।

यं. अिं., १९–११–'२५

जून १७

संयम कभी हमारे स्वास्थ्यका नाश नहीं करता। हमारे स्वास्थ्यका नाश संयम नहीं करता, बल्कि बाहरी दमन करता है। जो मनुष्य सच्चे अर्थमें आत्म-संयमी होता है वह प्रतिदिन अधिकाधिक शक्ति प्राप्त करता है और अधिकाधिक शान्ति अनुभव करता है। विचारोंका संयम आत्म-संयमकी पहली सीढ़ी है।

ह., २८–१०–'३७

जून १८

निर्दोष यौवन अैसी अमूल्य सम्पत्ति है, जिसे क्षणिक अुत्तेजनाके लिअे, झूठे आनन्दके लिअे नष्ट नहीं करना चाहिये।

ह., २१–९–'३५

जून १९

भाप तभी प्रचण्ड शक्तिका रूप लेती है जब वह अपने आपको अेक मजबूत छोटेसे भंडारमें कैद होने देती है; और अुसमें से अत्यन्त अल्प तथा निश्चित मात्रामें बाहर निकलकर ही वह जबरदस्त गति पैदा करती है और बड़े बड़े बोझ अुठाकर ले जाती है। अिसी प्रकार देशके नौजवानोंको स्वेच्छापूर्वक अपनी अखूट शक्तिको संयत तथा नियंत्रित होने देना चाहिये और अत्यन्त परिमित और आवश्यक मात्रामें ही अुसे मुक्त होने देना चाहिये।

यं. अि., ३०–१०–'२९

जून २०

जिस प्रकार कोअी भव्य और सुन्दर महल अपने निवासियों द्वारा छोड़ दिया जाने पर वीरान खंडहर जैसा दिखाअी देता है, अुसी प्रकार चरित्रके अभावमें मनुष्य भी टूटे-फूटे खंडहर जैसा दिखाअी देता है — भले अुसके पास भौतिक सम्पत्ति कितनी ही बड़ी मात्रामें क्यों न हो।

स. सा. अ., पृ. ३५५

जून २१

हमारी सारी विद्या या वेदोंका पाठ, संस्कृत-लेटिन-ग्रीक भाषाका शुद्ध ज्ञान और दुनियाकी दूसरी बड़ीसे बड़ी सिद्धि भी तब तक हमारे लिअे किसी अुपयोगकी नहीं है, जब तक वह हृदयकी पूर्ण शुद्धिका विकास करनेमें हमें समर्थ नहीं बनाती। समस्त ज्ञानका अंतिम लक्ष्य चरित्रका निर्माण ही होना चाहिये।

यं. अि., ८–९–'२७

जून २२

चरित्रके अभावमें ज्ञान केवल बुराओीको जन्म देनेवाली शक्ति बन जाता है, जैसा कि संसारके अनेक 'प्रतिभाशाली चोरों' और 'सभ्य दुष्टों' के अुदाहरणोंमें देखा जाता है।

यं. अिं., २१–२–'२९

जून २३

मादक पदार्थ और मदिरा शैतानकी दो भुजायें हैं, जिनके प्रहारसे वह अपने लाचार बने हुअे शिकारोंकी बुद्धि हर लेता है और अुन्हें मतवाला बना देता है।

यं. अिं., १२–४–'२६

जून २४

जब शैतान स्वतंत्रता, सभ्यता, संस्कृति और अिसी प्रकारकी अन्य शुभ वस्तुओंके संरक्षकका जामा पहन कर सामने आता है, तब वह अपने आपको अितना बलवान और विश्वसनीय बना लेता है कि अुसका विरोध करना लगभग असंभव हो जाता है।

यं. अिं., ११–७–'२९

जून २५

मैं मदिरा-पानको चोरी और संभवतः वेश्यागमनसे भी अधिक निन्दनीय मानता हूं। क्या वह अकसर अिन दोनोंका जनक नहीं होता?

यं. अिं., २३–२–'२२

जून २६

लोग अपनी परिस्थितियोंके कारण शराब पीते हैं। कारखानोंके मजदूर और अैसे ही दूसरे लोग शराबका नशा करते हैं। वे लोग परित्यक्त और अुपेक्षित हैं, समाज अुनकी बिलकुल परवाह नहीं करता; अिसीलिअे अपनी अिस दशाको भूलनेके लिअे वे शराबकी शरण लेते हैं। जिस प्रकार मादक पदार्थोंका त्याग करनेवाले मनुष्य स्वभावसे सन्त नहीं होते, अुसी प्रकार शराबी स्वभावसे दुष्ट और पापी नहीं होते। अधिकतर लोगों पर अुनके वातावरणका प्रभाव और नियंत्रण होता है।

यं. अिं., ८–९–'२७

जून २७

जो राष्ट्र मदिरा-पानके व्यसनका शिकार हो गया है अुसका सर्वनाश निश्चित है। अितिहासमें अिसके प्रमाण मौजूद हैं कि अिस दुर्व्यसनमें फंसनेवाले राष्ट्र नष्ट हो गये हैं।

यं. अिं., ४–४–'२९

जून २८

मदिरा-पान पर प्रतिबन्ध लगानेवाला कानून लोगोंके अधिकारमें हस्तक्षेप करता है — अिस दलीलमें अुतना ही दोष है, जितना अिस दलीलमें है कि चोरी पर प्रतिबंध लगानेवाले कानून लोगोंके चोरी करनेके अधिकारमें हस्तक्षेप करते हैं। चोर धन-दौलत और दूसरी भौतिक वस्तुअें चुराता है, जब कि शराबी खुद अपने और अपने पड़ोसीके सम्मानकी चोरी करता है।

यं. अिं., ६–१–'२७

जून २९

मदिराकी तरह धूम्रपानको भी मैं भयंकर वस्तु मानता हूं। धूम्रपान मेरी दृष्टिमें अेक दुर्व्यसन है। वह मनुष्यकी अन्तरात्माको जड़ वना देता है; और अकसर मदिरा-पानसे ज्यादा वुरा होता है, क्योंकि वह अदृष्ट रूपमें काम करता है। वह अैसी लत है कि जब अेक बार मनुष्य पर वह अपना अधिकार जमा लेती है तो अुससे पिंड छुड़ाना कठिन होता है। वह खर्चीला दुर्व्यसन है। वह श्वासको गन्दा वनाता है, दांतोंकी चमको नष्ट करता है और कभी कभी केंसर जैसे भयंकर रोगको जन्म देता है। धूम्रपान अेक गन्दी लत है।

यं. अिं., १२-१-'२१

जून ३०

धूम्रपान अेक दृष्टिसे मदिरा-पानसे अधिक वड़ा अभिशाप है, क्योंकि अुसका शिकार समय रहते अुसकी वुराओीको समझ नहीं पाता। धूम्रपान॰। जंगलीपनका चिह्न नहीं माना जाता; सभ्य लोग तो अुसकी प्रशंसा भी करते हैं और अुसके गुणगान करते हैं। मैं केवल अितना ही कह सकता हूं कि जो लोग धूम्रपानका व्यसन छोड़ सकते हैं वे अुसे छोड़ दें और दूसरोंके सामने अुदाहरण पेश करें।

यं. अिं., ४-२-'२६

जुलाओी १

अहिंसा हमारी मानव-जातिका कानून है, जिस प्रकार हिंसा पशुओंका कानून है। पशुमें आत्मा सुप्त रूपमें रहती है; और वह शारीरिक शक्तिके सिवा अन्य किसी कानूनको नहीं जानता। मानवकी प्रतिष्ठाका यह तकाजा है कि वह अधिक अूंचे कानूनका — आत्माके कानूनका — पालन करे।

यं. अिं., ११-९-'२०

जुलाओी २

अहिंसा सबसे अूंची श्रेणीका सक्रिय बल है। वह आत्माका बल है अथवा हमारे भीतर रहनेवाला ओीश्वरीय बल है। अपूर्ण मानव अुस दिव्य बलको पूर्णतया समझ नहीं सकता — वह अुसके पूर्ण तेजको सहन करनेमें समर्थ नहीं है। परन्तु जब अुसका अणु जितना अति सूक्ष्म अंश भी हमारे भीतर सक्रिय बनता है, तब वह आश्चर्यजनक परिणाम लाता है।

ह., १२-११-'३८

जुलाओी ३

आकाशमें चमकनेवाला सूर्य सारे विश्वको अपने जीवनदायी तापसे भर देता है। परन्तु यदि कोओी मनुष्य अुसके बहुत अधिक पास चला जाये, तो सूर्य अुसे जलाकर राख कर देगा। यही बात ओीश्वरके विषयमें है। हम जिस हद तक अहिंसाको सिद्ध करते हैं अुस हद तक हम ओीश्वर-जैसे बनते हैं; परन्तु हम पूरे पूरे ओीश्वर कभी नहीं बन सकते।

ह., १२-११-'३८.

जुलाओी ४

अहिंसा रेडियमके समान काम करती है। रेडियम धातुकी अत्यन्त अल्पमात्रा भी जब शरीरके किसी रोगग्रस्त भागके साथ जड़ दी जाती है, तो वह तव तक निरन्तर, चुपचाप और विना रुके अपना काम करती रहती है जव तक रोगग्रस्त ग्रन्थिके सम्पूर्ण भागको वदल कर नीरोग और स्वस्थ नहीं वना देती। अिसी प्रकार सच्ची अहिंसाकी अल्पमात्रा भी चुपचाप सूक्ष्म और अदृश्य रूपमें अपना काम करती है और सारे समाजको जड़से वदल देती है।

ह., १२–११–'३८

जुलाओी ५

अहिंसा मनुष्य-जातिके हाथमें वड़ीसे वड़ी शक्ति है। मनुष्यके वुद्धि-चातुर्यने संहार और सर्वनाशके जो प्रचंडसे प्रचंड अस्त्र-शस्त्र वनाये हैं, अुनसे भी अहिंसा अधिक प्रचण्ड शक्ति है। सर्वनाश और संहार मानवोंका कानून नहीं है। मनुष्य आवश्यकता पड़ने पर अपने भाओीके हाथों मरनेके लिअे तैयार रह कर स्वतंत्रतासे जीता है, अुसे मार कर कभी नहीं। प्रत्येक हत्या अथवा दूसरेको पहुंचाओी गओी चोट, फिर अुसका अुद्देश्य कुछ भी रहा हो, मानवताके खिलाफ अेक अपराध है।

ह., २०–७–'३५

जुलाअी ६

मेरा अहिंसा-धर्म अेक अत्यन्त सक्रिय शक्ति है। अुसमें कायरताका अथवा निर्बलताका भी कोअी स्थान नहीं है। किसी हिंसक मनुष्यके बारेमें तो किसी दिन अहिंसक बननेकी आशा रखी जा सकती है, परन्तु कायर मनुष्यके बारेमें अैसी आशा कभी नहीं रखी जा सकती। अिसलिअे मैंने अनेक बार यह कहा है कि अगर हम अपने आपको, अपनी स्त्रियोंको और अपने पूजास्थानोंको कष्ट-सहनकी अर्थात् अहिंसाकी शक्तिसे बचाना नहीं जानते, तो कमसे कम लड़कर तो — यदि हम वास्तवमें पुरुष हैं — अिन सबको बचानेका सामर्थ्य हममें होना ही चाहिये।

यं. अिं., १६–६–'२७

जुलाअी ७

मेरी अहिंसामें अैसे लोगोंके लिअे जरूर गुंजाअिश है, जो शस्त्र धारण करते हुअे और सफलतापूर्वक अुनका अुपयोग करते हुअे अहिंसक नहीं हो सकते या नहीं होंगे। मैं हजारवीं बार यह दोहराना चाहता हूं कि अहिंसा बलवानसे बलवान लोगोंके लिअे है, निर्बलोंके लिअे नहीं।

हा. अिं., ८–५–'४१

जुलाअी ८

कोअी मनुष्य शरीरसे कितना ही कमजोर क्यों न हो, लेकिन यदि भागना लज्जाकी बात हो तो वह विरोधीकी शक्तिके सामने झुकेगा नहीं और अपनी जगह पर अडिग रहकर प्राण निछावर कर देगा। यह अहिंसा और वीरता होगी। भले वह कितना ही कम-जोर क्यों न हो, परन्तु अपने शत्रुको चोट पहुंचानेमें वह अपनी सारी शक्ति लगा देगा और अिस प्रयत्नमें जान दे देगा। यह वीरता है, लेकिन अहिंसा नहीं है। जब अुसका कर्तव्य खतरेका सामना करना हो तब अैसा न करके यदि वह भाग जाय, तो वह अुसकी कायरता होगी। पहले अुदाहरणमें मनुष्यमें प्रेम या करुणा होगी। दूसरेमें अरुचि या अविश्वास होगा। और तीसरेमें डर होगा।

ह., १७-८-'३५

जुलाअी ९

अगर संसारके बड़ेसे बड़े विचारशील और बुद्धिशाली लोगोंने अहिंसाकी भावनाको सोच-समझकर ग्रहण न किया हो, तो अुन्हें गुंडा-शाहीका सामना पुरानी पद्धतिसे ही — पशुबलसे ही — करना होगा। लेकिन वह यही बतायेगा कि हम अभी तक जंगलके कानूनसे बहुत आगे नहीं बढ़े हैं, अभी तक हमने अीश्वरकी दी हुअी विरासतकी कदर करना नहीं सीखा है और १९०० वर्ष पुराने अीसाअी धर्मके, अुससे भी प्राचीन हिन्दू और बौद्ध धर्मके तथा अिस्लामके अुपदेशोंके बावजूद मानव-प्राणियोंके नाते हमने बहुत अधिक प्रगति नहीं साधी है। जिन लोगोंमें अहिंसाकी भावना नहीं है अुन लोगों द्वारा किये जानेवाले पशुबलके अुपयोगको मैं समझ सकता हूं; परन्तु जिन लोगोंमें अहिंसाकी भावना है अुनसे तो मैं यही चाहूंगा कि वे अिस बातका प्रत्यक्ष अुदाहरण प्रस्तुत करनेमें अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दें कि गुंडाशाहीका सामना भी अहिंसासे ही करना चाहिये।

ह., १०-१२-'३८

जुलाअी १०

निर्भयता — अभय आध्यात्मिकताकी पहली शर्त है। कायर मनुष्य कभी सदाचारी और नीतिमान हो ही नहीं सकता।

यं. अि., १३-१०-'२१

जुलाअी ११

हम अीश्वरसे डरेंगे तो मनुष्यका हमारा डर मिट जायगा।

स्पी. रा. म., पृ० ३३०

जुलाअी १२

अेक निर्दोष मनुष्यका आत्म-बलिदान अैसे दस लाख मनुष्योंके बलिदानसे दस लाख गुना अधिक शक्तिशाली है, जो दूसरोंको मारनेके कार्यमें मरते हैं। निर्दोषका स्वेच्छापूर्ण बलिदान अुस अुद्धत अत्याचारका अधिकसे अधिक शक्तिशाली अुत्तर है, जिसकी अीश्वर या मनुष्यने आज तक कभी कल्पना की है।

यं. अि. १२-२-'२५

जुलाअी १३

अहिंसाके साथ जुड़े हुअे सत्यके बलसे आप सारे संसारको अपने पैरों पर झुका सकते हैं — अपने अधीन बना सकते हैं। सत्याग्रहका सार अिसके सिवा और कुछ नहीं है कि राजनीतिक अर्थात् राष्ट्रीय जीवनमें सत्य और प्रेमको दाखिल किया जाय।

यं. अि., १०-३-'२०

जुलाअी १४

सत्याग्रही भयको अंतिम नमस्कार कर देता है। अिसलिअे वह अपने विरोधी पर विश्वास करनेमें कभी डरता नहीं। यदि विरोधी बीस बार भी असत्यका व्यवहार करके अुसके साथ दगा करे, तो सत्याग्रही अिक्कीसवीं बार अुस पर विश्वास करनेको तैयार रहता है। क्योंकि मानव-स्वभावमें पूर्ण विश्वास अुसके अहिंसा-धर्मका सार है।

स. सा. अ., पृ० २४६

जुलाअी १५

सत्याग्रही यदि स्वभावसे ही कानूनका पालन करनेवाला न हो तो वह कुछ भी नहीं है। अुसका यह स्वभाव ही अुससे सर्वोच्च कानूनका पूर्ण पालन कराता है — वह सर्वोच्च कानून है अन्तरात्माकी आवाज, जिसका स्थान दूसरे सारे कानूनोंसे अूंचा है।

स्पी. रा. म., पृ० ४६५

जुलाअी १६

सत्याग्रह सौम्य वस्तु है; वह कभी चोट नहीं पहुंचाता। वह क्रोध या द्वेषका परिणाम नहीं होना चाहिये। अुसमें कभी धूमधाम नहीं होती, कभी अुतावली नहीं होती, कभी शोरगुल नहीं होता। वह जबरदस्तीकी ठीक अुलटी वस्तु है। हिंसाका सम्पूर्ण स्थान ले सकनेवाली वस्तुके रूपमें ही अुसकी कल्पना की गअी है।

ह., १५–४–'३३

जुलाअी १७

सत्याग्रह अैसी शक्ति है, जिसका व्यक्ति और समाज दोनों अुपयोग कर सकते हैं। जिस प्रकार अुसका अुपयोग घर-गृहस्थीके व्यवहारोंमें हो सकता है, अुसी प्रकार राजनीतिक व्यवहारोंमें भी हो सकता है। सत्याग्रहका सर्वत्र प्रयोग किया जा सकता है, यही अुसके स्थायित्वका और अुसकी अजेयताका प्रबल प्रमाण है। पुरुष, स्त्रियां और बालक सब कोअी अुसका अेकसा अुपयोग कर सकते हैं। यह कहना बिलकुल झूठ है कि सत्याग्रह केवल निर्बलों द्वारा अुपयोगमें ली जानेवाली शक्ति है और अिसका अुपयोग वे तभी तक करते हैं जब तक वे हिंसाका सामना हिंसासे करनेकी क्षमता प्राप्त नहीं कर लेते।

यं. अि., ३–११–’२७

जुलाअी १८

सत्याग्रहकी शक्तिका हिंसासे और अिसलिअे सारे अत्याचारों, सारे अन्यायोंसे वैसा ही सम्बन्ध है, जैसा प्रकाशका अन्धकारके साथ है। राजनीतिमें अुसका प्रयोग कभी न बदलनेवाले अिस स्वयंसिद्ध सत्य पर निर्भर करता है कि लोगों पर शासन करना तभी तक संभव है, जब तक वे जाने या अनजाने शासित होना स्वीकार करें।

यं. अि., ३–११–’२७

जुलाअी १९

क्रोधरहित और द्वेषरहित कष्ट-सहनका सूर्य जब अुगता है, तब अुसके सामने कठोरसे कठोर हृदय भी पिघल जाता है और घोरसे घोर अज्ञान भी नष्ट हो जाता है।

यं. अि., १०–२–’२५

जुलाअी २०

प्रत्येक महान अुद्देश्यमें लड़नेवालोंकी संख्याका महत्त्व नहीं होता, परन्तु वह गुण ही निर्णायक तत्त्व सिद्ध होता है जिससे अुन लड़वैयोंका निर्माण हुआ है। संसारके वड़ेसे वड़े पुरुष हमेशा अकेले ही खड़े रहे हैं।

यं. अिं., १०–१०–'२९

जुलाअी २१

अुदाहरणके लिअे, जरथुश्त, बुद्ध, अीसा और मुहम्मद जैसे महान पैगम्बरोंको लीजिये — ये सब दूसरे अनेक पैगम्बरोंकी तरह, जिनके नाम मैं गिना सकता हूं, अपने अुद्देश्यों पर अकेले ही खड़े रहे थे। परन्तु अुनकी अपने आपमें और अपने अीश्वरमें जीवित श्रद्धा थी; और यह विश्वास रखनेके कारण कि अीश्वर अुनके पक्षमें है, अुन्होंने अपनेको कभी अकेला अनुभव नहीं किया।

यं. अिं., १०–१०–'२९

जुलाअी २२

आप अुस अवसरका स्मरण कर सकते हैं, जब अनेक शत्रु मुहम्मद पैगम्बरके पीछे पड़े हुअे थे और अबू बकरने, जो पैगम्बरकी हिजरतमें अुनका साथ दे रहा था, दोनोंके नसीबका विचार करके कांपते कांपते पैगम्बरसे कहा था: "आप शत्रुओंकी संख्याका तो विचार कीजिये, जो हमें पकड़नेके लिअे हमारे पीछे पड़े हुअे हैं। अिस मुसीबतसे हम दो आदमी कैसे पार हो सकेंगे?" अेक क्षणका भी विचार किये बिना पैगम्बर साहबने अपने वफादार साथीको अुलाहना देते हुअे कहा: "नहीं, अबू बकर, हम दो नहीं बल्कि तीन हैं; क्योंकि खुदा हमारे साथ है!" अथवा विभीषण और प्रह्लादकी अजेय श्रद्धाको लीजिये। मैं चाहता हूं कि आप अपने आपमें और अीश्वरमें वैसी ही जीती-जागती श्रद्धा रखें।

यं. अिं., १०–१०–'२९

जुलाअी २३

सारे शरीरधारी प्राणियोंका अस्तित्व हिंसा पर ही निर्भर है। अिसलिअे सर्वोच्च धर्मकी व्याख्या अहिंसा जैसे नकारात्मक शब्द द्वारा की गअी है। संसार संहार और नाशकी जंजीरमें बंधा हुआ है। दूसरे शब्दोंमें, शरीरधारी प्राणियोंके लिअे हिंसा अेक स्वाभाविक आवश्यकता है। यही कारण है कि अहिंसाका पुजारी शरीरके बन्धनसे अंतिम, शाश्वत मुक्ति पानेके लिअे सदा प्रार्थना करता है।

यं. अिं., २–१०–'२८

जुलाअी २४

मेरा निश्चित रूपसे यह विश्वास है कि अीश्वरके सारे प्राणियोंको जीनेका अुतना ही अधिकार है जितना कि हम मनुष्योंको है। यदि हमारे साथ अिस धरती पर रहनेवाले तथाकथित हिंसक और हानिकारक प्राणियोंकी हत्या करनेका कर्तव्य बतानेके बजाय ज्ञानवान लोगोंने अपनी बुद्धिशक्तिका अुपयोग अुनके साथ अन्य प्रकारसे व्यवहार करनेके रास्ते खोजनेमें किया होता, तो हम आज मानव-प्राणियोंकी प्रतिष्ठाको शोभा देनेवाली दुनियामें रहते होते — अैसे मानव-प्राणी जिन्हें बुद्धिका वरदान मिला है और भले-बुरे, सही-गलत, हिंसा-अहिंसा तथा सत्य-असत्यके बीच चुनाव करनेकी शक्ति मिली है।

ह., ९–१–'३७

जुलाअी २५

हम मृत्युके बीच रहकर सत्यकी दिशामें अंधोंकी तरह अपना मार्ग खोजनेके प्रयत्नमें लगे हुअे हैं। शायद यह ठीक ही है कि जीवनमें हर कदम पर हम खतरेसे घिरे रहते हैं, क्योंकि अिस खतरेका और अपने अनिश्चित अस्तित्वका ज्ञान रखते हुअे भी केवल हमारा आश्चर्यजनक अभिमान ही अैसा है, जो समग्र जीवनके मूल स्रोत अीश्वरके प्रति रही हमारी अुपेक्षासे आगे बढ़ जाता है।

यं. अिं., ७–७–'२७

जुलाओी २६

मेरी बुद्धि और हृदय दोनों अिस बातमें विश्वास करनेसे अिनकार करते हैं कि तथाकथित हानिकारक प्राणी मनुष्यके हाथों नष्ट होनेके लिअे ही अुत्पन्न किये गये हैं। अीश्वर भला और बुद्धिमान है। भला और बुद्धिमान अीश्वर अितना बुरा और अितना मूर्ख नहीं हो सकता कि बिना हेतुके किसी प्राणीका सर्जन करे। अिस विषयमें अपना अज्ञान स्वीकार करना और यह मान लेना अधिक तर्कसंगत होगा कि अीश्वरकी अिस सृष्टिमें हर प्रकारके जीवनका — प्राणियोंका — कोअी न कोअी अुपयोगी हेतु है, जिसका हमें धीरजसे पता लगानेका प्रयत्न करना चाहिये।

ह., ९–१–'३७

जुलाओी २७

मैं निश्चित रूपसे यह मानता हूं कि छोटेसे छोटा बहाना मिलते ही मनुष्यका वध कर डालनेकी मनुष्यकी आदतने अुसकी बुद्धिको भ्रष्ट कर दिया है, और वह दूसरे प्राणियोंके साथ क्रूरताका व्यवहार करता है। यदि वह हृदयसे यह माने कि अीश्वर प्रेम और दयाका अीश्वर है, तो वह दूसरे प्राणियोंके साथ क्रूरताका व्यवहार करनेमें कांप अुठेगा।

ह., ९–१–'३७

जुलाओी २८

प्राणियोंकी चीरफाड़की क्रियासे मैं अपनी समग्र आत्मासे घृणा करता हूं। विज्ञानके नाम पर और तथाकथित मानव-सेवाके नाम पर निर्दोष प्राणियोंका जो अक्षन्तव्य वध किया जाता है अुसे मैं धिक्कारता हूं। निर्दोष प्राणियोंके रक्तसे कलंकित सारे वैज्ञानिक आविष्कारों और सारी खोजोंको मैं बिलकुल निरर्थक समझता हूं।

यं. अिं., १७–१२–'२५

जुलाअी २९

जीवनके मेरे तत्त्वज्ञानमें साधन और साध्य पर्यायवाची शब्द हैं; दोनों अेक-दूसरेका स्थान ले सकते हैं।

यं. अि., २६-१२-'२४

जुलाअी ३०

लोग कहते हैं: "साधन आखिर साधन ही हैं।" मैं कहूंगा: "साधन ही आखिर सब कुछ हैं।" जैसे साधन होंगे वैसा ही साध्य होगा। हिंसक साधनोंसे हमें हिंसक स्वराज्य ही मिलेगा। वह स्वराज्य संसारके लिअे और स्वयं हिन्दुस्तानके लिअे भी संकटरूप सिद्ध होगा। फ्रान्सने अपनी स्वतंत्रता हिंसक साधनों द्वारा प्राप्त की। वह अभी तक अपनी अुस हिंसाकी महंगी कीमत चुका रहा है।

यं. अि., १७-७-'२४

जुलाअी ३१

साधन और साध्यके बीच दोनोंको अलग करनेवाली कोअी दीवाल नहीं है। बेशक, सरजनहार प्रभुने साधनों पर नियंत्रण रखनेकी शक्ति हमें दी है (वह भी अत्यन्त सीमित मात्रामें), परन्तु साध्य पर नियंत्रण रखनेकी कोअी शक्ति नहीं दी है। लक्ष्यकी सिद्धि ठीक साधनोंकी सिद्धिके अनुपातमें ही होती है। यह अैसा सिद्धान्त है जिसमें अपवादकी कोअी गुंजाअिश ही नहीं है।

यं. अि., १७-७-'२४

अगस्त १

जो अर्थशास्त्र किसी व्यक्ति अथवा किसी राष्ट्रके नैतिक कल्याणको हानि पहुंचाता है, वह अनैतिक है और अिसलिअे पापपूर्ण है। अिस तरह जो अर्थशास्त्र अेक देशको दूसरे देशका शोषण करने और अुसे लूटनेकी अिजाजत देता है वह अनैतिक है। शोषणके शिकार बने हुअे मजदूरोंकी तनतोड़ मेहनतसे तैयार की गअी चीजें खरीदना और अुनका अुपयोग करना पाप है।

यं. अिं., १३–१०–'२१

अगस्त २

जो अर्थशास्त्र नैतिकताकी और मानव-भावनाओंकी अुपेक्षा करता है, वह मोमके अुन पुतलोंकी तरह है जो जीवित-जैसे दिखाअी देने पर भी ज़ीवधारी मानवोंकी तरह प्राणवान नहीं होते। गहरा चिन्तन किये बिना अीजाद किये हुअे आजके ये नये आर्थिक कानून कसौटीके हर मौके पर व्यवहारमें निष्फल और व्यर्थ सिद्ध हुअे हैं। और जो राष्ट्र या व्यक्ति अिन कानूनोंको अपने मार्गदर्शक स्वयंसिद्ध सत्योंके रूपमें स्वीकार करते हैं अुनका नाश निश्चित है।

यं. अिं., २७–१०–'२१

अगस्त ३

अर्थशास्त्रके क्षेत्रमें अहिंसाके कानूनको ले जानेका अर्थ है अुस क्षेत्रमें नैतिक मूल्योंको दाखिल करना। आन्तर-राष्ट्रीय व्यापारका नियमन करनेमें अिन नैतिक मूल्योंका ध्यान रखना जरूरी है।

यं. अिं., २६–१२–'२४

अगस्त ४

अेक स्थानसे दूसरे स्थानकी दूरी और समयके भेदको मिटाने, भोग-विलासकी भूखको बढ़ाने तथा अुसकी तृप्तिके साधनोंकी खोजमें धरतीके अेक छोरसे दूसरे छोर तक जानेकी अिस पागलपनभरी अिच्छासे मैं पूरे दिलसे नफरत करता हूं। यदि आधुनिक सभ्यता अिन्हीं सबकी प्रतीक हो, और मैं स्वयं तो अिसे अैसी ही मानता हूं, तो मैं अिस सभ्यताको शैतानी सभ्यता कहूंगा।

यं. अि., १७–३–'२७

अगस्त ५

मेरा लक्ष्य रेलों और अस्पतालोंको नष्ट करनेका नहीं है, यद्यपि वे स्वाभाविक रूपमें नष्ट हो जायं तो मैं निश्चित ही अुसका स्वागत करूंगा। रेलें अथवा अस्पतालें अूंची और शुद्ध सभ्यताकी कसौटी या मापदण्ड नहीं हैं। अधिकसे अधिक अुनके पक्षमें कहा जाय तो वे अेक आवश्यक बुराअी हैं। दोनोंमें से अेक भी किसी राष्ट्रकी नैतिक अूंचाअीमें अेक अिंचकी भी वृद्धि नहीं करती।

यं. अि., २६–१–'२१

अगस्त ६

अेक स्थानसे दूसरे स्थान तक जानेके तेज साधनोंकी वजहसे दुनियाकी स्थितिमें क्या थोड़ा भी सुधार हुआ है? ये साधन मनुष्यकी आध्यात्मिक प्रगतिको किस प्रकार आगे बढ़ाते हैं? क्या वे अन्तमें अिस प्रगतिको रोकते नहीं हैं? और क्या मनुष्यकी महत्त्वाकांक्षाकी कोअी सीमा है? अेक समय अैसा था जब अेक घंटेमें कुछ मीलकी यात्रा करके हम सन्तुष्ट रहते थे; आज हम अेक घंटेमें सैकड़ों मीलका फासला तय करना चाहते हैं। अेक दिन अैसा भी आयेगा जब हम अंतरिक्षमें अुड़ना चाहेंगे। लेकिन अिसका परिणाम क्या होगा? अव्यवस्था, अन्धाधुन्धी।

यं. अि., २१–१–'२६

अगस्त ७

मेरा यह पक्का विश्वास है कि यूरोप आज ओश्वरकी भावना या ओसाओी धर्मकी सच्ची भावनाका नहीं, परन्तु शैतानकी भावनाका प्रतिनिधित्व करता है। और शैतानकी सफलता तब अपनी चरम सीमाको पहुंच जाती है जब वह अपने होठों पर ओश्वरका नाम लेकर सामने आता है। यूरोप आज केवल नामको ही ओसाका अनुयायी है। वास्तवमें वह धनकी ही पूजा कर रहा है।

यं. अि., ८–९–'२०

अगस्त ८

"ब्रह्माने यज्ञके कर्तव्यके साथ अपनी प्रजाको अुत्पन्न क्रिया और कहा: 'यज्ञकी सहायतासे तुम फलो-फूलो। वह तुम्हारी सारी कामनायें पूर्ण करे।' जो मनुष्य यह यज्ञ किये बिना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है"—अैसा गीता कहती है।*

ह. २९–६–'३५

---

* गीताके जिन श्लोकोंमें यह विचार व्यक्त किया गया है वे अिस प्रकार हैं:

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वम् अेष वोऽस्त्विष्ट-कामधुक्॥
अिष्टान् भोगान् हि वो देवाः दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन अेव सः॥

(अ० ३, श्लो० १०, १२)

अगस्त ९

'अपना पसीना बहाकर रोटी कमाओ' यह बाअिबलका वचन है। यज्ञ अनेक प्रकारके हो सकते हैं। अुनमें से अेक शरीर-श्रम अथवा रोटीके लिअे श्रम भी हो सकता है। अगर सब लोग अपनी रोटी कमाने जितना ही श्रम करें, तो भी अिस जगतमें सबके लिअे पर्याप्त अन्न होगा और सबको काफी फुरसत मिलेगी।

ह., २९–६–'३५

अगस्त १०

अुस स्थितिमें न तो आवश्यकतासे अधिक जनसंख्याका हल्ला मचेगा, न कोअी रोग रहेगा और न अैसा कोअी दुःख-दर्द रहेगा जैसा आज हम अपने चारों ओर फैला हुआ देखते हैं। अैसा श्रम यज्ञका अुत्तम रूप होगा। बेशक, मनुष्य अपने शरीरों अथवा अपने मस्तिष्कोंकी सहायतासे दूसरे अनेक काम करेंगे, परन्तु वह सब जन-साधारणके भलेके लिअे किया जानेवाला प्रेमका श्रम होगा। अुस हालतमें न तो दुनियामें अमीर और गरीब होंगे, न कोअी अूंचे और नीचे होंगे और न कोअी स्पृश्य और अस्पृश्य होंगे।

ह., २९–६–'३५

अगस्त ११

यदि हम यज्ञके सम्पूर्ण नियमका — अर्थात् अपने जीवनके नियम का — पूरी तरह पालन न कर सकें और केवल अपनी रोजकी रोटीके लिअे ही पर्याप्त शरीर-श्रम करें, तो भी हम अिस आदर्शकी दिशामें काफी आगे बढ़ जायेंगे। अगर हम अैसा करें तो हमारी आव-श्यकतायें कमसे कम हो जायंगी और हमारा भोजन सादा हो जायगा। तब हम जीनेके लिअे खायेंगे, खानेके लिअे नहीं जियेंगे। जिस किसीको अिस कथनकी सचाअीमें शंका हो, वह अपनी रोटीके लिअे पसीना बहानेका प्रयत्न करे; वह अपने श्रमसे अुत्पन्न की हुअी चीजोंमें बड़ेसे बड़ा स्वाद और आनन्द प्राप्त करेगा, अुसकी श्रद्धा शरीर-श्रममें बढ़ेगी और अुसे अिस बातका पता चलेगा कि जो बहुतसी चीजें वह खाता था वे अनावश्यक थीं।

ह., २९–६–'३५

अगस्त १२

मैं अैसे किसी समयकी कल्पना नहीं कर सकता जब कोअी आदमी दूसरोंसे ज्यादा धनी नहीं होगा। लेकिन मैं अैसे समयकी कल्पना अवश्य करता हूं जब धनी लोग गरीबोंको नुकसान पहुंचा कर अपनी सम्पत्ति बढ़ानेसे नफरत करेंगे और गरीब लोग धनिकोंसे अीर्ष्या करना छोड़ देंगे। अधिकसे अधिक पूर्ण जगतमें भी हम अस-मानताओंको टाल नहीं सकेंगे। परन्तु हम संघर्ष और कड़वाहटको अवश्य टाल सकते हैं और हमें टालना चाहिये।

यं. अि., ७–१०–'२६

अगस्त १३

मैं जो स्वप्न सिद्ध करना चाहता हूं वह मालिकोंकी व्यक्तिगत सम्पत्तिको लूटनेका नहीं है; वह तो सम्पत्तिके अुपयोग पर अंकुश लगानेका स्वप्न है, जिससे सारी गरीबी टले, गरीबीसे पैदा होनेवाला असन्तोष दूर हो तथा आज अमीरों और गरीबोंके जीवन और वातावरणमें जो भयंकर तथा अशोभन विरोध दिखाअी देता है अुसका अन्त हो।

यं. अि., २१–११–'२९

अगस्त १४

जड़ यंत्रोंको अुन लाखों करोड़ों जीवित यंत्रोंकी बराबरीमें नहीं खड़ा करना चाहिये, जो भारतके सात लाख गांवोंमें ग्रामवासियोंके रूपमें फैले हुअे हैं।

ह., १४–९–'३५

अगस्त १५

यंत्रका अच्छा अुपयोग यही होगा कि वह मनुष्यके श्रममें मदद करे और अुसे आसान बनाये। आज यंत्रका जैसा अुपयोग होता है वह लाखों पुरुषों और स्त्रियोंके मुंहकी रोटी छीन लेता है और अुनकी बिलकुल परवाह न करके मुट्ठीभर लोगोंके हाथोंमें अधिकाधिक मात्रामें दौलत अिकट्ठी करता है।

ह., १४–९–'३५

अगस्त १६

यंत्रके अुपयोगका विचार करते समय हमारी दृष्टिमें प्रमुख स्थान मनुष्यका होना चाहिये। यंत्रके अुपयोगका परिणाम मनुष्यके अंगोंको कमजोर और अपंग बनानेके रूपमें नहीं आना चाहिये।

यं. अि., १३–११–'२४

अगस्त १७

मैं यंत्रोंका विरोध नहीं करता, परन्तु यंत्रोंके लिअे दिखाये जानेवाले पागलपनका विरोध करता हूं। आज यह पागलपन अुन यंत्रोंके लिअे है, जिन्हें मेहनत बचानेवाले यंत्र कहा जाता है। मनुष्य तब तक 'मेहनत बचाते चले जाते हैं' जब तक हजारों लोग बेकार नहीं हो जाते और खुले रास्तों पर भूखों मरनेके लिअ नहीं फेंक दिये जाते।

यं. अि., १३–११–'२४

अगस्त १८

लेकिन यह प्रश्न पूछा जाता है कि लाखों लोगोंकी मेहनत बचा कर अुन्हें साहित्य, संगीत, कला आदि बौद्धिक विषयोंके अध्ययन और विकासके लिअे अधिक फुरसत क्यों न दी जाय? फुरसत अेक हद तक ही अच्छी और जरूरी है। अीश्वरने मनुष्यको अपने पसीनेकी रोटी खानेके लिअे अुत्पन्न किया है। अिस संभावनाके विषयमें सोच कर मैं डर जाता हूं कि कहीं हम अपनी जरूरतकी सारी चीजें, जिनमें हमारे खाद्य-पदार्थ भी आ जाते हैं, जादूका मंत्र फूंककर पैदा करनेकी शक्ति न प्राप्त कर लें।

ह., १६–५–'३६

अगस्त १९

मैं कुछ लोगोंके लिअे नहीं बल्कि सारी मानव-जातिके लिअे समय और मेहनत बचाना चाहता हूं। मैं कुछ लोगोंके हाथोंमें नहीं बल्कि सब लोगोंके हाथोंमें दौलत अिकट्ठी करना चाहता हूं। आज यंत्र मुट्ठीभर लोगोंको लाखों मनुष्योंकी पीठ पर सवार होनेमें ही मदद करते हैं। अिस सबके पीछे मेहनत बचानेके लिअे मानव-दयाकी प्रेरणा काम नहीं करती, बल्कि मनुष्यका लोभ काम करता है। अिसी परिस्थितिके खिलाफ मैं अपनी सारी शक्ति लगाकर लड़ रहा हूं।

यं. अि., १३–११–'२४

अगस्त २०

चरखेका आन्दोलन कुछ लोगोंके हाथमें धन और सत्ताका केन्द्रीकरण करने तथा अधिक लोगोंका शोषण करनेके स्थानसे यंत्रोंको हटा कर अुनके अुचित स्थान पर अुन्हें बैठानेका संगठित प्रयत्न है। अिसलिअे मेरी योजनामें यंत्रोंका संचालन करनेवाले मनुष्य केवल अपना या अपने राष्ट्रका ही विचार नहीं करेंगे, परन्तु सारी मानव-जातिका विचार करेंगे।

यं. अिं., १७–९–'२५

अगस्त २१

चरखेके लिअे मैं अिस सम्मानका दावा करता हूं कि वह आर्थिक कष्टकी समस्याको अत्यन्त स्वाभाविक, सादे, सस्ते और व्यावहारिक रूपमें हल करनेकी क्षमता रखता है। अिसलिअे चरखा न केवल निकम्मा ही नहीं है, . . . बल्कि वह हर घर और हर परिवारके लिअे अेक अुपयोगी और अनिवार्य वस्तु है। वह हमारे राष्ट्रकी समृद्धिका प्रतीक है और अिसलिअे हमारी स्वतंत्रताका प्रतीक है। वह व्यापारिक युद्धका नहीं, परन्तु व्यापारिक शान्तिका प्रतीक है।

यं. अिं., ८–१२–'२१

अगस्त २२

चरखेमें दुनियाके राष्ट्रोंके लिअे दुर्भावनाका नहीं, परन्तु सद्भावना और आत्म-सहायताका सन्देश समाया हुआ है। चरखेके संरक्षणके लिअे विशाल जहाजी बेड़े और जलसेनाकी जरूरत नहीं होगी, जो विश्वकी शांतिके लिअे अेक खतरा बन जाती है और अुसकी साधन-सामग्रीका शोषण करती है; चरखेके लिअे जरूरत है लाखों स्त्री-पुरुषों द्वारा अपने घरोंमें ही अपना सूत कातनेका धार्मिक संकल्प करनेकी, जिस तरह आज वे अपना भोजन अपने घरोंमें ही तैयार कर लेते हैं।

यं. अिं., ८–१२–'२१

अगस्त २३

जब मैं रूसको देखता हूं, जहां अुद्योगवादकी देवताकी तरह पूजा होने लगी है, तो वहांका जीवन मुझे पसन्द नहीं आता। बाअिबलकी भाषाका अुपयोग किया जाय तो "अगर मनुष्यको सारी दुनियाका राज्य मिल जाय और वह अपनी आत्माको खो दे, तो दुनियाका राज्य अुसके किस कामका?" आधुनिक भाषामें कहा जाय तो अपना व्यक्तित्व खोकर मशीनका अेक पुर्जा बन जाना मानव-प्रतिष्ठाके विरुद्ध है। मैं चाहता हूं कि हर मनुष्य समाजका प्राणवान और पूर्ण विकसित सदस्य बने।

ह., २८-१-'३९

अगस्त २४

अंतिम विश्लेषणमें साम्यवादका क्या अर्थ है? अुसका अर्थ है वर्ग-विहीन समाज। यह अेक अैसा आदर्श है, जिसकी प्राप्तिके लिअे प्रयत्न किया जाना चाहिये। मैं तभी अुससे अपना सम्बन्ध तोड़ता हूं, जब अुसे सिद्ध करनेके लिअे पशुबल — हिंसा — की सहायता ली जाती है। हम सब समान अुत्पन्न हुअे हैं; लेकिन हमने अिन सारी शताब्दियोंमें अीश्वरकी अिच्छाका विरोध किया है। असमानताका विचार, 'अूंच और नीच' का भाव अेक बुराअी है; लेकिन मनुष्यके हृदयसे अिस बुराअीका अुच्छेद तलवार या बन्दूककी मददसे करनेमें मेरा विश्वास नहीं है। मानव-हृदयको बदलनेमें ये साधन अुपयोगी सिद्ध नहीं होते।

ह., १३-३-'३७

अगस्त २५

हर मनुष्यको जीवनकी जरूरतें हासिल करनेका समान अधिकार है, जिस प्रकार पक्षियों और पशुओंको है। और चूंकि हरअेक अधिकारके साथ अुसके अनुरूप कर्तव्य जुड़ा रहता है तथा अुस पर होनेवाले आक्रमणका विरोध करनेके लिअे अनुरूप अुपाय भी जुड़ा रहता है, अिसलिअे प्राथमिक मूलभूत समानताकी स्थापना करनेके लिअे केवल अुसके साथ जुड़े हुअे कर्तव्यों और अुपायोंका पता लगाना ही बाकी रह जाता है। अुसके साथ जुड़ा हुआ कर्तव्य है अपने हाथ-पैरोंसे श्रम करना; और अुपाय है अुस मनुष्यके साथ असहयोग करना जो हमें अपने श्रमके फलसे वंचित करता है।

यं. अि., २६–३–'३१

अगस्त २६

अधिकारोंका सच्चा स्रोत कर्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्तव्योंका पालन करें, तो अधिकारोंको खोजने बहुत दूर नहीं जाना पड़ेगा। अगर अपने कर्तव्योंका पालन किये बिना हम अधिकारोंके पीछे दौड़ते हैं, तो वे मृगजलके समान हमसे दूर भागते हैं। हम जितना ज्यादा अुनका पीछा करते हैं, अुतने ही ज्यादा वे हमसे दूर भागते हैं। यही अुपदेश भगवान कृष्णके अिन अमर शब्दोंमें समाया हुआ है: 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' — केवल कर्म पर ही तेरा अधिकार है, अुसके फल पर कभी नहीं। अिस वाक्यमें कर्म कर्तव्यका सूचक है और फल अधिकारका।

यं. अि., ८–१–'२५

अगस्त २७

मजदूर-वर्गको अपना गौरव और अपनी शक्ति पहचाननी चाहिये। मजदूरोंकी तुलनामें पूंजीपतियोंमें न तो गौरव है और न शक्ति है। ये दोनों चीजें सामान्य मनुष्यके पास भी होती हैं। किसी सुव्यवस्थित लोकतान्त्रिक समाजमें अराजकता या हड़तालोंके लिअे कोअी अवकाश या मौका ही नहीं है। अैसे समाजमें न्याय प्राप्त करनेके लिअे काफी कानूनी साधन होते हैं। अुसमें छिपी या खुली हिंसाके लिअे कोअी स्थान नहीं होना चाहिये।

दि. डा., पृ० ३८१

अगस्त २८

पूंजीपति मजदूरों पर नियंत्रण रखते हैं, क्योंकि वे मेल या संयोजनकी कला जानते हैं। पानीकी बूंदें अलग अलग रहती हैं तो वे सूख जाती हैं; वे ही बूंदें आपसमें मिल कर महासागरको बनाती हैं, जो अपने विशाल पट पर बड़े बड़े जहाज ले जाता है। अिसी प्रकार दुनियाके किसी भी भागमें अगर सारे मजदूर मिलकर संगठित हो जायं, तो वे अूंची तनखाहोंके लोभमें नहीं फंसेंगे, या लाचार बनकर थोड़ेसे भत्तेकी ओर आकर्षित नहीं होंगे।

ह., ७–९–'४७

अगस्त २९

मजदूरोंका सच्चा और अहिंसक संगठन सारी आवश्यक पूंजीको अपनी ओर खींचनेमें चुम्बकका काम करेगा। अुस हालतमें पूंजीपति केवल ट्रस्टियोंकी तरह ही रहेंगे। जब वह शुभ और सुखद दिन आयेगा, तब पूंजीपतियोंमें और मजदूरोंमें कोअी फर्क नहीं रह जायेगा। अुस समय मजदूरोंको पूरा खाना मिलेगा, अच्छे और हवा-प्रकाशवाले साफ-सुथरे मकान मिलेंगे, अुनके बच्चोंको सारी आवश्यक शिक्षा मिलेगी, अुन्हें अपने आपको शिक्षा देनेके लिअे पूरा समय मिलेगा और अुपयुक्त डॉक्टरी मदद मिलेगी।

ह., ७–९–'४७

अगस्त ३०

अमेरिका आज बड़े बड़े अुद्योगोंकी दृष्टिसे दुनियाका सबसे आगे बढ़ा हुआ देश है। फिर भी वह गरीबी और नैतिक पतनको देशनिकाला नहीं दे पाया है। अिसका कारण यह है कि अमेरिकाने सब जगह अुपलब्ध मानव-शक्तिकी अुपेक्षा की और मुट्ठीभर लोगोंके हाथोंमें सत्ताको केन्द्रित कर दिया, जिन्होंने अनेक लोगोंको चूस कर और दुखी बना कर सम्पत्ति जमा कर ली। नतीजा यह है कि अमेरिकाका अुद्योगीकरण अुसके अपने गरीबोंके लिअे और बाकीकी दुनियाके लिअे अेक भारी संकट बन गया है।

ह०, ९–३–'४७

अगस्त ३१

अगर भारतको अैसे सर्वनाश और बरबादीसे बचना हो, तो अुसे अमेरिका और दूसरे पश्चिमी देशोंकी अुत्तम बातोंका अनुकरण करना चाहिये और अुनकी अूपरसे आकर्षक दिखाअी देनेवाली परन्तु वास्तवमें नाशकारी आर्थिक नीतियोंसे अलग रहना चाहिये। अिसलिअे भारतकी दृष्टिसे सच्ची योजना यह होगी कि अुसकी सम्पूर्ण मानव-शक्तिका अुत्तम अुपयोग किया जाय और भारतके कच्चे मालको विदेशोंमें भेजनेके बजाय अुसके असंख्य गांवोंमें ही बांटा जाय; क्योंकि कच्चा माल विदेशोंमें भेजनेका अर्थ होगा अुससे बनी तैयार चीजोंको भारी दाम चुकाकर खरीदना।

ह०, २३–३–'४७

सितम्बर १

दरिद्र-नारायण अुन लाखों नामोंमें से अेक नाम है, जिनके द्वारा मनुष्य-जाति औश्वरको जानती-पहचानती है। औश्वरको वास्तवमें कोओी नाम नहीं दिया जा सकता; और मानव-बुद्धिके लिअे औश्वरको समझना कठिन है। दरिद्र-नारायणका अर्थ है दरिद्रोंका, गरीबोंका, औश्वर; गरीबोंके हृदयमें बसने और प्रकट होनेवाला औश्वर।

यं. अिं., ४–४–'२९

सितम्बर २

लाखों-करोड़ों मूक मानवोंके हृदयोंमें बसनेवाले औश्वरके सिवा दूसरे किसी औश्वरको मैं नहीं जानता। वे औश्वरकी अुपस्थितिको नहीं समझते, जब कि मैं अुसे समझता हूं। और मैं अिन लाखों मूक मानवोंकी सेवाके जरिये औश्वरकी — जो सत्य है — अथवा सत्य की — जो औश्वर है — पूजा करता हूं।

ह., ११–३–'३९

सितम्बर ३

गरीबोंके लिअे चरखेका आर्थिक पहलू ही वास्तवमें आध्यात्मिक पहलू है। भूखों मरनेवाले अुन लाखों लोगोंके सामने चरखेका दूसरा कोओी पहलू आप रख ही नहीं सकते। अुसका अुन लोगों पर कोओी असर नहीं होगा। लेकिन आप अुनके पास खाना लेकर जाअिये और वे आपको अपना औश्वर समझेंगे। दूसरा कोओी विचार करनेमें वे असमर्थ हैं।

यं. अिं., ५–५–'२७

सितम्बर ४

अपने अिसी हाथसे मैंने अुन लोगोंसे वे जंग चढ़े मटमैले पैसे अिकट्ठे किये हैं, जो अुनके फटे चीथड़ोंमें कसकर बंधे हुअे थे। आपका अुनके सामने आधुनिक प्रगतिकी बात करना बेकार है। अुनके सामने व्यर्थ ही अीश्वरका नाम लेकर आप अुनका अपमान न करें। अगर आप और मैं अुनसे अीश्वरके विषयमें बात करेंगे तो वे हमें राक्षस कहेंगे। अगर वे किसी अीश्वरको जानते हों तो अुसकी कल्पना अुनके मनमें भयंकर और बदला लेनेवाले अीश्वरके रूपमें और निर्दय अत्याचारी अीश्वरके रूपमें ही है।

यं. अि., १५–९–'२७

सितम्बर ५

मैं आजके कृत्रिम भोग-विलास-प्रधान जीवनके खिलाफ प्रचार करता हूं और पुरुषों तथा स्त्रियोंसे पीछे लौटकर सादा जीवन अपनानेको कहता हूं, चरखा जिसका छोटे रूपमें प्रतिनिधित्व करता है। अैसा मैं अिसलिअे करता हूं कि मैं जानता हूं कि समझ-बूझकर सादगीकी ओर लौटे बिना हम अुस स्थितिको पहुंचनेसे बच नहीं सकते, जो पशुताकी स्थितिसे भी नीची है।

यं. अि., २१–७–'२१

सितम्बर ६

पश्चिमसे आपके पास जो तड़क-भड़क आती है अुससे आप चौंधिया न जायं। अिस क्षणिक दिखावेके मोहमें फंसकर आप अपने मूल आधारको न छोड़ें, जिस पर आप खड़े हैं। वुद्ध भगवानने कभी न भुलाये जाने लायक शब्दोंमें आपसे कहा है कि यह अल्प मानव-जीवन अनित्य छायाके सिवा, क्षणभरमें अुड़ जानेवाली वस्तुके सिवा और कुछ नहीं है। और अगर आप अपनी आंखोंके सामने दिखाअी देनेवाली हर वस्तुकी अनित्यता और शून्यताको समझ लें, हमारी आंखोंके सामने सतत वदलते रहनेवाले अिस पार्थिव शरीरकी क्षणभंगुरताको पहचान लें, तो अूपर स्वर्गमें आपके लिअे सुख और शान्तिका भंडार भरा रहेगा और यहां अिस जगतमें आपको अैसी शान्ति मिलेगी जो हमारी समझसे परे है और अैसा सुख प्राप्त होगा जिससे हम विलकुल अपरिचित हैं। यह तभी होगा जब आपमें आश्चर्यजनक श्रद्धा, दिव्य श्रद्धा होगी और आप सारी दृश्य वस्तुओंका त्याग कर देंगे।

यं. अि., ८–१२–'२७

सितम्बर ७

वुद्धने क्या किया? अीसाने क्या किया? और मुहम्मदने भी क्या किया? अुनके जीवन आत्म-वलिदान और त्यागके जीवन थे। वुद्धने संसारके सारे सुखोंका त्याग कर दिया, क्योंकि वे अपने अुस सुखमें सारे जगतको साझीदार वनाना चाहते थे, जो सत्यकी शोधके लिअे त्याग करनेवाले और कष्ट भोगनेवाले मनुष्यों द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था।

यं. अि., ८–१२–'२७

सितम्बर ८

अगर गौरीशंकर पर्वतकी अूंचाअी नापने और अुसके शिखर पर चढ़ कर कुछ सामान्य निरीक्षण करनेके लिअे बहुमूल्य जीवनोंका बलिदान देना अच्छी बात हो, अगर पृथ्वीके दूरसे दूरके छोरों पर — अुत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर — झंडा रोपनेके लिअे अनेक मनुष्योंका प्राणोत्सर्ग करना भव्य वस्तु हो, तो अत्यन्त शक्तिशाली और अनश्वर अमर सत्यकी शोधके लिअे अेक मनुष्यका नहीं, लाखों मनुष्योंका नहीं, परन्तु करोड़ों मनुष्योंका जीवन अुत्सर्ग करना भी कितना अधिक भव्य होगा?

यं. अिं., ८–१२–’२७

सितम्बर ९

अैसा समय आ रहा है जब वे लोग, जो आज पागलोंकी तरह अपनी जरूरतें बढ़ानेकी तेज दौड़में लगे हुअे हैं और अहंकारसे यह सोचते हैं कि अैसा करके वे दुनियाकी सच्ची सम्पत्तिको बढ़ाते हैं, दुनियाके सच्चे ज्ञानमें वृद्धि करते हैं, अपने क़दम पीछे लौटायेंगे और कहेंगे: “हमने क्या किया है?”

यं. अिं., ८–१२–’२७

सितम्बर १०

सभ्यतायें आयी हैं और चली गयी हैं; और हमारी सारी अहंकारपूर्ण प्रगतिके बावजूद मेरा बार बार यह पूछनेका मन होता है कि "अिस सारी प्रगतिका अुद्देश्य क्या है?" डार्विनके समकालीन वॉलेसने भी यही बात कही है। अुन्होंने कहा है कि पिछले पचास वर्षोंके भव्य आविष्कारों और शोधोंने मानव-जातिकी नैतिक अूंचाअीमें अेक अिंचकी भी वृद्धि नहीं की है। अैसा ही टॉल्स्टायने भी कहा है, जिन्हें आप चाहें तो स्वप्नद्रष्टा और कल्पना-जगतमें विहार करनेवाला कह सकते हैं। और यही बात अपने अपने समयमें अीसाने, बुद्धने और मुहम्मदने भी कही थी — जिनके धर्मसे आज मेरे ही देशमें अिनकार किया जा रहा है और जिसे मेरे ही देशमें झुठलाया जा रहा है।

यं. अिं., ८–१२–'२७

सितम्बर ११

गिरि-प्रवचनमें दिये गये अीसाके अुपदेशामृतका आप लोग जी भर कर पान कीजिये। लेकिन तब आपको अपने पापोंके लिअे पश्चात्तापका तथा त्याग और तपस्याका जीवन अपनाना होगा। गिरि-प्रवचनका अुपदेश हममें से हरअेकके लिअे है। आप अीश्वरकी और धनकी सेवा साथ साथ नहीं कर सकते। अीश्वर करुणा, दया और सहिष्णुताका अवतार है। वह धनको अपनी 'चार दिनकी चांदनी' मनाने देता है। लेकिन मैं आपसे कहता हूं: 'आप धनके स्वयं अपना नाश करनेवाले और दूसरोंका नाश करनेवाले आडम्बर और दिखावेसे दूर भागिये।'

यं. अिं., ८–१२–'२७

सितम्बर १२

भारतका भविष्य पश्चिमके हिंसक मार्ग पर निर्भर नहीं करता, जिस पर चल कर पश्चिम स्वयं थका हुआ दिखाओी देता है; भारतका भविष्य अैसे शांतिके मार्ग पर निर्भर करता है, जो सादे और पवित्र ओीश्वर-परायण जीवनका परिणाम है। आज भारतके सामने अपनी आत्माको खोनेका खतरा पैदा हो गया है। वह अपनी आत्माको खोकर जिन्दा नहीं रह सकता। अिसलिअे अुसे निष्क्रिय और लाचार बनकर यह नहीं कहना चाहिये : "मैं पश्चिमके आक्रमणसे बच नहीं सकता।" अुसे स्वयं अपने खातिर और सारी दुनियाके खातिर अिस आक्रमणका सामना करनेकी पर्याप्त शक्ति अपनेमें पैदा करनी चाहिये।

यं. अि., ७–१०–'२६

सितम्बर १३

मेरा यह विश्वास जरूर है कि भारत कष्ट-सहनकी आगमें से पार होनेके लिअे तथा अपनी सभ्यता पर — जो निःसन्देह अपूर्ण होते हुअे भी कालके विनाशकारी प्रभावके सामने आज तक टिकी रही है — होनेवाले किसी भी अनुचित आक्रमणका विरोध करनेके लिअे यदि पर्याप्त धीरज रखे, तो वह संसारकी शांति और ठोस प्रगतिमें स्थायी मदद कर सकता है।

यं. अि., ११–८–'२७

सितम्बर १४

मुझे लगता है कि भारतका मिशन — जीवनकार्य — दूसरे देशोंसे भिन्न है। भारतमें दुनिया पर धार्मिक प्रभुता भोगनेकी क्षमता है। अिस देशने स्वेच्छासे आत्मशुद्धिके लिअे जो प्रयत्न किया है, अुसकी मिसाल संसारमें और कहीं नहीं मिलती।

स्पी. रा. म., पृ. ४०५

सितम्बर १५

भारत भोगभूमि नहीं है; वह तो मूलतः कर्मभूमि है।

यं. अिं., ५–२–'२५

सितम्बर १६

भारतने किसी भी देशके खिलाफ कभी युद्ध नहीं छेड़ा। कभी कभी अुसने शुद्ध आत्मरक्षाके लिअे कुसंगठित या अर्ध-संगठित विरोध जरूर किया है। अिसलिअे अुसे शांतिकी अभिलाषाका विकास नहीं करना है। यह अभिलाषा अुसके पास विपुल मात्रामें है, भले वह अिस बातको जानता हो या न जानता हो।

यं. अिं., ४–७–'२९

सितम्बर १७

मैं चाहता हूं कि भारत अिस बातको समझ ले कि अुसके पास अेक अैसी आत्मा है, जिसका नाश नहीं हो सकता, जो हर प्रकारकी शारीरिक कमजोरी पर विजय प्राप्त कर सकती है तथा जो सारे संसारके भौतिक संगठनका विरोध कर सकती है।

यं. अिं., ११–८–'२०

सितम्बर १८

मैं पूरी नम्रतासे यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि अगर भारत सत्य और अहिंसाके जरिये अपना लक्ष्य सिद्ध कर ले, तो वह विश्व-शांतिकी स्थापनामें बहुत बड़ी सहायता करेगा, जिसके लिअे आज दुनियाके सारे राष्ट्र तरस रहे हैं। अुस स्थितिमें भारत अुस सहायताका थोड़ा बदला भी चुका सकेगा, जो दुनियाके राष्ट्र स्वेच्छासे अुसे देते रहे हैं।

यं. अिं., १२–३–'३१

सितम्बर १९

भारतकी स्वतंत्रता संसारके शांति और युद्धसे सम्बन्धित दृष्टिकोणमें जड़मूलसे परिवर्तन कर देगी। अुसकी निर्बलताका सारी मानव-जाति पर बुरा असर पड़ता है।

यं. अि., १७–९–'२५

सितम्बर २०

हमारी राष्ट्रीयता दुनियाके दूसरे राष्ट्रोंके लिअे खतरा नहीं बन सकती; क्योंकि जिस तरह हम किसी राष्ट्रको अपना शोषण नहीं करने देंगे, अुसी तरह हम दूसरे किसी राष्ट्रका शोषण भी नहीं करेंगे। अपने स्वराज्यके जरिये हम सारी दुनियाकी सेवा करेंगे।

यं. अि., १६–४–'३१

सितम्बर २१

अगर हथियारोंके लिअे आजकी पागलपनभरी दौड़ — स्पर्धा — जारी रही, तो निश्चित रूपसे अुसका परिणाम अैसे मानव-संहारमें आयेगा जैसा संसारके अितिहासमें पहले कभी नहीं हुआ। अगर कोअी विजेता बचा रहा तो जिस राष्ट्रकी विजय होगी, अुसके लिअे वह विजय ही जीवित मृत्यु जैसी बन जायगी।

ह., १२–११–'३८

सितम्बर २२

सर्वनाशका जो खतरा दुनियाके सिर पर झूल रहा है, अुससे बचनेका अिसके सिवा दूसरा कोअी मार्ग नहीं है कि अहिंसाकी पद्धतिको, अुसमें समाये हुअे सारे भव्य अर्थोंके साथ, साहसपूर्वक और बिना किसी शर्तके स्वीकार कर लिया जाय।

ह., १२–११–'३८

सितम्बर २३

अगर दुनियामें लोभ नहीं होता तो हथियारोंके लिअे कोअी गुंजाअिश ही नहीं रह जाती। अहिंसाके सिद्धान्तका यह तकाजा है कि हम किसी भी प्रकारके शोषणसे पूरी तरह दूर रहें।

ह., १२–११–'३८

सितम्बर २४

शोषणकी भावना मिटते ही हथियारोंका विशाल संग्रह निश्चित रूपसे असह्य बोझ मालूम होने लगेगा। हथियारोंका सच्चा त्याग तब तक संभव नहीं हो सकता, जब तक दुनियाके राष्ट्र अेक-दूसरेका शोषण बन्द नहीं करते।

ह. १२–११–'३८

सितम्बर २५

दुनियाके अधिक सयाने और समझदार लोग आज अैसे पूर्ण स्वतंत्र राज्योंकी स्थापना नहीं चाहते जो अेक-दूसरेसे लड़ते हैं, बल्कि अैसे परस्परावलम्बी राज्योंका संघ स्थापित करना चाहते हैं जो अेक-दूसरेके मित्र हों।

यं. अिं., २६–१२–'२४

सितम्बर २६

स्वावलम्वन और आत्म-निर्भरताकी तरह परस्परावलम्वन भी मनुष्यका आदर्श है और होना चाहिये। मनुष्य अेक सामाजिक प्राणी है। समाजके साथ आन्तर-सम्वन्ध स्थापित किये विना वह सारे विश्वके साथ अेकरूपता अनुभव नहीं कर सकता या अपने अहंकारको दवा नहीं सकता।

यं. अिं., २१–३–'२९

सितम्बर २७

मनुष्यका सामाजिक परस्परावलम्वन अुसे अपनी श्रद्धाकी परीक्षा करने तथा यथार्थताकी कसौटी पर खरा सिद्ध होनेकी क्षमता प्रदान करता है। अगर मनुष्य अैसी स्थितिमें रखा गया होता अथवा अपनेको अैसी स्थितिमें रख सका होता कि अुसे अपने मानव-वन्धुओं पर जरा भी निर्भर न रहना पड़ता, तो वह अितना अभिमानी और अितना मदोन्मत्त हो जाता कि दुनियाके लिअे सच्चे अर्थमें वह अेक भार और आफत वन जाता।

यं. अिं., २१–३–'२९

सितम्बर २८

समाज पर मनुष्यकी निर्भरता अुसे नम्रताका पाठ सिखाती है। यह तो स्पष्ट है कि मनुष्यको अपनी अधिकतर वुनियादी जरूरतें स्वयं ही पूरी करने योग्य वनना चाहिये; लेकिन यह भी मेरे मनमें अुतना ही स्पष्ट है कि जब स्वावलंवनकी वृत्तिको समाजसे विलकुल ही अलग हो जानेकी हद तक ले जाया जाता है, तव वह लगभग पापका रूप ले लेती है।

यं. अिं., २१–३–'२९

सितम्बर २९

मनुष्य जब तक राष्ट्रवादी नहीं होता तब तक अुसके लिअे आन्तर-राष्ट्रवादी बनना असम्भव है। आन्तर-राष्ट्रवाद तभी संभव होता है जब राष्ट्रवाद अेक सत्य वस्तु बन जाता है — अर्थात् जब अलग अलग देशोंके लोग अपनेको संगठित कर लेते हैं और अेक मनुष्यकी तरह कार्य करनेकी योग्यता अपनेमें पैदा कर लेते हैं।

यं. अिं., १८–६–'२५

सितम्बर ३०

राष्ट्रवाद बुरी वस्तु नहीं है; बुरी वस्तु है मनकी संकुचितता, स्वार्थ और बहिष्कारकी वृत्ति — जो आधुनिक राष्ट्रोंका अभिशाप है। आज प्रत्येक राष्ट्र दूसरेको नुकसान पहुंचा कर लाभ अुठाना चाहता है और दूसरेका नाश करके अूपर अुठना चाहता है।

यं. अिं., १८–६–'२५

अक्तूबर १

अगर हम स्त्री और पुरुषके संबंधों पर स्वस्थ और शुद्ध दृष्टिसे विचार करें और भावी पीढ़ियोंके नैतिक कल्याणके लिअे अपनेको ट्रस्टी मानें, तो आजकी मुसीबतोंके अेक बड़े भागसे हम बच सकते हैं।

यं. अिं., २७–९–'२८

अक्तूबर २

मनुष्य और पशुमें मुख्य भेद यह है कि मनुष्य स्वयं विवेक करने योग्य आयुको प्राप्त होता है, तभीसे सतत आत्म-संयमका जीवन बिताना शुरू करता है। अीश्वरने मनुष्यको अैसी क्षमता दी है, जिससे वह अपनी बहन, अपनी मां, अपनी लड़की और अपनी पत्नीके बीच भेद कर सकता है।

वि. गां. सि., पृ. ८४

अक्तूबर ३

मानव-समाज आध्यात्मिकताकी दिशामें निरंतर विकास साधनेवाला समाज है। यदि अैसा हो तो शरीर या अिन्द्रियोंकी मांगोंके दिनोंदिन बढ़नेवाले नियंत्रण पर असका आधार होना चाहिये। अिस प्रकार विवाहको अेक धार्मिक संस्कार मानना चाहिये, जो पति-पत्नी पर अनुशासनका अंकुश लगाता है और यह मर्यादा बांधता है कि वे केवल अपने बीच ही संभोग कर सकते हैं, केवल संतान पैदा करनेके लिअे ही संभोग कर सकते हैं और वह भी अुसी हालतमें जब दोनों वैसी अिच्छा रखते हों और संतान पैदा करनेके लिअे तैयार हों।

यं. अिं., १६–९–'२६

अक्तूबर ४

काम-वासना, कामका आवेग, अेक सुन्दर और अुदात्त वस्तु है। अुसमें शरमाने जैसी कोअी बात नहीं है। लेकिन अुसका अुद्देश्य केवल संतानोत्पत्ति ही है। अुसका दूसरा कोअी अुपयोग अीश्वरके खिलाफ और मानव-जातिके खिलाफ पाप है।

ह., २८–३–'३६

अक्तूबर ५

शुद्ध त्याग, शुद्ध ब्रह्मचर्य, अेक आदर्श स्थिति है। अगर आपमें अुसका विचार करनेकी हिम्मत नहीं है, तो आप खुशीसे विवाह कर लीजिये। लेकिन विवाह करने पर भी आत्म-संयमका जीवन बिताअिये।

ह., ७–९–'३५

अक्तूबर ६

विवाह जीवनकी स्वाभाविक वस्तु है और अुसे किसी भी अर्थमें पतनकारी या निन्दनीय समझना बिलकुल गलत है। . . . आदर्श यह है कि विवाहको धार्मिक संस्कार माना जाय, और अिसलिअे विवाहित स्थितिमें आत्म-संयमका जीवन बिताया जाय।

ह., २२–३–'४२

अक्तूबर ७

ब्रह्मचर्य केवल यांत्रिक व्रत नहीं है; अुसका अर्थ है सारी अिन्द्रियोंका पूर्ण संयम तथा विचार, वाणी और कार्यमें विषय-वासनासे मुक्ति। यह मार्ग आत्म-साक्षात्कार अथवा ब्रह्मकी प्राप्तिका राजमार्ग है।

यं. अिं., २९–४–'२६

अक्तूबर ८

विवाहका हेतु पति-पत्नीके हृदयोंसे गन्दे काम-विकारको मिटाकर अुन्हें शुद्ध बनाना और दोनोंको अीश्वरके अधिक समीप ले जाना है। पति और पत्नीके बीच काम-विकार-रहित प्रेमका होना असंभव नहीं है। मनुष्य पशु नहीं है। पशुसृष्टिमें असंख्य जन्म लेनेके बाद अुसने अधिक अूंची स्थिति प्राप्त की है। वह सीधा खड़ा होनेके लिअे पैदा किया गया है, न कि पशुकी तरह चारों पांवसे चलने या कीड़ोंकी तरह रेंगनेके लिअे। मनुष्यतासे पशुता अुतनी ही दूर है, जितनी आत्मासे जड़ प्रकृति दूर है।

यं. अिं., २९–४–'२६

अक्तूबर ९

पत्नी पतिकी दासी नहीं है, परन्तु अुसकी सहचारिणी और सहधर्मिणी है; दोनों अेक-दूसरेके सुख-दुःखमें समान भाग लेनेवाले हैं और जितनी स्वतंत्रता भला-बुरा काम करनेकी पतिको है अुतनी ही पत्नीको भी है।

आ. क., पृ. २३

अक्तूबर १०

आप अपनी पत्नीके सम्मानकी रक्षा करेंगे और अुसके स्वामी नहीं किन्तु सच्चे मित्र बनेंगे। आप अुसके शरीर और आत्माको अुतना ही पवित्र समझेंगे जितना पवित्र, मेरा विश्वास है, वह आपके शरीर और आत्माको समझेगी। अिस अुद्देश्यको सिद्ध करनेके लिअे आपको प्रार्थनामय परिश्रमका, सादगीका और आत्म-संयमका जीवन बिताना होगा। आपमें से कोअी दूसरेको काम-वासनाकी तृप्तिका साधन न समझे।

यं. अिं., २–२–'२८

अक्तूबर ११

जिस प्रकार पुरुष और स्त्री बुनियादी तौर पर अेक हैं, अुसी प्रकार अुनकी समस्या भी मूलमें अेक ही होनी चाहिये। दोनोंके भीतर वही आत्मा है। दोनों अेक ही प्रकारका जीवन बिताते हैं। दोनोंकी भावनायें भी अेकसी ही हैं। दोनों अेक-दूसरेके पूरक हैं। दोनों अेक-दूसरेकी सक्रिय सहायताके विना जी ही नहीं सकते।

ह., २४–२–'४०

अक्तूबर १२

परन्तु किसी न किसी प्रकार पुरुषने स्त्री पर अपनी सत्ता युगोंसे जमा रखी है। अिसलिअे स्त्रीमें हीनताका भाव विकसित हो गया है। अुसने पुरुषकी अिस स्वार्थपूर्ण शिक्षाकी सत्यतामें विश्वास कर लिया है कि स्त्री पुरुषसे हीन है, घटिया है। लेकिन मनुष्योंमें जो लोग द्रष्टा थे, दीर्घदृष्टि रखनेवाले थे, अुन्होंने स्त्रीके दरजेको पुरुषके समान ही माना है।

ह., २४–२–'४०

अक्तूबर १३

परन्तु अिसमें कोअी शक नहीं कि किसी अेक बिन्दु पर पहुंचकर स्त्री-पुरुष दोनोंके कामका बंटवारा हो जाता है। दोनों मूलतः अेक ही हैं, परन्तु यह भी अुतना ही सच है कि दोनोंकी रचनामें महत्त्वपूर्ण भेद है। अिसलिअे दोनोंके कार्य, दोनोंके धंधे, भी अलग अलग होने चाहिये। माताका कर्तव्य पालनेके लिअे, जिसका स्त्रियोंकी विशाल संख्या सदा ही पालन करेगी, स्त्रीमें जिन गुणोंका होना जरूरी है; वे गुण पुरुषमें हों यह जरूरी नहीं है। स्त्री स्वभावसे स्थितिशील है; पुरुष गतिशील है। स्त्री मुख्यतः घरकी स्वामिनी है। पुरुष रोटी कमानेवाला है। स्त्री रोटीको संभाल कर रखनेवाली और अुसका बंटवारा करनेवाली है। वह हर अर्थमें घरकी, परिवारकी, संरक्षिका है।

ह., २४–२–'४०

अक्तूबर १४

स्त्री पुरुषकी जीवन-संगिनी है; अुसमें वैसी ही मानसिक शक्तियां हैं जैसी पुरुषमें हैं। अुसे पुरुषकी प्रवृत्तियोंसे सम्बन्ध रखनेवाली सूक्ष्मसे सूक्ष्म बातमें भी भाग लेनेका अधिकार है और पुरुषके साथ स्वाधीनता तथा स्वतंत्रताके अुपभोगका समान अधिकार है।

स्पी. रा. म., पृ. ४२५

अक्तूबर १५

मेरे विचारसे मनुष्यने जिन जिन बुराअियोंके लिअे अपनेको जिम्मेदार बनाया है, अुन सबमें अेक भी अितनी नीचे गिरानेवाली, मनको आघात पहुंचानेवाली और निर्दयतापूर्ण नहीं है जितना मानव-जातिके श्रेष्ठ अर्द्धांगका — स्त्रीजातिका, अबला जातिका नहीं — अुसके द्वारा होनेवाला दुरुपयोग है। स्त्रीजाति पुरुष-जातिसे अधिक अुदात्त और अधिक अूंची है। क्योंकि वह आज भी त्यागकी, मूक कष्ट-सहनकी, नम्रताकी, श्रद्धाकी और ज्ञानकी जीवित मूर्ति है।

यं. अिं., १५–९–'२१

अक्तूबर १६

मेरा मत है कि स्त्री आत्म-बलिदानकी मूर्ति है। लेकिन दुर्भाग्यसे आज वह अपने अिस जबरदस्त लाभको नहीं समझती, जो पुरुषको प्राप्त नहीं है। जैसा कि टॉल्स्टॉय कहा करते थे, स्त्रियां पुरुषके जादुअी प्रभावका शिकार बनी हुअी हैं। अगर वे अहिंसाकी शक्तिको पहचान लें तो वे अबला कहलाना स्वीकार नहीं करेंगी।

यं. अिं., १४–१–'३२

अक्तूबर १७

पुरुषने स्त्रीको अपनी कठपुतली मान लिया है। स्त्रीने अुसकी कठपुतली बनना सीख लिया है, और अन्तमें अनुभवसे यह पाया है कि अैसा बननेमें ही सुविधा और आराम है। क्योंकि जब अेक व्यक्ति अपने पतनमें दूसरेको खींचता है, तो नीचे गिरना ज्यादा आसान हो जाता है।

ह., २५–१–'३६

अक्तूबर १८

स्त्रीको चाहिये कि वह अपनेको पुरुषके काम-विकारकी तृप्तिका साधन मानना बन्द कर दे। अिसका अुपाय पुरुषसे अधिक स्त्रीके हाथमें है। अुसे पुरुषोंके लिअे, यहां तक कि अपने पतिके लिअे भी, सजने-धजनेसे अिनकार कर देना चाहिये, अगर वह समानताके आधार पर पुरुषकी जीवन-संगिनी बनना चाहती है। मैं अिसकी कल्पना नहीं कर सकता कि सीताने कभी अपने शारीरिक सौंदर्यसे रामको प्रसन्न करनेमें अेक क्षणका भी समय बिगाड़ा होगा।

यं. अिं., २१–७–'२१

अक्तूबर १९

स्त्रियां जीवनमें जो कुछ पवित्र और धार्मिक है अुसकी विशेष संरक्षिकायें हैं। स्वभावसे रक्षणशील होनेके कारण जिस प्रकार वे अन्ध-विश्वासपूर्ण आदतोंको धीरे धीरे छोड़ती हैं, अुसी प्रकार जीवनमें जो कुछ पवित्र और अुदात्त है अुसे भी वे जल्दी नहीं छोड़तीं।

ह., २५–३–'३३

अक्तूबर २०

स्त्री अहिंसाका अवतार है। अहिंसाका अर्थ है असीम और अनंत प्रेम; दूसरे शब्दोंमें अिसका अर्थ है कष्ट सहनेकी अपार क्षमता। स्त्रीके सिवा, जो पुरुषकी माता है, यह क्षमता अधिकसे अधिक मात्रामें कौन दिखाता है? शिशुको नौ महीने तक अपने गर्भमें रखने तथा अुसका पोषण करनेमें वह अपनी यह क्षमता प्रकट करती है और अिसके लिअे अुसे जो कष्ट भोगने पड़ते हैं अुसमें आनन्द मानती है। प्रसवकी जो पीड़ा वह भोगती है अुससे अधिक बड़ी पीड़ा दूसरी क्या हो सकती है? लेकिन शिशुजन्मके आनन्दमें वह अिस पीड़ाको भूल जाती है। फिर, अुसके बालकको पाल-पोसकर दिन-दिन बड़ा करनेके लिअे प्रतिदिन कौन कष्ट अुठाता है? अपने अिस प्रेमका दायरा अुसे सारी मानव-जाति तक फैलाना चाहिये; अुसे यह भूल जाना चाहिये कि वह पुरुषकी काम-वासनाकी पूर्तिका साधन थी या हो सकती है। तब वह पुरुषकी माता, पुरुषकी निर्मात्री और पुरुषकी मूक मार्गदर्शिकाके रूपमें पुरुषके साथ अपना गौरवपूर्ण पद प्राप्त करेगी। शांतिके अमृतकी प्यासी युद्धरत दुनियाको शांतिकी कला सिखानेकी क्षमता भगवानने अुसीको प्रदान की है।

ह., २४–२–'४०

अक्तूबर २१

पुरुषके लिअे स्त्री-जन्म पानेकी कामना करनेके पीछे जितना कारण है, अुतना ही स्त्रीके लिअे पुरुष-जन्मकी कामना करनेके पीछे भी है। लेकिन यह कामना व्यर्थ है। हम जिस स्थितिमें पैदा हुअे हों अुसीमें सुख मानें और प्रकृतिने हमारा जो धर्म नियत कर दिया है अुसीका पालन करें।

ह., २४–२–'४०

अक्तूबर २२

शीलकी पवित्रता बाहरी प्रयत्नोंसे पनपनेवाली चीज नहीं है। अुसकी रक्षा आसपास घिरी हुअी परदेकी दीवालसे नहीं की जा सकती। यह पवित्रता भीतरसे पैदा होनी चाहिये; और अुसका तभी कोअी मूल्य हो सकता है जब वह अनखोजे प्रलोभनका विरोध करनेकी शक्ति रखती हो।

यं. अिं., ३–१२–'२७

अक्तूबर २३

लेकिन स्त्रीकी पवित्रताके बारेमें दूषित मनोवृत्तिका परिचय देनेवाली यह सारी चिन्ता किसलिअे है? क्या पुरुषकी पवित्रताके विषयमें स्त्रियोंको कुछ कहनेका मौका मिलता है? पुरुषकी पवित्रताके बारेमें स्त्रियोंकी चिन्ताकी बात हम कभी नहीं सुनते। पुरुषोंको स्त्रीकी पवित्रताके नियमनका अधिकार अपने हाथमें क्यों लेना चाहिये? वह पवित्रता बाहरसे नहीं लादी जा सकती। वह अैसी वस्तु है जिसका विकास भीतरसे होता है और जिसके लिअे व्यक्तिको स्वयं ही प्रयत्न करना होता है।

यं. अिं., २५–११–'२६

अक्तूबर २४

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि जो निडर स्त्री यह जानती है कि अुसकी पवित्रता अुसकी मजबूतसे मजबूत ढाल है, अुसकी आबरू कभी लूटी नहीं जा सकती। पुरुष कितना भी लम्पट क्यों न हो, स्त्रीकी अुज्ज्वल पवित्रताकी ज्योतिके सामने वह शरमसे अवश्य झुक जायगा।

ह., १–३–'४२

अक्तूबर २५

स्त्रीकी रक्षा करना पुरुषका विशेषाधिकार होना चाहिये। परन्तु पुरुषकी अनुपस्थितिमें या पुरुषके स्त्री-रक्षाका पवित्र कर्तव्य न पालने पर भारतकी किसी भी स्त्रीको असहाय महसूस नहीं करना चाहिये। जो स्त्री या पुरुष मरनेकी कला जानता है, अुसे अपने सम्मानको किसी भी प्रकारकी हानि पहुंचनेका डर कभी नहीं रखना चाहिये।

यं. अिं., १५–१२–'२१

अक्तूबर २६

मनुष्यको दोमें से कोअी अेक मार्ग चुन लेना चाहिये — अेक मार्ग अूपर अुठानेवाला है और दूसरा नीचे गिरानेवाला। परन्तु चूंकि अुसके भीतर पशुका वास है, वह अूपर अुठानेवाले मार्गके बजाय नीचे गिरानेवाला मार्ग ज्यादा आसानीसे चुनेगा — खास तौर पर अुस स्थितिमें जब नीचे गिरानेवाला मार्ग सुन्दर और आकर्षक रूपमें अुसके सामने पेश किया जाय। जब पापको सद्‌गुणका बाना पहनाकर मनुष्यके सामने प्रस्तुत किया जाता है, तब वह आसानीसे पापके सामने झुक जाता है।

ह., २१–१–'३५

अक्तूबर २७

अपने कर्मोंके परिणामोंसे बचनेका प्रयत्न करना गलत और अनैतिक बात है। जो आदमी जरूरतसे ज्यादा खाता है, अुसके लिअे यह अच्छा है कि अुसके पेटमें दर्द हो और अुसे अुपवास करना पड़े। जरूरतसे ज्यादा खाना और फिर शक्तिवर्धक या दूसरी दवाअी लेकर अधिक खानेके परिणामोंसे बचना बुरी बात है। यह और भी ज्यादा बुरा है कि कोअी व्यक्ति मनमाना विषय-भोग करे और बादमें अपने अिस कामके परिणामोंसे बचे।

यं. अिं., १२–३–'२५

अक्तूबर २८

कुदरत बड़ी कठोर है और अपने कानूनोंके अैसे किसी भंगके लिअे वह पूरा बदला लेगी। नैतिक परिणाम केवल नैतिक नियंत्रणोंसे ही अुत्पन्न किये जा सकते हैं। दूसरे सारे नियंत्रण अुस हेतुको ही खतम कर देते हैं, जिसके लिअे वे लगाये जाते हैं।

यं. अिं., १२–३–'२५

अक्तूबर २९

जगत अपने अस्तित्वके लिअे प्रजननकी क्रिया पर निर्भर करता है। यह संसार अीश्वरकी लीलाका स्थान है, अुसकी महिमाका प्रतिबिम्ब है। संसारकी सुव्यवस्थित वृद्धिके लिअे ही रतिक्रियाका निर्माण हुआ है, अैसा समझनेवाला व्यक्ति बड़ेसे बड़ा प्रयत्न करके भी विषय-वासनाको रोकेगा।

आ. क., पृ. १८६

अक्तूबर ३०

काम-वासनाकी विजय किसी पुरुष या स्त्रीके जीवनका सबसे ऊंचा पुरुषार्थ है। काम-वासना पर विजय प्राप्त किये बिना मनुष्य अपने पर शासन करनेकी आशा नहीं रख सकता। . . . और आत्म-शासनके बिना स्वराज्य या रामराज्यकी स्थापना नहीं हो सकती। आत्म-शासनके अभावमें सारे जगतका शासन भी रंगे हुअे नकली आमकी तरह धोखेमें डालनेवाला और निराशा पैदा करनेवाला ही सिद्ध होगा; नकली आम बाहरसे देखनेमें तो आकर्षक मालूम होता है, लेकिन अन्दरसे खोखला और खाली होता है।

ह., २१–११–'३६

अक्तूबर ३१

विवाह जिस आदर्श तक पहुंचानेका लक्ष्य सामने रखता है, वह है शरीरोंके संयोग द्वारा आत्माका संयोग साधना। विवाह जिस मानव प्रेमको मूर्तरूप प्रदान करता है, अुसे दिव्य प्रेम अथवा विश्वप्रेमकी दिशामें आगे बढ़नेकी सीढ़ी बन जाना चाहिये।

यं. अिं., २१–५–'३१

नवम्बर १

मनुष्यका यह कर्तव्य नहीं है कि वह अपनी सारी मानसिक शक्तियोंका पूर्णता तक विकास करे। अुसका कर्तव्य यह है कि ओीश्वरकी दिशामें ले जानेवाली अपनी सारी शक्तियोंका वह पूर्णता तक विकास करे और जो शक्तियां अुसे ओीश्वर-विमुख बनायें अुनका पूरी तरह दमन करे।

यं. अिं., २४–६–'२६

नवम्बर २

मनुष्य न तो केवल बुद्धि है, न केवल स्थूल शरीर है और न केवल हृदय अथवा आत्मा है। सम्पूर्ण मानवके निर्माणके लिअे अिन तीनोंका यथायोग्य और सुन्दर समन्वय होना आवश्यक है; अिसीमें शिक्षाका सच्चा अर्थशास्त्र समाया हुआ है।

ह., ११–९–'३७

नवम्बर ३

मेरा यह मत है कि बुद्धिका सच्चा शिक्षण, सच्चा विकास, तभी हो सकता है जब शरीरके अवयवोंको — यानी हाथ, पैर, आंख, कान, नाक आदिको — सही ढंगकी कसरत और तालीम मिले। दूसरे शब्दोंमें, बालकके हाथ-पैर, आंख, कान आदिका ज्ञानपूर्वक अुपयोग किया जाय, तो अुसकी बुद्धिका अुत्तम और अतिशीघ्र विकास होता है।

ह., ८–३–'३७

नवम्बर ४

लेकिन जब तक मन और शरीरका विकास साथ साथ नहीं होता और अुसीके साथ आत्माका भी विकास और जागृति नहीं होती, तब तक केवल बुद्धिका विकास अेकतरफा और अधूरा सिद्ध होगा। आध्यात्मिक शिक्षासे मेरा मतलब है हृदयकी शिक्षा। अिसलिअे बुद्धिका अुचित और सर्वांगीण विकास केवल अुसी स्थितिमें हो सकता है, जब वह बालककी शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियोंके विकासके साथ आगे बढ़े। तीनों शक्तियोंका विकास अेक अखंड और अविभाज्य वस्तु है।

ह., १७–४–'३७

नवम्बर ५

शिक्षाकी मेरी योजनामें हाथ अक्षरोंकी आकृति खींचने या अक्षर लिखनेके पहले औजार चलायेगा। बालककी आंखें जैसे जीवनमें दूसरी चीजें देखेंगी, अुसी तरह वे अक्षरों और शब्दोंके चित्र देखेंगी और पढ़ेंगी; कान वस्तुओंके नाम और वाक्योंके अर्थ सुनेंगे और अुन्हें पकड़ेंगे। सारी तालीम स्वाभाविक और रसप्रद होगी और अिसलिअे दुनियामें सबसे सस्ती तथा अधिकसे अधिक तेज गतिवाली होगी।

ह., २८–८–'३७

नवम्बर ६

अक्षर-ज्ञानकी शिक्षा हाथकी शिक्षाके पीछे चलनी चाहिये। हाथ मनुष्यको प्राप्त हुअी अीश्वरकी अैसी देन है, जो स्पष्ट रूपमें अुसे पशुसे अलग करती है। यह सोचना निरा भ्रम है कि पढ़ने और लिखनेकी कलाके ज्ञानके अभावमें मानवका पूर्णतम विकास कभी हो ही नहीं सकता। बेशक वह ज्ञान जीवनकी शोभा बढ़ाता है, लेकिन वह मानवकी नैतिक, शारीरिक या भौतिक अुन्नतिके लिअे किसी भी तरह अनिवार्य नहीं है।

ह., ८–३–'३५

नवम्बर ७

शिक्षामें हाथ-अुद्योगको दाखिल करनेसे हमारे भारत जैसे गरीब देशमें दुहरा हेतु सिद्ध होगा। अुससे हमारे बालकोंकी शिक्षाका खर्च निकलेगा और अुन्हें अेक अैसा धन्धा सीखनेको मिलेगा, जिसका वे चाहें तो बादके जीवनमें अपने गुजारेके लिअे आधार ले सकते हैं। अैसी शिक्षा-पद्धति हमारे बालकोंको अवश्य ही स्वावलम्बी बनायेगी। हम शरीर-श्रमसे नफरत करना सीखेंगे, तो अुससे हमारे राष्ट्रका जितना नैतिक पतन होगा अुतना और किसी बातसे नहीं होगा।

यं. अि., १–९–'२६

नवम्बर ८

हमारे देशमें विदेशी शासनने जो अनेक बुराअियां पैदा की हैं, अुनमें देशके नौजवानों पर हानिकारक विदेशी माध्यम लादनेकी जो बुराअी है, अुसे अितिहास बड़ीसे बड़ी बुराअियोंमें से अेक मानेगा। अिस माध्यमने राष्ट्रकी शक्तिको चूस कर अुसे कमजोर बना दिया है; अिसने विद्यार्थियोंके जीवनोंको घटा दिया है। अिस माध्यमने विद्यार्थियोंको आम जनतासे अलग कर दिया है और शिक्षाको अकारण महंगा बना दिया है। अगर यह प्रक्रिया आगे भी चालू रहेगी तो अिस बातकी बहुत बड़ी संभावना है कि हमारा राष्ट्र अपनी आत्माको खो देगा।

यं. अि., ५–७–'२८

नवम्बर ९

अगर हमें अिस दुनियामें सच्ची शांति प्राप्त करनी है और अगर हमें युद्धके खिलाफ सच्चा युद्ध लड़ना है, तो हमें वालकोंसे अिसका आरम्भ करना होगा; और अगर वालक अपनी स्वाभाविक निर्दोषतामें वड़े होंगे तो हमें संघर्ष नहीं करना पड़ेगा; हमें निष्फल और निरर्थक प्रस्ताव पास नहीं करने पड़ेंगे। परन्तु हम प्रेमसे अधिक प्रेमकी ओर तथा शांतिसे अधिक शांतिकी ओर वढ़ेंगे — यहां तक कि अन्तमें दुनियाके चारों कोने अुस प्रेम और शांतिसे भर जायंगे, जिसके लिअे आज सारी दुनिया जाने या अनजाने तरस और तड़प रही है।

यं. अि., १९–११–'३१

नवम्बर १०

सच्ची शिक्षा वह है जो हमारे भीतरके अुत्तम तत्त्वोंको वाहर लाकर प्रकट करती है। मानवताकी पुस्तकसे बढ़कर दूसरी कौनसी पुस्तक हो सकती है?

ह., ३०–३–'३४

नवम्बर ११

राष्ट्र-निर्माणका कोअी कार्यक्रम राष्ट्रके किसी भी भागको अछूता नहीं रख सकता। विद्यार्थियोंको देशके लाखों मूक मानवों पर असर डालना होगा। अुन्हें प्रान्त, नगर, वर्ग या जातिकी दृष्टिसे नहीं, वल्कि अेक महाद्वीप और लाखों-करोड़ों लोगोंकी दृष्टिसे विचार करना सीखना होगा। अिनमें अछूत, शरावी, गुंडे और वेश्यायें भी शामिल हैं, हमारे वीच जिनके अस्तित्वके लिअे हममें से हरअेक व्यक्ति जिम्मेदार है।

यं. अि., ९–६–'२७

नवम्बर १२

प्राचीन कालमें हमारे विद्यार्थी ब्रह्मचारी — अर्थात् अीश्वरके मार्ग पर और अीश्वरसे डर कर चलनेवाले — कहे जाते थे। राजा-महाराजा और समाजके बड़े-बूढ़े अुनका सम्मान करते थे। राष्ट्र स्वेच्छासे अुनके पालन-पोषणकी जिम्मेदारी अपने सिर लेता था और वे लोग बदलेमें राष्ट्रको सौगुनी बलवती आत्माअें, सौगुने शक्तिशाली मस्तिष्क और सौगुनी बलवती भुजायें अर्पण करते थे।

यं. अिं., ९–६–'२७

नवम्बर १३

समग्र सच्ची कला आत्माकी अभिव्यक्ति है। बाहरी रूपोंका केवल अितना ही मूल्य है कि वे मनुष्यकी आन्तरिक भावनाको अभिव्यक्त करते हैं।

यं. अिं., १३–११–'२४

नवम्बर १४

जब मैं अूपर असंख्य चमकते तारोंसे भरे आकाशको देखता हूं, तब जो सुन्दर और भव्य कुदरती दृश्य मेरी आंखोंके सामने खुलते हैं, वैसे दृश्य मनुष्य द्वारा निर्माण की हुअी कौनसी कला मेरे सामने प्रस्तुत कर सकती है? परन्तु अिसका यह अर्थ नहीं कि मैं सामान्यतः अिस रूपमें मान्य की जानेवाली कलाकृतियोंके मूल्य और महत्त्वको स्वीकार नहीं करता; अिसका अर्थ अितना ही है कि ये कलाकृतियां व्यक्तिगत रूपमें मुझे प्राकृतिक सौन्दर्यके शाश्वत प्रतीकोंकी तुलनामें अत्यन्त अधूरी मालूम होती हैं। मनुष्यकी अिन कलाकृतियोंका अुसी हद तक मूल्य है जिस हद तक कि वे मनुष्यको आत्म-साक्षात्कारकी दिशामें आगे बढ़नेमें सहायता करती हैं।

यं. अिं., १३–११–'२४

नवम्बर १५

सच्चे कलाकारकी दृष्टिमें केवल वही चेहरा सुन्दर है जो, अपने बाहरी रूपसे बिलकुल अलग, आत्मामें बसे हुअे सत्यकी ज्योतिसे चमकता है। सत्यसे अलग कोअी सौन्दर्य नहीं है। दूसरी ओर, सत्य अैसे स्वरूपोंमें अपनेको प्रकट कर सकता है, जो बाहरसे देखनेमें जरा भी सुन्दर न हों।

यं. अि., १३–११–'२४

नवम्बर १६

मैं सत्यमें या सत्यके द्वारा सौन्दर्यको देखता और अनुभव करता हूं। समग्र सत्य — न केवल सत्यमय विचार किन्तु सत्यमय चेहरे, सत्यमय चित्र या सत्यमय गीत अुच्च कोटिका सौन्दर्य रखते हैं। लोग सामान्यतः सत्यमें सौन्दर्यका दर्शन नहीं कर पाते; सामान्य मनुष्य सत्यमें निहित सौन्दर्यसे दूर भागता है और अुसकी ओर ध्यान नहीं देता। सच्ची कलाका जन्म तभी होगा जब मनुष्य सत्यमें सौन्दर्यको देखने लगेंगे।

यं. अि., १३–११–'२४

नवम्बर १७

जब मैं सूर्यास्तके अनुपम सौंदर्यकी अथवा चन्द्रमाकी अनोखी शोभाकी प्रशंसा करता हूं, तब मेरी आत्मा सरजनहार प्रभुकी पूजामें तल्लीन हो जाती है। अिन सारे सर्जनोंमें मैं अुस प्रभुको और अुसकी दयाको देखनेका प्रयत्न करता हूं। परन्तु ये सूर्यास्त और सूर्योदय भी केवल बाधक बन जायंगे, यदि वे अुस प्रभुका विचार करनेमें मेरी मदद न करें। अैसी कोअी भी वस्तु, जो आत्माकी अुड़ानमें बाधक बनती है, माया और भ्रमजाल है — अुस शरीरकी तरह जो सचमुच मोक्षप्राप्तिके आपके मार्गमें अकसर बाधक बनता है।

यं. अि., १३–११–'२४

नवम्बर १८

जीवन समग्र कलासे भी अधिक महान है। मैं अिससे भी आगे बढ़कर यह घोषणा करूंगा कि जिस मनुष्यका जीवन पूर्णताके निकटसे निकट पहुंचता है वह सर्वोच्च कलाकार है। क्योंकि अुच्च और अुदात्त जीवनकी निश्चित बुनियाद और आधारके अभावमें कलाका क्या मूल्य है?

ले. गां., पृ. २१०

नवम्बर १९

अन्तमें सच्ची कला अुन जड़ मशीनोंके जरिये अभिव्यक्त नहीं की जा सकती, जो भाप और बिजलीकी शक्तिसे चलती हैं और विशाल पैमाने पर माल तैयार करनेके लिअे बनाअी गअी हैं; सच्ची कला तो केवल स्त्री-पुरुषोंके हाथोंके कोमल और प्राणवान स्पर्शके द्वारा ही अभिव्यक्त हो सकती है।

यं. अि., १४-३-'२९

नवम्बर २०

सच्ची कला केवल आकारकी ओर ध्यान नहीं देती, बल्कि अुसके पीछे जो कुछ होता है अुस पर भी ध्यान देती है। अेक कला अैसी होती है जो मनुष्यको जीवन देती है और दूसरी कला अैसी होती है जो अुसे मारती है। सच्ची कला अुसके सर्जकोंके सुख, सन्तोष और शुद्धिका प्रमाण होनी चाहिये।

यं. अि., ११-८-'२१

नवम्बर २१

जीवनकी शुद्धि सबसे अूंची और सबसे सच्ची कला है। तालीम पाअी हुअी आवाजसे मधुर संगीतको जन्म देनेकी कला तो अनेक लोग सिद्ध कर सकते हैं, परन्तु शुद्ध जीवनके स्वरोंके सुमेलसे मधुर संगीतको जन्म देनेकी कला विरले ही लोग सिद्ध कर सकते हैं।

ह., १९-२-'३८

नवम्बर २२

जो संस्कृति सबसे अलग-थलग रहनेका प्रयत्न करती है वह जी नहीं सकती। आज भारतमें शुद्ध आर्य-संस्कृति जैसी कोअी संस्कृति अस्तित्वमें नहीं है। आर्य लोग भारतके मूल निवासी थे या बाहरसे भारतमें आनेवाले अवांछनीय लोग थे, अिस प्रश्नमें मेरी बहुत दिलचस्पी नहीं है। मेरी दिलचस्पी तो अिस सत्यमें है कि मेरे अति प्राचीन कालके पूर्वज अधिकसे अधिक स्वतंत्रतासे अेक-दूसरेके साथ घुल-मिल गये थे और वर्तमान पीढ़ीके हम लोग अुस सुमेलके ही परिणाम हैं। यह तो केवल भविष्य ही बतायेगा कि हम अपनी जन्मभूमिकी और हमें धारण करनेवाली अिस छोटीसी पृथ्वीकी कोअी सेवा कर रहे हैं या अुस पर बोझ बन कर जी रहे हैं।

ह., ९–५–'३६

नवम्बर २३

'प्राचीन' के नामसे पहचानी जानेवाली हर वस्तुकी मैं बिना सोचे-विचारे अन्धपूजा नहीं करता। जो कुछ बुरा है या नीतिकी दृष्टिसे नीचे गिरानेवाला है, अुसके नाशका प्रयत्न करनेमें मैं कभी हिचकिचाया नहीं, भले वह कितना ही प्राचीन क्यों न हो। लेकिन अिस अेक अपवादके साथ मुझे आपके सामने कबूल करना चाहिये कि मैं प्राचीन संस्थाओंका प्रशंसक और पूजक हूं; और यह सोचकर मुझे दुःख होता है कि लोग हर आधुनिक वस्तुके पीछे पागलोंकी तरह तेजीसे दौड़नेकी धुनमें अपनी सारी प्राचीन परम्पराओंसे नफरत करते हैं और अपने जीवनमें अुनकी अुपेक्षा करते हैं।

वि. गां. सि., पृ. १०५

नवम्बर २४

हमें अिसका निर्णय करना होगा कि क्या हम बिना सोचे-विचारे अिस (आधुनिक) सभ्यताकी नकल करेंगे। पश्चिमसे समय समय पर जो भयंकर बातें हमारे पास तक पहुंचती हैं, अुन्हें देखते हुअे अच्छा होगा कि हम कुछ देरके लिअे रुकें और अपने आपसे यह पूछें : क्या सब-कुछ जाननेके बाद यह अधिक लाभप्रद नहीं है कि हम अपनी ही सभ्यताको पकड़े रहें और जो तुलनात्मक ज्ञान हमें प्राप्त है अुसके प्रकाशमें अपनी सभ्यताके जाने हुअे दोषोंको दूर करके अुसे सुधारनेका प्रयत्न करें?

यं. अिं., २–६–'२७

नवम्बर २५

अिन दो सभ्यताओंके गुण-दोषोंकी तुलना करना निरर्थक न हो तो भी शायद अनावश्यक है। संभव है पश्चिमने अपने जलवायु और वातावरणके अनुकूल सभ्यताका विकास किया हो और अुसी तरह अपनी परिस्थितियोंके अनुकूल सभ्यताका हमने विकास किया हो और दोनों अपने अपने क्षेत्रमें अच्छी और लाभदायी हों।

यं. अिं., २–६–'२७

नवम्बर २६

शांतिकी तालीमसे अकसर पैदा होनेवाली कायरतासे तथा पीढ़ियोंसे चले आ रहे नियंत्रणके कारण पैदा होनेवाली गुलामीसे हमें किसी न किसी तरह बचना होगा, यदि प्राचीन सभ्यताको आधुनिकताके पागलपनभरे आक्रमणके सामने नष्ट नहीं होना है।

यं. अिं., २–६–'२७

नवम्बर २७

आधुनिक सभ्यताका विशिष्ट लक्षण मानवकी जरूरतोंको विना किसी मर्यादाके बढ़ाते जाना है। प्राचीन सभ्यताका लक्षण अिन जरूरतों पर आवश्यक मर्यादा लगाना और अिनका कठोर नियमन करना है।

यं. अि., २–६–'२७

नवम्बर २८

आजका या पश्चिमका असन्तोष वस्तुत: परलोकमें और अिसलिअे औश्वरमें जीवित श्रद्धा न होनेके कारण पैदा होता है। प्राचीन अथवा पूर्वी सभ्यताका संयम, अकसर हमारे न चाहने पर भी, परलोकमें और औश्वरीय शक्तिमें हमारी श्रद्धासे पैदा होता है।

यं. अि., २–६–'२७

नवम्बर २९

आधुनिक आविष्कारोंके कुछ तात्कालिक और भव्य परिणाम मनुष्यको पागल बना देनेवाले हैं; अुनके प्रलोभनको वह रोक नहीं सकता। लेकिन मेरा यह निश्चित मत है कि अैसे प्रलोभनोंका विरोध करनेमें ही मनुष्यकी विजय है। आज हमारे सामने यह खतरा है कि हम क्षणिक सुखके लिअे स्थायी कल्याणका त्याग कर रहे हैं।

यं. अि., २–६–'२७

नवम्बर ३०

मैं अपने मकानको चारों ओर दीवालें खड़ी करके बन्द नहीं करना चाहता और न मेरी खिड़कियोंको ही बन्द करना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि समस्त देशोंकी संस्कृतियां मेरे मकानके आसपास अधिकसे अधिक स्वतंत्रतासे अपना प्रभाव फैलाती रहें। लेकिन मैं किसी संस्कृतिके प्रभावमें आकर अपनी संस्कृतिका आधार छोड़नेसे अिनकार करता हूं। मैं दूसरे लोगोंके घरोंमें अनधिकारी व्यक्तिके रूपमें, भिखारीके रूपमें या गुलामके रूपमें रहनेसे अिनकार करता हूं।

यं. अि., १–६–'२१

दिसम्बर १

लोकतंत्रका सारभूत अर्थ वह कला और वह विज्ञान होना चाहिये, जो राष्ट्रकी प्रजाके समस्त वर्गोंकी सम्पूर्ण शारीरिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक साधन-सम्पत्तिका अुपयोग सब लोगोंके समान कल्याणकी सिद्धिमें करते हैं।

ह., २७–५–'३९

दिसम्बर २

जन्मजात लोकतंत्रवादी जन्मसे ही अनुशासन पालनेवाला होता है। लोकतंत्रकी भावना कुदरती तौर पर अुसीमें विकसित होती है, जो सामान्यत: समस्त मानवीय अथवा ीश्वरीय कानूनोंको स्वेच्छासे पालनेका आदी हो जाता है।

ह., २७–५–'३९

दिसम्बर ३

सम्पूर्ण समाजके भलेके लिअे स्वेच्छापूर्वक सामाजिक मर्यादाओंको स्वीकार करनेसे व्यक्ति और समाज — जिसका व्यक्ति अेक सदस्य है — दोनोंकी अुन्नति होती है और दोनोंका जीवन समृद्ध बनता है।

ह., २७–५–'३९

दिसम्बर ४

लोकतंत्रकी भावना कोअी यांत्रिक वस्तु नहीं है, जिसका विकास (शासनके बाहरी) रूपोंका अंत करनेसे हो जाय। अुसके लिअे हृदय-परिवर्तन आवश्यक होता है।

यं. अिं., १६–३–'२७

दिसम्बर ५

आतंक और त्रासके बीच — भले अुसका कारण सरकार हो या जनता — किसी देशमें लोकतंत्रकी भावना स्थापित नहीं की जा सकती। कुछ बातोंमें प्रजाकीय आतंकवाद सरकारी आतंकवादकी अपेक्षा लोकतंत्रकी भावनाके विकासमें अधिक रुकावट डालता है। क्योंकि सरकारी आतंकवाद लोकतंत्रकी भावनाको मजबूत बनाता है, जब कि प्रजाकीय आतंकवाद अुस भावनाको मार देता है।

यं. अिं., २३–२–'२१

दिसम्बर ६

अनुशासनबद्ध और जाग्रत लोकतंत्र संसारकी सुन्दरसे सुन्दर वस्तु है। पूर्वग्रहोंसे जकड़ा हुआ, अज्ञानमें फंसा हुआ तथा अन्ध-विश्वासोंका शिकार बना हुआ लोकतंत्र अराजकता और अन्धाधुंधीके दलदलमें फंस जायगा और खुद ही अपना नाश कर लेगा।

यं. अिं., ३०–७–'३१

दिसम्बर ७

मेरी कल्पनाके लोकतंत्रका पशुबलके अुपयोगके साथ बिलकुल मेल नहीं बैठता। अपनी अिच्छाका पालन करानेके लिअे वह कभी पशुबलका अुपयोग नहीं करेगा।

अे. फा., पृ. १०२

दिसम्बर ८

बाहरी नियंत्रणोंके तनावसे लोकतंत्र टूट जायगा। वह केवल विश्वासके बल पर ही टिक सकता है।

दि. डा., पृ. १३६

दिसम्बर ९

स्वतंत्रताके सर्वोच्च रूपके साथ बड़ेसे बड़ा अनुशासन और नम्रता जुड़ी होती है। जो स्वतंत्रता अनुशासन और नम्रतासे आती है, अुससे अिनकार नहीं किया जा सकता। निरंकुश स्वच्छन्दता अशिष्टता और असभ्यताकी निशानी है, जो हमें भी नुकसान पहुंचाती है और हमारे पड़ोसियोंको भी नुकसान पहुंचाती है।

यं. अि., ३–६–'२६

दिसम्बर १०

जब लोगोंके हाथमें राजनीतिक सत्ता आ जाती है, अुस समय अुनकी स्वतंत्रतामें हस्तक्षेप कमसे कम हो जाता है। दूसरे शब्दोंमें, जो राष्ट्र राज्यके अैसे हस्तक्षेपके बिना अपना कारबार सुचारु रूपमें और असरकारक ढंगसे चलाता है, वह सच्चे अर्थमें लोकतांत्रिक राष्ट्र है। जब अैसी स्थिति नहीं होती तब सरकारका रूप केवल नामके लिअे ही लोकतांत्रिक होता है।

ह., ११–१–'३६

दिसम्बर ११

लोकतंत्र और हिंसा कभी अेकसाथ चल ही नहीं सकते। जो राज्य आज केवल नामके लिअे ही लोकतांत्रिक है, अुन्हें या तो खुले तौर पर सर्वसत्ताधारी राज्य बन जाना चाहिये; अथवा यदि वे सच्चे अर्थमें लोकतांत्रिक बनना चाहें, तो हिम्मतके साथ अुन्हें अहिंसक बन जाना चाहिये। यह कहना बिलकुल गलत है कि केवल व्यक्ति ही अहिंसाका आचरण कर सकते हैं, राष्ट्र कभी नहीं — जो व्यक्तियोंके ही बने होते हैं।

ह., १२–११–'३८

दिसम्बर १२

वही मनुष्य सच्चा लोकतंत्रवादी है, जो शुद्ध अहिंसक साधनों द्वारा अपनी स्वतंत्रताकी रक्षा करता है और अिसलिअे जो अपने देशकी तथा अन्तमें सारी मानव-जातिकी स्वतंत्रताकी भी अहिंसक साधनोंसे रक्षा करता है।

ह., १५–४–'३९

दिसम्बर १३

जिन बातोंका संबंध अन्तरात्माके साथ होता है, अुनमें बहुमतके कानूनके लिअे कोअी स्थान नहीं होता।

यं. अिं., ४–८–'२०

दिसम्बर १४

हम बहुमतके आदेशके सिद्धान्तको खींचकर हास्यास्पद स्थिति तक न ले जायं और बहुमत द्वारा पास किये गये प्रस्तावोंके गुलाम न बन जायं। अैसा करना पशुबलको अधिक प्रचंड रूपमें पुनः जीवित करना होगा। अगर अल्पमतके अधिकारोंका आदर करना हो, तो बहुमतको अल्पमतवालोंकी रायका और कार्यका आदर करना चाहिये। . . . यह देखना बहुमतका फर्ज होगा कि अल्पमतवालोंकी बात अच्छी तरह सुनी जाय और अन्य किसी प्रकारसे अुनका अपमान न हो।

यं. अिं., ८–१२–'२१

दिसम्बर १५

बहुमतके शासनका संकुचित अुपयोग है, अर्थात् मनुष्यको तफसीलकी बातोंमें बहुमतके सामने झुकना चाहिये। लेकिन बहुमतके चाहे जैसे निर्णयोंके अनुकूल बननेका अर्थ गुलामी होगा।

यं. अिं., २–३–'२२

दिसम्बर १६

लोकतंत्रके सिद्धान्तों पर चलनेवाले राज्यमें लोग भेड़ोंकी तरह व्यवहार नहीं करते। लोकतंत्रमें व्यक्तिके मत और कार्यकी स्वतंत्रताकी सावधानीसे रक्षा की जाती है। अिसलिअे मेरी यह मान्यता है कि अल्पमतको बहुमतसे भिन्न आचरण करनेका पूरा अधिकार है।

यं. अिं., २-३-'२२

दिसम्बर १७

किसी छोटे बच्चेको मौसमके असरसे बचानेके लिअे आप रुअीमें लपेटकर रखेंगे, तो अुसका विकास रुक जायगा या वह मर जायगा। अगर आप अुसे मोटा-ताजा और तगड़ा आदमी बनाना चाहते हैं, तो सारे मौसमोंमें अुसके शरीरको खुला रहने दीजिये और अुसे मौसमोंका सामना करना सिखाअिये। ठीक अिसी प्रकार किसी भी सच्ची सरकारको चाहिये कि वह राष्ट्रकी प्रजाको अपने ही सामूहिक प्रयत्नों द्वारा अभावोंका, बुरे मौसमोंका और जीवनकी दूसरी कठिनाअियोंका सामना करना सिखाये; न कि अुसे निष्क्रिय बनाकर किसी न किसी तरह जीवित रहनेमें अुसकी मदद करे।

दि. डा., पृ. २४२

दिसम्बर १८

सत्ता हाथमें आनेसे मनुष्य अंधे और बहरे दोनों बन जाते हैं। अपनी आंखोंके सामने होनेवाली बातोंको वे देख नहीं सकते और अपने कानों पर आक्रमण करनेवाली बातोंको वे सुन नहीं सकते। अिस प्रकार यह कहना कठिन है कि सत्ताके नशेमें चूर सरकार क्या नहीं करेगी। अिसलिअे . . . देशभक्तोंको मृत्युके लिअे, जेलके लिअे और अैसे अन्य संभव परिणामोंके लिअे तैयार रहना चाहिये।

यं. अिं., १३-१०-'२१

दिसम्बर १९

अीमानदारीसे की गअी सेवाके फलस्वरूप जो सत्ता मिलती है वह मनुष्यको अूंचा अुठाती है। जो सत्ता सेवाके नाम पर प्राप्त करनेकी कोशिश की जाती है और केवल बहुसंख्यक मतोंके बल पर ही प्राप्त की जा सकती है, वह निरा धोखा और भ्रमजाल है, जिससे बचना चाहिये।

यं. अिं., ११–९–'२४

दिसम्बर २०

सत्ता दो तरहकी होती है। अेक दंडका भय दिखाकर प्राप्त की जाती है और दूसरी प्रेमकी कलासे प्राप्त की जाती है। प्रेम पर आधार रखनेवाली सत्ता दंडके भयसे प्राप्त होनेवाली सत्ताके बनिस्बत हजार गुनी ज्यादा स्थायी होती है।

यं. अिं., ८–१–'२५

दिसम्बर २१

अूपरसे लादी हुअी सत्ताको सदा पुलिस और सेनाकी सहायताकी गरज होती है, जब कि भीतरसे पैदा होनेवाली सत्ताके लिअे पुलिस और सेनाका बहुत थोड़ा या जरा भी अुपयोग नहीं होता।

ह., ४–९–'३७

दिसम्बर २२

जो लोग आम जनताका नेतृत्व करनेका दावा करते हैं, अुन्हें आम जनता द्वारा बताये गये मार्ग पर चलनेसे दृढ़तापूर्वक अिनकार कर देना चाहिये — अगर हम भीड़के क़ानूनसे बचना चाहते हैं और देशकी व्यवस्थित प्रगति साधनेकी अभिलाषा रखते हैं। मैं मानता हूं कि नेताओंके लिअे केवल अपनी राय ही दृढ़तासे जाहिर करना काफी नहीं है; परन्तु अत्यन्त महत्त्वके मामलोंमें नेताओंको आम लोगोंकी रायके खिलाफ जाकर भी काम करना चाहिये, यदि लोगोंकी राय अुनकी विवेक-बुद्धिको न जंचे।

यं. अि., २३–२–'२२

दिसम्बर २३

प्रेम और अहिंसा अपने असरमें बेजोड़ और बेमिसाल हैं। परन्तु अुनके कार्यमें किसी प्रकारकी भाग-दौड़, दिखावा, शोर-गुल या विज्ञापनबाजी नहीं होती। वे आत्म-विश्वासको पहलेसे ही मानकर चलते हैं, और आत्म-विश्वास आत्मशुद्धिको पहलेसे मानकर चलता है। निष्कलंक चरित्र तथा आत्मशुद्धिवाले मनुष्य आसानीसे लोगोंमें विश्वास पैदा करेंगे और अपने आसपासके वातावरणको अपने आप शुद्ध कर देंगे।

यं. अि., ६–९–'२८

दिसम्बर २४

सुधारकके मार्ग पर गुलाबके फूल नहीं बिछे रहते, बल्कि कांटे बिछे होते हैं; और अुस मार्ग पर अुसे सावधानीसे चलना पड़ता है। वह कांटोंवाले मार्ग पर धीरे धीरे लंगड़ाते हुअे ही चल सकता है, कभी कूदने या छलांग मारनेकी हिम्मत नहीं कर सकता।

यं. अि., २८–११–'२९

दिसम्बर २५

सुधारकका मार्गदर्शन करनेवाला नियम अन्तमें तो अुसकी अन्तरात्माका आदेश ही है। . . . अगर लोकमतने पहले ही किसी कानूनमें सुधार न करवा लिया हो अथवा अुसे रद न करवा दिया हो, तो कुछ लोगोंका शुद्ध और पवित्र कष्ट-सहन अुसे सुधरवा लेगा।

यं. अिं., ७–२–'२९

दिसम्बर २६

अगर आप अपने प्रति सच्चे और अीमानदार हैं, तो बाहर हर तरहकी गड़बड़ी दिखाअी देने पर भी आप स्वस्थ और शान्त रहेंगे। अिसके विपरीत, यदि आप अपने प्रति सच्चे और अीमानदार नहीं हैं, तो बाहर सब कुछ ठीक और व्यवस्थित दिखाअी देने पर भी आपको शांति और स्वस्थताका अनुभव नहीं होगा।

ह., २०–५–'३९

दिसम्बर २७

मेरा देशप्रेम दूसरोंका बहिष्कार नहीं करता। वह सारे जगतको अपने भीतर समा लेनेवाला है। अैसे देशप्रेमको मुझे स्वीकार नहीं करना चाहिये, जो दूसरे राष्ट्रोंकी मुसीबतसे लाभ अुठाना चाहता है या दूसरे राष्ट्रोंका शोषण करना चाहता है। देशप्रेमकी मेरा कल्पनाका कोअी अर्थ नहीं है, अगर वह हमेशा हरअेक मामलेमें बिना किसी अपवादके सम्पूर्ण मानव-जातिके व्यापकसे व्यापक कल्याणके साथ सुसंगत न हो।

यं. अिं., ४–४–'२९

दिसम्बर २८

मेरा अिस बातमें विश्वास नहीं है . . . कि कोअी व्यक्ति तो आध्यात्मिक दृष्टिसे लाभ प्राप्त करे और अुसके आसपासके लोगोंको वह लाभ न मिले। मैं अद्वैतमें विश्वास रखता हूं; मेरा मानव-जातिकी मूल अेकतामें और अिसलिअे सारे प्राणियोंकी मूल अेकतामें विश्वास है। अिसीलिअे मेरा यह विश्वास है कि अगर अेक मनुष्यको आध्यात्मिक लाभ हो तो अुसके साथ सारे जगतको लाभ होता है, और अगर अेक मनुष्य आध्यात्मिक दृष्टिसे नीचे गिरता है तो अुस हद तक सारा जगत नीचे गिरता है।

यं. अि., ४–१२–'२४

दिसम्बर २९

यह देखते हुअे कि सब मनुष्य समान रूपसे नैतिक कानूनके अधीन हैं, हम यह कह सकते हैं कि मानव-जाति अेक है। अीश्वरकी दृष्टिमें सब मनुष्य समान हैं। बेशक, मानव-समाजमें जातिके, दरजेके और अैसे ही दूसरे भेद रहेंगे; परन्तु मनुष्यका दरजा जितना ज्यादा अूंचा होगा, अुतनी ही बड़ी अुसकी जिम्मेदारी भी होगी।

अे. रि., पृ. ५७

दिसम्बर ३०

जिस प्रकार देशभक्तिका धर्म आज हमें सिखाता है कि व्यक्तिको परिवारके लिअे मरना चाहिये, परिवारको गांवके लिअे मरना चाहिये, गांवको जिलेके लिअे, जिलेको प्रांतके लिअे और प्रांतको देशके लिअे मरना चाहिये, अुसी प्रकार देशको अिसलिअे स्वतंत्र होना चाहिये कि जरूरत पड़ने पर वह जगतके कल्याणके लिअे मर सके।

गां. अि. वि., पृ. १७०

दिसम्बर ३१

जो राष्ट्र अमर्यादित त्याग और बलिदान करनेकी क्षमता रखता है, वही अमर्यादित अूंचाअी तक अुठनेकी क्षमता रखता है। बलिदान जितना अधिक शुद्ध होगा, प्रगति अुतनी ही अधिक तेज होगी।

यं. अिं., २५–८–'२०

गांधी-विचार-मालाकी पुस्तकें

लेखक : गांधीजी

१. पंचायत राज	०.३०
२. संतति-नियमन : सही मार्ग और गलत मार्ग	०.४०
३. शाकाहारका नैतिक आधार	०.२५
४. गीताका सन्देश	०.३०
५. विश्वशान्तिका अहिंसक मार्ग	०.४०
६. समाजमें स्त्रियोंका स्थान और कार्य	०.२५
७. साम्यवाद और साम्यवादी	०.२०
८. मेरा समाजवाद	०.४०
९. ओसा — मेरी नजरमें	०.३५
१०. सहकारी खेती	०.२०
११. शरीर-श्रम	०.२५
१२. ग्रामोद्योग	०.३०
१३. संरक्षकताका सिद्धान्त	०.३०
१४. भारतकी खुराककी समस्या	०.५०
१५. शराबबन्दी होनी ही चाहिये	०.२५

प्रत्येकका डाकखर्च १३ नये पैसे

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४